

आर.एन.आई. नं. 3653/57  
मुद्रण तिथि 5 से 8 अगस्त, 2022  
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2022

वर्ष : 80 अंक : 08  
श्रावण, 2079 मूल्य : ₹ 10  
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23  
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवानी

अगस्त, 2022



Website : [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

इस जीवन में जो विकारमुक्ति, कषायमुक्ति एवं दुःखमुक्ति का अनुभव करता है तथा जिसके चित्त में विवेक एवं प्रज्ञा का साम्राज्य होता है वह इस जीवन में भी मुक्ति का कुछ अंशों में आस्वादन कर लेता है।

## अंक सौजन्य

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

**हर एक संघ को दीपक बनकर ज्ञान की ज्योति जगाने का कार्य करना चाहिए।**

-आचार्यश्री हस्ती



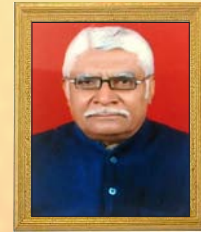
श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्री गणेशमलजी सा  
(सुपुत्र स्व. श्री अगर्चन्दजी सा जामड़) एवं  
श्राविकारत्न स्व. श्रीमती रतनदेवीजी जामड़



श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्री हेमचन्दजी सा (सुपुत्र  
स्व. श्री फतेहचन्दजी सा जामड़) एवं श्राविकारत्न  
स्व. श्रीमती पारसदेवीजी जामड़



श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्री रतनचन्दजी सा  
(सुपुत्र स्व. श्री अगर्चन्दजी सा जामड़)



श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्री निर्मल कुमारजी सा  
(सुपुत्र श्री पूनमचन्दजी सा जामड़)

### ८८ श्रद्धावत परिवारज ८८

श्रावकरत्न पूनमचन्द (सुपुत्र श्री फतेहचन्दजी सा)-श्राविकारत्न श्रीमती कंचनदेवी  
श्रीमती कमलादेवी-धर्मसहायिका स्व. श्री निर्मल कुमारजी सा, राजेन्द्र कुमार-श्रीमती प्रेमलता,  
वीरेन्द्र कुमार-श्रीमती मंजुलता, अनिल-श्रीमती प्रमिला, विनय-श्रीमती मीना, सुनील-श्रीमती मधु,  
प्रकाश-श्रीमती शर्मिला, सुरेन्द्र-श्रीमती बीना, डॉ. अनिल-श्रीमती संगीता,  
प्रदीप कुमार-श्रीमती हेमलता, श्रीमती मधु धर्मसहायिका स्व. सुनील,  
श्रीमती सम्पत देवी धर्मसहायिका स्व. श्री रतनचन्दजी सा, राजेश, दिनेश, संजय  
एवं समस्त जामड़ परिवार, मूल निवासी-किशनगढ़ हाल निवासी जयपुर

## अंक सौजन्य

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिम्यो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

रागी जिन भौतिक वस्तुओं को भूषण मानकर अधिकाधिक बढ़ाना चाहता है, ज्ञानी उनको घटाना चाहता है। ज्ञानी-अज्ञानी का यही खास अन्तर है।

-आचार्यश्री हस्ती



धर्मनिष्ठ, संघसेवी श्रावकरत्न स्व. श्री टीकमचन्द्रजी हीरावत एवं धर्मसहायिका श्राविकारत्न श्रीमती सुधाजी हीरावत

:: श्रद्धावत ::

राजीव-नीता डागा एवं परिवार, ह्यूस्टन

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**

# जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

## संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763  
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

## संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997  
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

## प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

## सह-सम्पादक

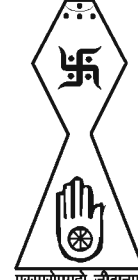
नीरतनमल मेहता, जोधपुर  
मनोज कुमार जैन, जयपुर

## सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)  
फोन : 0141-2705088  
E-mail : editorjinwani@gmail.com

## भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23  
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परसरोपग्रहो जीवनाय

संजोगा विप्यमुक्कस्स,  
अणगारस्स भिक्खुणो।  
आयारं पाठकरिस्सामि,  
आणुपुत्विं सुणेह मे

-उत्तराध्ययन सूत्र, 11.1

जो संयोग विमुक्त भिक्षु है,  
स्वेच्छान्नत धरता अनगार।  
कहूँ सुनो मुझ से तुम क्रम से,  
उसका कैसा है आचार?॥

अगस्त, 2022

वीर निर्वाण सम्वत्, 2548

श्रावण, 2079

वर्ष 80

अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्री के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

## विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भावों की शुद्धि	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	11
विचार-वारिधि-	दुःख-निवारण	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	धन नहीं, धर्म है त्राता	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	विनाशी शरीर से जीव की साधना	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	16
	आज से भीतर में करें प्रवेश	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	19
	मुखवस्त्रिका की महत्ता	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	21
	ज्ञाता-द्रष्टा बनकर करें संयम की साधना	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	24
शोधालेख-	त्रिपिटक में उपलब्ध कतिपय जैनधर्म के सन्दर्भ-	प्रो. धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र	27
वैज्ञानिक-आलेख-	जल में जीवत्व होने की वैज्ञानिकता	-डॉ. जीवराज जैन	34
युवा-स्तम्भ-	'जय जिनेन्द्र' की जयवन्त प्रेरणाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	36
English-section	Jains are on a Mission to Educate the World about Jainism	-Sh. Sulekh C. Jain (Ph.D.)	40
प्रासङ्गिक-	क्षमा-प्रार्थना एवं क्षमाशीलता का महत्त्व	-एक मनस्वी सन्त	44
	भावी आचार्य दिवस पर हार्दिक मङ्गलकामना	-श्री नौरतनमल मेहता	47
	विश्व कल्याण के लिए करें तय समय पर एक प्रार्थना	-श्री जयदीप ढङ्गा	49
	अदृश्य गुलामी से छुटकारा है सच्ची स्वतन्त्रता	-श्री त्रिलोकचन्द्र जैन	54
	तीर्थमाला के 120 मोती	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	59
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (5)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	51
चिन्तन-	हिंसा एवं युद्ध से समाधान नहीं	-डॉ. ओ. पी. चपलोद (सी.ए.)	52
पर्युषण गीत-	आत्म की कर ले शुद्धि, आराधक बनने को	-श्री धर्मचन्द्र जैन	57
अध्यात्म-	मुझे आराधक बनना है	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	65
गीत/कविता-	मत भूलो मर्यादाएँ तुम, इसमें ही रहना है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	10
	पर्व पर्युषण प्यारा	-श्री दिनेश जैन	15
	भावी आचार्य दिवस	-श्री मनमोहनचन्द्र बाफना	20
	मन की इस रणभूमि पर	-श्रीमती सुनीता डागा	43
	आए हैं दिन पावन	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	46
	सद्गुरो: प्रसादात्	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	50
	मानवता की राह	-डॉ. रमेश 'मयंक'	53
	एक चुनौती	-श्री विजेन्द्र कुमार जैन	58
	गुरु-भक्ति गीत	-श्रीमती अनुपमा दलपत जैन	68
विचार/चिन्तन-	विचारों को निर्मल रखने के लिए करें स्वाध्याय	-डॉ. नरेन्द्र जैन भारती प्राचार्य	23
	सुन्दर समाज का निर्माण	-श्री सुगनचन्द्र बोथरा	33
	'अहिंसा' सबसे सुन्दर शब्द	-श्री फिलिप वूलन	39
	तुम मुझसे पहले मत जाना	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	48
	वाणी की उपयोगिता	-श्री मंगलचन्द्र टाटिया	56
	बाँटकर खायें मुक्ति में जाएँ	-श्री शुभम् बोहरा	64
	अब भारत के सर्वोच्च पद पर बैठे.....	-श्रीमती ज्योति कोठारी	64
	अनमोल वचन	-श्री गणपतलाल जैन	66
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द्र जैन	67
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	69
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	88
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	90

## भावों की शुद्धि

डॉ. धर्मचन्द जैन

जो साधक अपने भावों को सम्भालकर साधना करता है, वह शीघ्र ही साधना में उत्तरोत्तर प्रगति करता जाता है, किन्तु जो साधक मात्र बाह्य क्रिया करने तक ही सीमित रहता है एवं अपने भावों को संयोजित नहीं करता है, तो उसकी क्रिया विशेष फलदायी नहीं होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो साधना के दो पक्ष हैं—द्रव्य साधना एवं भाव साधना। जितनी भी धार्मिक क्रियाएँ हैं, वे सभी द्रव्य साधना कही जा सकती हैं। जब उन क्रियाओं के साथ विशुद्ध लेश्या एवं विशुद्ध परिणाम जुड़ जाते हैं तो वह साधना भाव साधना बन जाती है। निरन्तर भाव साधना में रहने वाले साधक अत्यन्त सजग एवं अप्रमत्त साधक होते हैं। वे तीव्रता से पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करने में समर्थ होते हैं तथा नये कर्म का बन्धन करने से भी विरत रहते हैं।

द्रव्य क्रियाओं का अपना महत्त्व है, वे भावों को उत्पन्न करने में निमित्त भी बन सकती हैं, किन्तु उसके लिए आवश्यक है कि साधक अपनी निगरानी स्वयं करें। यहाँ निगरानी करने का आशय अपने भावों की निगरानी करने से है। कई बार साधक दूसरों की क्रियाओं में ही उलझा रहता है, उनमें मीनमेख निकालकर आत्मभावों को मलिन बनाता रहता है। क्रियाओं की शुद्धता भी अपना महत्त्व रखती है, किन्तु उनसे भी अधिक महत्त्व भावों की शुद्धता का है। मलिन भाव कब हावी होने लगते हैं, इसका शिथिल साधक को भान भी नहीं होता। वह अपनी बाह्य क्रियाओं की श्रेष्ठता का भी कभी अभिमान करने लगता है और दूसरों के सामने उसका बखान करता है।

सामान्य गृहस्थ साधु-साध्वियों की बाह्य क्रियाओं का अवलोकन करके ही उन्हें उत्कृष्ट या हीन साधक समझता है। उसे भावों का बोध नहीं होता। वह

साधु-साध्वी के मात्र वेशधारी होने से ही वन्दना एवं श्रद्धा करने लगता है। वस्तुतः आत्म-साधना की चर्चा करने वाले साधु-साध्वी विरले ही होते हैं। कई साधु-साध्वी सांसारिक बातों में भी रुचि रखते हैं तो कई बोल-थोकड़ों का ज्ञान करने तक ही सीमित रहते हैं तो कोई त्याग-प्रत्याख्यान का महत्त्व समझाए बिना गृहस्थों को रीता प्रत्याख्यान कराकर आत्म-सन्तोष कर लेते हैं। प्रायः चातुर्मासों में किस साधु-सन्त के सान्निध्य में कितने कार्यक्रम हुए, कितनी तपस्याएँ हुईं, कितने श्रद्धालु दर्शनार्थ एवं प्रवचन हेतु उपस्थित हुए; आवास, भोजन आदि की व्यवस्थाएँ कैसी रही इत्यादि के आधार पर चातुर्मासों की सफलता का मूल्याङ्कन किया जाता है। प्रवचन आदि के श्रवण एवं विशेष कक्षाओं, धर्म-चर्चाओं से कई युवक-युवतियाँ, श्रावक-श्राविका लाभान्वित होते हैं तथा अपने जीवन में प्रकाश का अनुभव करते हैं तो यह चातुर्मास की सफलता कही जा सकती है। भीतर में ज्ञान का दीप जले एवं उससे स्वयं के आचरण में परिष्कार की ओर प्रगति हो तो यह साधु-साध्वियों का श्रावक समाज को महत्त्वपूर्ण योगदान कहा जा सकता है, किन्तु इसके साथ साधु-साध्वियों को अपनी आत्मसाधना के प्रति सजगता रखने की भी निरन्तर आवश्यकता होती है। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा की गई धर्मसाधना एवं उनके द्वारा कृत प्रशंसा से साधक मान कषाय का पोषण तो नहीं कर रहा है, इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आत्म-साधना का प्रभाव साधक के जीवन में प्रतिफलित होता ही है। वह स्वयं सदैव प्रह्लाद का अनुभव करता है, शान्ति एवं समाधि में भी रहता है, विषम परिस्थितियों में भी अपना सन्तुलन बनाए रखता है। वाणी में किसी के प्रति कटुता का प्रयोग नहीं करता

है तथा मन से भी सबका कल्याण सोचता है। आगम ऐसे ही साधक को आत्मवान् कहता है। वह आत्म योद्धा होता है। स्वयं के ही विकारों को जीतने में सन्नद्ध रहता है और यह आगम कथित सत्य है कि विकारों का पूर्ण क्षय किये बिना किसी को केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और समस्त दुःखों का क्षय नहीं होता।

इस जीवन में जो विकारमुक्ति, कषायमुक्ति एवं दुःखमुक्ति का अनुभव करता है तथा जिसके चित्त में प्रज्ञा एवं विवेक का साम्राज्य होता है वह इस जीवन में भी मुक्ति का कुछ अंशों में आस्वादन कर लेता है। साधक भविष्य में मोक्ष होगा या नहीं, इसकी चिन्ता किये बिना इस जीवन को विकारमुक्त, सहिष्णु, समताशील, ज्ञाता-द्रष्टा और निर्लेप बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य प्रायः दूसरों की दृष्टि में अपने को अच्छा बनाने एवं श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। साधक समाज में भी कहीं-कहीं यह दुर्गुण प्रवेश कर जाता है, किन्तु जब तक साधक स्वयं की दृष्टि में निर्दोष जीवन नहीं जीता तब तक दूसरों की दृष्टि में श्रेष्ठ होना अहंपोषण के सिवाय कोई अर्थ नहीं रखता। दूसरा बड़ी स्थूल दृष्टि से मूल्यांकन करता है। स्वयं की कमजोरियों को साधक स्वयं जानता है, दूसरा उसको कदाचित् जान ले तो भी कथन करने में संकोच का अनुभव करता है, इसलिये साधक को स्वयं ही सजग होकर साधना में लीन रहना चाहिये।

भावों की जब तक शुद्धि नहीं होती तब तक आचरण भी शुद्ध नहीं होता और संवर एवं निर्जरा की साधना भी सम्यक् रूप से फलदायी नहीं होती। भाव अनेक प्रकार के होते हैं जो शुभ भी हो सकते हैं और अशुभ भी तथा विकार रहित होने पर वे शुद्ध भी हो सकते हैं। भाव आत्मा की ही परिणति होते हैं उन्हें परिणाम भी कहा गया है। जैसा परिणाम होता है वैसा फल मिलता है। परिणाम ही बन्धन के कारण बनते हैं और परिणाम ही मोक्ष के कारण बनते हैं। कहा भी गया है-परिणामे बंधो परिणामे मोक्खो। जीवन में भावों या परिणामों का महत्त्व है। इन भावों एवं परिणामों का प्रभाव मन, बुद्धि और शरीर

पर भी पड़ता है। ये भाव कैसे प्रकट होते हैं इस सम्बन्ध में मानव प्रायः ध्यान नहीं देता है। जैनदर्शन के अनुसार हमारे पूर्व कर्म संस्कारों के अनुरूप भाव उत्पन्न होते हैं जिन्हें पारिभाषिक शब्दावली में औदयिक भाव कहा जाता है। हमें जैसी गति मिली है मनुष्य, तिर्यञ्च, देव या नरक, उसके अनुसार भावों की उत्पत्ति होना, जैसा स्त्री, पुरुष, नपुंसक का शरीर मिला है उसके अनुसार कामवासना का होना, प्रतिकूल या अनुकूल परिस्थितियों में क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय का प्रकट होना, गलत दृष्टिकोण का बने रहना, अज्ञान से आच्छन्न होना, संयम में रुचि न होना, मुक्ति की अभिलाषा न होना, कषाय की तरतमता के साथ मन, वचन, काया की प्रवृत्ति में शुभता एवं अशुभता का होना, ये सभी औदयिक भाव के अन्तर्गत आते हैं। ये भाव निमित्त मिलने पर या बिना निमित्त के भी उदय में आते रहते हैं। सामान्य व्यक्ति इन भावों में बहता रहता है। इनसे हटकर सोचने, समझने का उसमें सामर्थ्य नहीं होता है, किन्तु जो साधक होता है वह इन भावों के उदित होने पर सावधान होता है तथा इन्हें दूर करने का समुचित प्रयत्न करता है। जैसे हर एक व्यक्ति स्वयं को जो ज्ञान प्राप्त है, उसका आदर करते हुए अशुभ भावों पर नियन्त्रण कर सकता है। यहाँ आगम एवं तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर ऊपर औदयिक भाव के कुछ भेदों के अभिप्राय का कथन किया गया है किन्तु इनके साथ ही इनसे सम्बद्ध अन्य औदयिक भावों को भी समझ लेना चाहिये, यथा- राग-द्वेष, ईर्ष्या, क्रूरता, चोरी आदि के भाव भी अप्रशस्त हैं। औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक में कुछ प्रशस्त भाव होते हैं यथा-सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान आदि लब्धियाँ। वैराग्य, वीतरागता, समभाव, क्षमाशीलता, मैत्रीभाव आदि भी प्रशस्त भाव हैं। साधक को अप्रशस्त भावों का द्रष्टा बनकर बिना प्रतिक्रिया के प्रशस्त भावों को प्रवाहित करना चाहिये। वह जब जागरूक होता है तो अपने भावों का निरीक्षण करता है और देखता है कि अरे! मुझ में अमुक व्यक्ति के प्रति द्वेष जाग गया, अमुक व्यक्ति के प्रति राग जाग गया, अमुक स्त्री या पुरुष को देखकर काम जाग गया, अपने से



अधिक गुणवान् को देखकर ईर्ष्याभाव उत्पन्न हो गया, अपने से अधिक किसी की प्रशंसा सुनकर द्वेष उत्पन्न हो गया। इस प्रकार विभिन्न घटना प्रसङ्गों में साधक स्वयं का निरीक्षण करता हुआ भावों की शुद्धि करता है। भावों की अशुद्धता का जब तक बोध नहीं होगा तब तक उनकी शुद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं होगी इसलिये प्रथम सीढ़ी यह है कि साधक अपने चित्त में उत्पन्न होने वाले भावों का अवलोकन करे और उसके साथ ही ज्ञानपूर्वक प्रशस्त भावों में उन्हें परिवर्तित करे, यही साधना का अंग है। यह साधना वही साधक कर सकता है जो हिंसा, झूठ, चोरी, अन्नह्य सेवन एवं परिग्रह का त्यागी होता है, जिसकी भोगों में रुचि है, इन्द्रियों के रसों में आसक्ति है, काम-वासनाओं के मकड़ जाल से मुक्त नहीं है, दूरियों के दोष-दर्शन में रुचिशील है, वह साधक अपने भावों को ध्यान से देख नहीं पाता है। अपने भावों को देखना भी ध्यान का ही एक रूप है।

भावों की शुद्धि के लिए आचार्य हरिभद्रसूरि ने पञ्चाशक प्रकरण में सात उपायों की चर्चा की है-1. **नित्यस्मृति**-सदैव जागरूकता होना आवश्यक है, जो जागरूक है वही अप्रशस्त भावों को विदा करने और निर्जरित करने में सक्षम होता है। वह उनकी पौध को पुनः अशुभ भाव उत्पन्न करके सींचता नहीं है। अशुभ भावों से सींचते रहने पर अप्रशस्त भाव निरन्तर सघन एवं वृद्धिगत होते रहते हैं। 2. **गुणिजन के प्रति बहुमान**-गुणिजनों के प्रति बहुमान होने से भी भावों की विशुद्धि होती है। गुणियों को देखकर प्रमोद होना आत्मविशुद्धि का साधन है। जिसमें जिसकी रुचि होती है वह उसे देखकर प्रसन्न होता है। जो गुणियों को देखकर प्रसन्न होता है उसमें गुणों के प्रति रुचि होती है और उससे अपने दुर्गुणों का नाश एवं सद्गुणों का आधान होता है। यह भी भावविशुद्धि का साधन है। 3. **प्रतिपक्ष के प्रति जुगुप्सा**-विरोधी या अप्रशस्त भावों के प्रति असमर्थन एवं असहयोग करना भी भावों को निर्मल बनाने में साधन बनता है। वह पाप से घृणा करता है अर्थात् पाप उसे अभीष्ट नहीं होता। सारे अप्रशस्त भाव पाप रूप होते हैं। 4. **परिणति**

**आलोचना**-अपने परिणामों या भावों का निरीक्षण करने के साथ साधक उनमें गुण-दोषों की समीक्षा करता है। उनके मूल कारणों का निवारण करने के लिए प्रयत्नशील होता है। 5. **तीर्थङ्कर भक्ति**-तीर्थङ्करों का व्यक्तित्व पूर्ण निर्दोष व्यक्तित्व होता है। उनकी स्तुति, भक्ति, गुणगान करने से साधक अपने भावों को शुद्ध बनाने का प्रयत्न करता है। विशेषतः उनके गुणों की स्तुति के द्वारा अपनी चेतना का ऊर्ध्वारोहण करता है। भक्ति में उनके प्रति समर्पित होकर वह अपनी असत्कामनाओं का विगलन कर देता है। 6. **सुसाधुजन की पर्युपासना**-वह पञ्च महाव्रतधारी साधु-साध्वियों की पर्युपासना करके स्वयं को विनम्र बनाता है ताकि उनकी संगति से सद्गुणों का शीघ्र आधान और दुर्गुणों का विनाश हो सके। यह पर्युपासना मन, वचन और काया तीनों स्तरों पर होती है। वह विनम्रतापूर्वक एकासन से बैठकर उनके वचनों का श्रवण करता है तथा उनकी सत्यता को स्वीकार कर जीवन में उन्हें अपनाने का संकल्प लेता है। पञ्च महाव्रतधारी साधु-साध्वियों की भाँति सज्जन पुरुष भी आत्म भावों में परिष्कार के निमित्त बनते हैं। 7. **उत्तर गुण श्रद्धान**-साधक में जो मूल गुण होते हैं उनकी पुष्टि के लिए उत्तर गुणों पर श्रद्धान होना आवश्यक है। अहिंसा आदि मूल गुणों की पुष्टि के लिए स्वाध्याय, प्रतिलेखना, तपस्या आदि उत्तर गुणों का निरन्तर सन्निधान एवं अभ्यास करना चाहिये। प्रायश्चित्त, आलोचन, गर्हा आदि का भी इसके अन्तर्गत समावेश होता है।

इनके अतिरिक्त भी भावों की शुद्धि के लिए अनेक उपाय हैं, उनमें से एक प्रमुख उपाय है अनित्य, अशरण आदि 12 भावनाएँ। इन भावनाओं से भावों की शुद्धि होती है। अनित्य भावना के द्वारा रागयोग्य अथवा आसक्तियोग्य लगने वाले पदार्थों में अनित्यता का बोध होने पर उनके प्रति राग एवं आसक्ति टूटती है। यह देह भी अनित्य है, परिवारजनों का संयोग भी अनित्य है, भूमि, भवन, रिश्ते, नाते, बैंक-बैलेंस आदि के साथ होने वाले सम्बन्ध भी अनित्य हैं। जब इस अनित्यता का चेतना के स्तर पर बोध होता है तो अशुभ भावों का स्थान ही नहीं

रहता। अशरण भावना भी इस सत्य का दर्शन कराती है कि संसार में अरिहंत, सिद्ध, साधु एवं धर्म की शरण के अतिरिक्त कोई शरण मंगलकारी, उत्तम एवं शाश्वत नहीं है। मृत्यु सन्निकट आने पर अत्यन्त प्रियजनों का भी वियोग हो जाता है और वे हमारा त्राण करने में भी समर्थ नहीं होते हैं। यह सत्य जब चित्त में उपस्थित रहता है, तो अप्रशस्त भाव पलायन कर जाते हैं। इसी प्रकार संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधि-दुर्लभ और धर्म भावनाएँ भी मलिन चित्त को निर्मल बनाती हैं। साथ ही आत्मबल प्रदान करती हैं। इन भावनाओं के बार-बार चित्त में लाने से श्रुतज्ञान पुष्ट होता है और वह श्रुतज्ञान भी साधक को भावों की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

श्रुतज्ञान दो प्रकार का होता है-1. आगमवाणी का स्वाध्याय करने से अपनी आत्मा में प्रकट होने वाला 2. स्वयं सत्य को जानकर अपनी चेतना में प्रकट होने वाला श्रुतज्ञान। ये दोनों ही भावों को शुद्ध बनाते हैं। श्रुतज्ञान का ही एक साधन स्वाध्याय है, स्वाध्याय से विचारों की शुद्धि होती है और विचारशुद्धि से भावशुद्धि होने का आशय भावपूर्वक किया गया शुद्ध आचरण है। भावरहित आचरण द्रव्य आचरण बनकर रह जाता है जिसका कोई

विशेष फल नहीं होता, जैसा कि कल्याण मन्दिर के श्लोक 38 में कहा गया है-यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः। इसलिये आचरण में भावों का विशेष महत्त्व होता है। आचार्य कुंदकुंद ने भावपाहुड में कहा है-

भावो हि पढमलिंगं, ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं।  
भावो कारणभूदो गुणदोसाणं जिणा विन्ति॥

साधु मुनिराज के सम्बन्ध में कथन है कि साधु का प्रथम लिङ्ग भाव होता है, द्रव्य लिङ्ग नहीं। इस परमार्थ को जानो। भाव ही गुण-दोषों के कारणभूत होते हैं, ऐसा जिनेश्वर कहते हैं। इस गाथा का आशय है कि मनुष्य में गुण-दोष उसके भावों के अनुसार होते हैं। भाव गुणों का उत्कर्ष करते हैं और भाव ही दोषों का संवर्धन करते हैं। भाव के कारण ही तण्डुल मत्स्य स्वयं मछलियों का भक्षण न करते हुए भी नरक में जाता है और भावों की शुद्धि से तुषमास का जाप करने वाला शिवभूति केवलज्ञानी हो जाता है। भावों का ही खेल है कि जो इलायची कुमार नटनी से विवाह करने के लिए आतुर था, वही केवलज्ञान का धारक बन जाता है। भावों का प्रभाव है कि प्रसन्नचन्द्र राजर्षि नरक गति का बन्ध करते-करते कुछ क्षणों में मुक्ति का वरण कर लेते हैं; इसलिये इन भावों को सम्भालना अत्यन्त आवश्यक है।

## मत भूलो मर्यादाएँ तुम, इसमें ही रहना है

श्री मोहन कोठारी 'विन्नर'

महावीर के भक्तों से, बस इतना कहना है,  
मत भूलो मर्यादाएँ तुम, इसमें ही रहना है।

मत भूलो मर्यादाएँ तुम.....॥टेर॥

मर्यादामय जीवन जीना, जीवन की सुरक्षा है,  
शान्ति समाधि बनी रहती है, होती धर्म की रक्षा है।  
औरों को तुम देख देखकर, नहीं प्रवाह में बहना है,

मत भूलो मर्यादाएँ तुम.....॥1॥

मर्यादा है एक परकोटा, अनुशासन सिखलाता है,  
स्वच्छन्दता फिर नहीं रहती है, सबका मान बढ़ाता है।

सच्चा सुख देने वाली, अपनी ही सरलता है,  
मत भूलो मर्यादाएँ तुम.....॥2॥

कुटुम्ब, परिवार और संघ-समाज में,

इसकी हमें जरूरत है,

इसको अपनाने से सबकी, बढ़ती जाती इज्जत है।  
सुरक्षा का यह कवच है, इसमें ही बस ढलना है,

मत भूलो मर्यादाएँ तुम.....॥3॥

करुणा सागर वीर प्रभु ने, ये बातें बतलाई हैं,  
जो मञ्जिल तक पहुँचाती, वे राहें दिखलाई हैं।  
बहुत किया उपकार प्रभु ने, बस आज्ञा में रहना है,

मत भूलो मर्यादाएँ तुम.....॥4॥

-जन्ता साइटी सेक्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,  
स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

## आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

जरामच्चुवसोवणीए नरे सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ।

-आचाराङ्गसूत्र, तृतीय अध्ययन, उद्देशक-1, सूत्र-5  
अर्थ-जरा और मृत्यु के वश को प्राप्त मनुष्य सदा मूढ़ बना रहता है, वह मूढ़ व्यक्ति धर्म को नहीं जानता है।

विवेचन-जरा और मृत्यु मनुष्य जीवन की स्वाभाविक अवस्थाएँ हैं। जन्म होने के पश्चात् जिस प्रकार शिशु का शारीरिक विकास होता है और वह किशोरावस्था, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था को प्राप्त होता है, उसी प्रकार वह जरावस्था अर्थात् वृद्धावस्था को भी प्राप्त होता है और अंत में मृत्यु को प्राप्त होता है। जीवन की इन विभिन्न अवस्थाओं में वृद्धावस्था एवं मृत्यु का होना किसी भी मनुष्य को अभीष्ट नहीं है। कोई नहीं चाहता है कि वह बूढ़ा होकर अशक्त हो जाय, क्योंकि उस अवस्था में वह दूसरों की सेवा के अधीन हो जाता है एवं उसका जीवन कष्टमय बन जाता है। बुढ़ापा आने से यहाँ आशय शारीरिक अंगों का शिथिल हो जाना, उनका सही ढंग से कार्य न करना, शरीर में स्फूर्ति एवं सक्रियता का सञ्चार न होना आदि हैं। इस वृद्धावस्था में दन्तपंक्ति शिथिल होकर रोगाक्रान्त हो जाती है, घुटनों में दर्द उत्पन्न हो जाता है, जंघाबल क्षीण हो जाता है, कानों में सुनने की शक्ति घट जाती है, आँखों में देखने की शक्ति कम हो जाती है, पुत्र और पत्नी उपेक्षा करने लगते हैं। इस तरह बुढ़ापा दुःखदायी होता है। फिर भी मनुष्य अपनी इच्छाओं और कामनाओं को संयमित नहीं करता तो वह मूढ़ता से घिर जाता है।

यहाँ मूढ़ता से आशय व्यक्ति के मोहयुक्त एवं अज्ञानी होने से है। वह सच्चाई का आदर नहीं करता, शरीर के प्रति आसक्ति को ढीली नहीं करता तो उसकी मूढ़ता कम नहीं होती। ऐसा व्यक्ति भले ही धार्मिक क्रियाएँ करता हो तो भी वह मूढ़ ही कहलाएगा, क्योंकि वह धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं जानता। धर्म के सच्चे

स्वरूप में कामनाओं, वासनाओं पर नियन्त्रण होता है। वह जब मूढ़ता से आविष्ट नहीं होता तो अपनी शारीरिक दशा का सही-सही मूल्यांकन कर तदनु रूप जीवन जीता है।

मृत्यु प्रत्येक प्राणी की अवश्यम्भावी है, जो इस मृत्यु के सत्य को स्वीकार न कर उससे भयभीत बना रहता है और चाहता है कि उसकी कभी मृत्यु न हो तो वह व्यक्ति भी मूढ़ है। वह भी धर्म के सही स्वरूप को नहीं जानता है। जीवन की अनित्यता को जानने वाला तथा तदनु रूप जीवन शैली बनाने वाला धर्मनिष्ठ होता है।

आगमकार ने यहाँ जरा और मृत्यु का ही उल्लेख किया है, किंतु उत्तराध्ययन सूत्र की निम्नांकित गाथा में जन्म एवं रोग को भी दुःख कहा है-

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।

अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतवो।।

-(उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 19, गाथा 16)

जन्म होना भी दुःख है, बुढ़ापा भी दुःख है। रोग और मृत्यु भी दुःख है। जन्म के दुःख की हमें स्मृति नहीं रहती है, किंतु रोग का दुःख जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी भी अवस्था में आ सकता है। रोग का दुःख भी मनुष्य को अशान्त एवं पीड़ित बनाए रखता है, जिससे वह सत्य का अनुभव करने में सजग नहीं हो पाता। इसलिए जो जरा, मृत्यु, रोग आदि की अधीनता को स्वीकार कर लेता है अर्थात् उनके वश में जकड़ा रहता है, अपने चित्त में भी उनका ही प्रभाव अनुभव करता रहता है वह व्यक्ति मूढ़ बना रहता है तथा जो इनके होने पर भी अपने चित्त को इनसे अप्रभावित रखता है और इनकी सच्चाई तथा सीमाओं को जानता है, वह मूढ़ नहीं होता तथा धर्म को सही रूप में जानता है और जीता है।

जन्म, जरा, रोग, मृत्यु आदि तो उपलक्षण हैं। मनुष्य जब शारीरिक कष्ट से उपहत होता है तो वह प्रायः मूढ़ बन जाता है एवं धर्म को सम्यक्तया नहीं जानता है।

## दुःख-निवारण

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ❧ दुःख मिटाना चाहते हो तो जिन चीजों से दुःख होता है, उनके प्रति आसक्ति को ढीली कर दो। यह समझो कि यह चीज मेरी नहीं है। जो चीज आपकी होगी वह आपसे कभी अलग नहीं होगी। जो चीज आपसे अलग होने वाली है, वह आपकी नहीं है।
- ❧ दुःख और सन्ताप का कारण यदि कोई है तो ममता है। यह कार, यह कोठी, यह बगीचा, यह कुआँ मेरे नहीं हैं, मेरी नेश्राय में हैं। अपने विचारों में इतना-सा संशोधन कर लें, परिवर्तन कर लें तो कभी दुःख का पहाड़ अपने पर नहीं गिरेगा।
- ❧ जिस वस्तु पर हमारा ममत्व है वहाँ दुःख होता है, जिस पर ममत्व नहीं है वहाँ पर दुःख नहीं होता।
- ❧ जब कभी तुम्हारा मन साधना से चलित हो जाय, भोग की वस्तुओं में लग जाय, परिवार-जनों, पुत्र आदि में चला जाय, अर्थ पर मन चला जाय तो सबसे पहले यह सोचो कि जिनको मैं अपना समझ रहा हूँ, वे मेरे नहीं हैं और मैं भी उनका नहीं हूँ।
- ❧ गृहपति भाई-बहिन यह समझ लें कि पैसा और परिवार की रखवाली करना हमारा काम है। यह धन-दौलत तो किसी दूसरे की है। मेरे साथ चलने वाली नहीं है। मन की चञ्चलता को मिटाने का यह पहला उपाय है।
- ❧ राग को कम करना है तो आरामतलबीपना छोड़ो और आतापना लो।
- ❧ शास्त्रकार कहते हैं कि बाहर जाने वाले मन को यदि रोकना है तो बाहरी बातों से उसको हटाओ, ममता को समाप्त करो, विषय-कषायों से बचते रहो।
- ❧ जो आध्यात्मिक मार्ग की ओर आगे बढ़ाने के बजाय उससे पीछे मोड़ती है, उस कथा का नाम विकथा है।
- ❧ बाहरी वस्तु से जितनी-जितनी ममता होगी, राग होगा, स्नेह होगा उतना-उतना मन चञ्चल बनता जायेगा।
- ❧ राग बन्ध का कारण है और विराग बन्ध-मोचन का साधन। इनके बीच में एक कड़ी और होती है राग से खींचने वाली और विराग से जोड़ने वाली, जिसका नाम है-अनुराग। देव, गुरु, धर्म तथा शास्त्र की ओर अनुराग होता है तो राग से हटकर विराग की ओर बढ़ेगा।
- ❧ यदि सहिष्णुता पैदा हो गई तो शारीरिक कष्ट सामने आने पर भी मन में चञ्चलता नहीं आयेगी।
- ❧ जिसने अपने शरीर को साध रखा है, मन को मनाने की क्षमता है, उसको किसी भी परिस्थिति का सामना करने में कठिनाई नहीं होती।
- ❧ मन यदि सधा हुआ है तो आप जैसा मिला उसमें सन्तोष करोगे, राग-द्वेष नहीं होगा, मन चञ्चल नहीं होगा।
- ❧ भय, लोभ, महिमा की चाह और राग का लुभावना आकर्षण-इन चार बातों से साधक साधना-मार्ग में कमजोरी से पैर इधर-उधर रखने लगता है। इन समस्याओं को हल करने के लिए उसको गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।
- ❧ दुःख दूर करने की कुञ्जी है-कामना को दूर करना। तन की भूख मिटाना आसान है, लेकिन मन की भूख मिटाना मुश्किल है। तन की भूख कोई दूसरा भी मिटा सकता है, लेकिन मन की भूख स्वयं ही मिटा सकता है।
- ❧ यदि द्वेष को जड़ से काट दिया और राग की जड़ को हटा दिया तो संसार में रहता हुआ भी जीव सुखी हो जायेगा।

- 'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार

## धन नहीं, धर्म है त्राता

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

संसार सागर का दूसरा किनारा प्राप्त करने वाले अनन्त ज्ञान के साधक तीर्थङ्कर भगवन्त तथा कल्याणकारी धर्म की साधना में जीवन-अर्पण करने वाले पञ्च परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

**तीर्थंकर** भगवान महावीर ने अपनी अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र के चौथे अध्ययन में अनेक मिथ्या मान्यताओं का और जीवन में रही हुई शंकाओं का समाधान किया है। मुख्य बात यह है कि व्यक्ति अज्ञान और प्रमाद का शिकार होने पर मोक्ष मार्ग एवं शुद्ध धर्म की आराधना नहीं कर पाता है। आप अभी पूर्व में अंतगडदसाओ के माध्यम से मोक्षगामी पुरुषों की बात सुन पाये तो कल्पसूत्र के माध्यम से प्रतिदिन जीवन का सन्मार्ग बताने वाले चौबीस तीर्थङ्कर भगवन्तों का जीवन वृत्त सुन रहे हैं। ये दोनों ही सूत्र जीवन में धर्म को प्रमुखता देने की बात कह रहे हैं। लेकिन मानव न जाने कैसी-कैसी मिथ्या धारणाएँ पाले हुए है?

मानव का जीवन पानी के परकोटे की तरह है, जो कि क्षण भर का अस्तित्व रखता है। दीपक की लौ की तरह है, जिसे एक हवा का झोंका लगा और बुझ गया। जैसे पका हुआ पीपल का पान गिर जाता है इसी तरह क्षण भर में-पल भर में देखते-देखते यह जीवन खत्म हो जाता है। जो अर्थ और काम में लगे हैं उनकी बात अलग है, लेकिन जो मात्र धर्म पुरुषार्थ में लगे हुए हैं उन्हें इस चतुर्थ अध्ययन में चिन्तन करने की आवश्यकता है। तीर्थङ्कर भगवन्तों ने अपनी वाणी में कहा है-

जे पावकम्महिं धणं मणुस्सा, समाययंती अमइं गहाय।  
पहाय ते पास-पयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उर्वेत्ति॥

-(उत्तराध्ययनसूत्र 4.2)

अर्थात् जो मनुष्य कुबुद्धि के वश होकर धन को अमृत समझकर पापकर्मों से धन उपार्जित करते हैं, वे स्त्री-पुत्रादि के बन्धन में पड़े हुए धन आदि को यहीं छोड़कर वैर-परम्परा बाँधकर नरक में जाते हैं।

भगवान के द्वारा शाश्वत सत्य प्रकट किया जा रहा है। आज का मानव जीवन का मात्र एक ध्येय लेकर चल रहा है कि येन-केन प्रकारेण धन का अर्जन हो। वह जैसे किसी को परमेश्वर मानकर चल रहा है। जब से उसने होश सम्भाला है धनादि के पीछे पड़ा है और जब तक श्वास रुक न जाए तब तक उसका एक ही लक्ष्य है धन कमाना, पर यह पता नहीं है कि उसका यह जीवन-दीप कब बुझ जायगा।

रोज सुनते हैं, करोड़ों के धन्धे हैं, पर अचानक चला गया, बहुत बुरा हुआ। उसने नई बिल्डिंग बनाई, पर रह नहीं पाया। एकाएक जाने वाला चला गया, उसको देखकर संवेदना प्रकट की जा रही है। जाने वाला गया, लेकिन मैं तो अभी नहीं जाऊँगा, यह मिथ्या धारणा बना रखी है और प्रतिदिन वही दुकान और वही तेरी-मेरी। वही घर और वही आरम्भ-समारम्भ। आप संवेदना तो प्रकट कर आये, किन्तु शायद आपने एक भी शिक्षा नहीं ली, क्योंकि आपकी धारणा है-जाने वाला दूजा- हमारी होगी पूजा। यही अन्धी मान्यता है, मिथ्या धारणा है। किन्तु शास्त्र कह रहा है आज तक धन पाकर किसी ने त्राण पाया नहीं है। धन किसी का भी शरणदाता बना नहीं है। अलबत्ता धन ने तो जान को खतरा पैदा किया है, धन जान बचाने के लिए समर्थ नहीं हुआ। अगर ऐसा होता तो चक्रवर्ती सम्राट् राज्य को छोड़कर

प्रव्रज्या क्यों अङ्गीकार करते। धन ही यदि त्राण दाता होता तो जो धन-कुबेर कहलाते थे, उन्हें शायद कभी दुःख होता ही नहीं।

मिथ्या मान्यता में जकड़े व्यक्ति को सत्य समझने की आवश्यकता है। सत्य क्या है? सत्य धर्म है। सत्य धर्म का पुरुषार्थ करना है। संसार में धन की पूजा है। लेकिन धर्मक्षेत्र में पूणिया जैसे श्रावक भी सम्मानित किये गये हैं। पूणिया के यहाँ मगध देश का सम्राट पहुँच रहा है। यदि धन की ही पूजा होती तो उस सूत कातने वाले पूणिया के पास राजा श्रेणिक क्यों जाते? धन तीन काल में त्राण नहीं दे सकता है और कुमति से यदि कोई धन पैदा किया हुआ है तो वह हमें ले डूबता है। पुण्यशाली जीव तो जहाँ जायेगा वहीं उसे धन मिल जायेगा। एक व्यक्ति घर को छोड़कर बगीचे में जाकर सोया और सूखा बगीचा हरा हो गया। वह ऐसा पुण्यशाली कि पेड़ की छाया भी उसके साथ पहुँच रही है। एक ने नगर में क्रदम बढ़ाये तो फूल माला लेकर हाथी ने अभिषेक कर दिया और राजा बन गया। पुण्यशालियों को इस तरह धन, राज्य, सम्पदा आदि मिल जाते हैं।

आज विपरीत धारणा को रखकर व्यक्ति धन में ही ममता-मूर्च्छा रखे हुए है। बाहर जा रहा है तो घर वालों को अलग चेतायेगा, पड़ोसी को अलग चेता कर जायेगा कि म्हारे घर रो ध्यान राखजो। अरे भाई तेरे पास क्या है? धर्म रूपी धन ही असली धन है। लेकिन धन का लोभी जानता नहीं। यहाँ भगवान महावीर भ्रान्ति का समाधान कर रहे हैं।

संसारमावण्ण परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं।  
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न बंधवा बंधवयं उव्वेत्ति॥

-(उत्तराध्ययनसूत्र 4.4)

अर्थात् जीव स्व-पर के लिए जिन कर्मों का बन्धन करता है, उन कर्मों के फल को भोगते समय कोई भी बन्धु-बान्धव बँटवारा नहीं कराते हैं।

कई विचक्षण कहलाने वाले पुरुष कहते हैं कि धर्म तो म्हारी घरवाली करे और मैं तो धन कमाऊँ। मेरे

कमाने से सारा घर खाता है इसलिये घर वालों द्वारा किया हुआ धर्म मुझे भी काम आयेगा। लेकिन ध्यान रखना भगवान कहते हैं कि पाप करके जो धन कमाया जाता है, परिवारजन उस धन का भोग तो कर लेंगे, पर आपने जो कर्म फल पाया है, उसका कोई भागीदार नहीं होगा। उस कृत पाप का फल स्वयं को भोगना होगा। उसका बन्धुजन बँटवारा नहीं करते हैं। खुद की भूख खुद के खाने से मिटेगी, ऐसा नहीं होगा कि पत्नी दोगुनी रोटी खा ले और आपकी भूख मिट जायेगी। जो कर्म किया जा रहा है, जो हिंसा की जा रही है, झूठ बोला जा रहा है, चोरी की जा रही है, जिस-जिस पाप का सेवन किया जा रहा है उसका फल तुम्हें ही भोगना पड़ेगा। धन भोगने वाले तो बहुत मिल जायेंगे, परन्तु कर्म के फल भोग में किसी की भागीदारी नहीं है।

अपने जन्म को सार्थक करना चाहो तो स्वयं धर्म का आचरण कर कर्म बन्धनों को तोड़ने का प्रयास करो। नहीं तो, यह मानव जन्म पाकर इसे यूँ ही व्यर्थ गँवा दोगे। जो कर्म तुम्हारे द्वारा किये गये हैं, जब तक उन कर्मों को भोग नहीं लोगे तब तक तुम्हें मोक्ष नहीं होगा। तीर्थङ्कर भगवान महावीर के जीव ने राजा नन्द के भव में 11 लाख 60 हजार मासखमण किये, फिर भी उन सम्पूर्ण कर्मों का अन्त नहीं हुआ, जो पूर्व भवों में बाँधे थे। एक बन्ध वह जो अपने सुख के लिए किया जा रहा है वह तप के माध्यम से, क्षमा के माध्यम से काटा जा सकता है। लेकिन जिस कर्म के माध्यम से दूसरों को सताया गया हो, जब तक उस कर्म का फल भोग नहीं लेंगे तब तक उससे छुटकारा होने वाला नहीं है। भगवान महावीर के जीव ने त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में मात्र गीत का शौकीन बनकर गुस्सा किया और शय्यापालक के कानों में तप्त शीशा डाला। बस ऐसे ही कर्मों का चुकारा बाकी था, इसलिये लाखों मासखमण से भी मोक्ष नहीं जा सके।

आज नया सम्वत्सर प्रारम्भ हो रहा है। साधनाशील साधक आज से नया प्रारम्भ करें। आचार्य

भगवन्त फरमाया करते थे चलने वाला यात्री मञ्जिल पर पहुँचने से पहले कभी रुकता है तो वह विश्राम के लिए नहीं, अपितु थकान मिटाकर नई स्फूर्ति लेने के लिए, गन्तव्य पर पहुँचने के लिए रुकता है। कई नगरों में आटा पीसने की चक्की देखी होगी। उसको ठण्डी करते हैं, ठण्डी क्यों करते हैं तो उसकी खराबी को निकालने के लिए और वह नई ताजगी के साथ काम कर सकें इसलिये उसे ठण्डी किया जाता है। इसी प्रकार आपको भी नई स्फूर्ति के लिए विश्राम करना है। जो काम पिछले वर्ष नहीं कर पाये, संकल्प कर लें और उसे पूरा करें।

जीवन में बिना मतलब के पाप लग रहे हैं। इसलिये तीर्थङ्कर भगवान की यह अन्तिम वाणी भरोसा दिलाने के लिए तथा लक्ष्य बताने के लिए आपके सामने रखी है। धन लक्ष्य नहीं है, धर्म लक्ष्य है।

कुछ लोगों का कथन है कि धर्म भीड़ में नहीं होता, धर्म तो एकान्त में होता है। तीर्थङ्कर भगवान महावीर का कथन है कि करने वाले के लिए भीड़ में भी होता है, नहीं करने वाले के लिए एकान्त में भी नहीं होता है। करने में ढिलाई है, एक-दूसरे के सहयोग की अपेक्षा है तो सम्भवत नहीं होगा। धर्म सहयोग से होता है, पर बिना स्वयं करे नहीं होता। बिना मालिक के घोड़ा नहीं चलता, उसे अकेला छोड़ दो तो खुद भी भटक जायेगा और मालिक को भी भटका देगा। संसारी जीव को मोह लगा हुआ है, यह ही साधना में बाधक है। इसलिये धर्म के लिए न एकान्त बाधक है और न भीड़ बाधक। धन का लक्ष्य बदल कर धर्म को लक्ष्य में रखेंगे, 12 व्रतों का पालन एवं वीतराग वाणी का अवलम्बन लेकर चलेंगे तो शान्ति को प्राप्त करेंगे।

### पर्व पर्युषण प्यारा

श्री दिनेश जैन

(तर्ज :- ओ साथी रे .....)

ओ चेतन रे .... पर्व पर्युषण प्यारा 2  
मन को मोड़ो रे .....वैर को छोड़ो रे  
सबको दिल से खमालो ... पर्व पर्युषण प्यारा  
ओ चेतन रे .....।।टेर।।  
ठाणांगसूत्र का, चौथा ठाणा,  
क्षमा को ही धर्म बताया।  
कानों में कीले, ठोके ग्वाले ने,  
अन्तर में समभाव जगाया।।  
कष्टों से न घबराए .....2, वीर वो कहलाए,  
धन्य-धन्य हो महावीरा .....पर्व पर्युषण प्यारा-2  
ओ चेतन रे .....।।1।।  
क्षमा सरलता, सन्तोष विनम्रता,  
यही धर्म के द्वार चार हैं।  
वाणी मधुर हो, जीवन सरल हो,  
मन में शीतलता, देगी प्रसन्नता।।

पवों का राजा आया....2, क्षमा सन्देशा लाया,  
दिल को दिल से मिलाया, पर्व पर्युषण प्यारा 2  
ओ चेतन रे .....।।2।।

दुःखम आरा, क्रोध की ज्वाला,  
पर्व पर्युषण क्षमा की धारा।  
त्याग तपस्या, संवर पौषध,  
धर्म आराधना अवसर आया।।

सुनते हैं जिनवाणी.....2, बढ़ती है पुण्यवानी,  
क्षमा ही संसार किनारा, पर्व पर्युषण प्यारा-2  
ओ चेतन रे.....।।3।।

वैरानुबन्धी, वैर भयंकर, दुर्गति की ये राह दिखाता।  
चौबीस दण्डक के सब जीवों से,  
वैर भूलो तुम मन वच काया।।  
नम जाओ गम खाओ..... 2,  
क्षमा के दीप जलाओ,  
क्षमा बिन जीवन अधूरा..... पर्व पर्युषण प्यारा-2  
ओ चेतन रे....।।4।।

-फिल्ट्रान्ना, हैदराबाद (तेलंगाना)

## विनाशी शरीर से जीव की साधना

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला-महामन्दिर, जोधपुर में 13 अक्टूबर, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

### बन्धुओं!

साधक को साध्य पाने के लिए साधनों का अवलम्बन लेना होता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 28वें अध्ययन में मोक्ष-मार्गगति का सुन्दर विवेचन हुआ है। हम विवेचन की चर्चा के पहले 'साधक कौन' समझने का प्रयास करें। जिसे अपने प्रति बुराई का ज्ञान है अथवा जो अपने ज्ञान में अपनी बुराई जानता है वह साधक है। साधक वह नहीं हो सकता जो बुराई रहित हो गया, क्योंकि बुराई रहित तो वीतरागी हैं। वीतराग भगवन्तों ने साध्य प्राप्त कर लिया, वे साधक नहीं हैं। वीतराग भगवन्तों ने मिथ्यात्व को क्षय कर लिया, राग-द्वेष को जीत लिया और जो अठारह दोष-रहित एवं बारह गुण सहित हैं वे साधक से साध्य बन गए हैं।

असन्नी जीव साधक नहीं बन सकता। क्यों, तो उसकी चेतना विकसित नहीं है। साधक वह भी नहीं हो सकता जिसे अपने दोषों की जानकारी नहीं है। सन्नी को मन प्राप्त है। जीव का लक्षण वही है जो मोक्ष-मार्ग का लक्षण है। जीव जीवत्व से वञ्चित रहकर, पुद्गल में लीन होकर, चेतना के गुण पर कुठाराघात करता है। मिट्टी एवं पानी के मिलने से खिलौने बनते हैं, झरझरी बनती है, मटका बनता है, दीपक बनता है, इसी तरह जीव-अजीव के संयोग से शरीर उत्पन्न होता है।

सबसे पहले ज्ञान की बात कही गई है। आपके और हमारे बोलने में आ जाता है-आत्मा को जानो। आत्मा को जानो कहने में तो आ गया, पर कौनसे ज्ञान से आत्मा को जानें? आप में से कई स्वाध्यायी हैं।

रूपी-अरूपी थोकड़े में आता है-पाँचों इन्द्रियाँ रूपी हैं। इन्द्रियाँ शब्द ग्रहण करती हैं, वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श भी ग्रहण करती हैं, पर श्रुत मतिपूर्वक होता है। बोलने में आ जाता है-आत्मा को जानो, पर आत्मा जानने की चीज नहीं, अनुभव करने की चीज है।

ब्यावर के पण्डित श्री शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने ईस्वी 1989 में द्रव्य और तत्त्व में क्या अन्तर है, सिखाया, फिर पीपाड़ व्याख्यान में भी सुनने को मिला तदनुसार बाहर की व्यवस्था द्रव्य है और भीतर की अवस्था तत्त्व है। विद्वानों ने ज्ञान के क्षेत्र में द्रव्य को रखा और दर्शन के क्षेत्र में तत्त्व को। जानकारी शरीर की होती है, रूपी पदार्थों की होती है। हमने जान लिया कि यह शरीर अनित्य है। हम शरीर के चाहे जितने गीत गुनगुनाएँ, पर एक काँटा चुभ जाय तो फिर देखो क्या स्थिति बनती है? ऐड़ी में दर्द आ जाय, आँख में फूस पड़ जाय तो फिर देखो कैसी दशा होती है?

जयपुर चातुर्मास पश्चात् 1987 के दिसम्बर माह में डॉ. कुलश्रेष्ठजी बता रहे थे कि आँख के 250 से अधिक रोग हैं। मोतिया बिन्द है, जाला है, काला पानी है, इस तरह के कुछ रोग तो प्रायः जानकारी में होते हैं, पर सारे रोगों की सबको जानकारी नहीं होती। हम गोचरी जाते हैं तब देखते-सुनते हैं कि एक भाई के आँख में 28 हजार रुपयों का इन्जेक्शन लगता है। यह तो आँख की बात है, शरीर में न जाने कितने रोग हैं? चिकनगुनिया, डेंगू जैसे कुछ नए नाम सुनने में आते हैं। ये रोग पुद्गल में ऐसी रंगत जमाते हैं कि कई दिनों तक चैन नहीं पड़ता।



रोग असाता वेदनीय के उदय से आते हैं। रोग आने पर जीव उसका अनुभव करता है, पुद्गल का कुछ नहीं होता। कभी किसी के सिर में दर्द होता है तो उसके मुँह से निकलता है—सिर फट जाएगा, लेकिन सिर फटता नहीं। किसी के पेट में दर्द उठता है तो मुँह से निकलता है—प्राण निकल जाएँगे, परन्तु प्राण निकलते नहीं। वह पीड़ा जीव को अनुभव होती है।

यह शरीर विनाशी है। आज भले ही इस शरीर से सुख मिल रहा हो, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। आप उत्तराध्ययनसूत्र का 18वाँ, 19वाँ अध्ययन देख लीजिए। समुद्रपाल चोर को देख रहा है। दुःख को अपनाए बिना किसी का विकास नहीं होगा। पराये दुःख को अपनाकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। सन्तों को गोचरी बहराकर उनके जीवन से अनुप्राणित होकर भी जागृति प्राप्त की जा सकती है।

जब तक रुचि-अरुचि की जानकारी नहीं, तब तक चाह नहीं मिटेगी। रुचि-अरुचि रूपी भूमि पर चाह रूपी दूब उत्पन्न होती है। आप थाली पर बैठकर भोजन कर रहे हैं, तब भी मोक्ष-मार्ग उत्पन्न हो सकता है। रुचि से राग और अरुचि से द्वेष उत्पन्न होता है। राग से बन्धन, जड़ता और पराधीनता आती है। जीव को अजीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व। भगवान ने कहा शरीर के प्रतिकूल नहीं खाना। भगवान का कहा कौन मानता है? भगवान का कहा मानने वाला—यह नहीं भाता, यह अच्छा नहीं जैसी बातें नहीं सोचता।

हमारे एक वैद्यराज जी थे—सम्पतराज जी मेहता। वे कहते—शरीर में तीन नाड़ियाँ चलती हैं। एक वात की है तो एक पित्त की और एक कफ की। एक बन्दर जैसी है तो एक साँप जैसी और एक मेंढक जैसी। वात-पित्त-कफ ये तीनों शरीर को बिगाड़ते हैं। वात-पित्त-कफ असन्तुलित नहीं होगा तो शरीर स्वस्थ रहेगा।

हमको समझना है—रुचि से राग, राग से बन्धन, बन्धन से जड़ता और जड़ता से देहभाव दृढ़ होगा। देहभाव के कारण वस्तु की गुलामी होगी। अरुचि से

भेद, भेद से भय और भय से संघर्ष होगा। भय से हृदय दुर्बलता को प्राप्त करेगा। रोग चाहे हार्ट का हो, बी.पी. का हो, शूगर का हो, ब्रेन का हो, सब रोगों का मूल है—अजीर्ण। रोगों का मूल अजीर्ण है, यह हमें बचपन में सिखाया गया। आँत भारी तो माथ भारी। कब्जियत कंजूसियत की निशानी है।

साधकवृत्ति में जीने वाला ईमानदारी से जीता है। इसीलिए तो कहा है—एक महीने का शुद्ध साधुपना वाणव्यन्तर देवों के सुख को लाँघ जाता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 12वें अध्ययन की 32वीं गाथा में आया है—मेरे को कोई द्वेष नहीं। क्यों? तो द्वेष से भय, भय से संघर्ष पैदा होते हैं। राग-द्वेष का चक्र चलता है तो वस्तु और व्यक्तियों की पराधीनता होती है। हिंसा और संघर्ष का कारण भी राग-द्वेष ही है।

अठारह पापों में सतरह पापों का सीधा सम्बन्ध मिथ्यात्व से है। हम शुरू से ज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। किसी ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का क्रम कह दिया तो कहीं दर्शन को पहले बता दिया। कई विद्वानों का अभिप्राय है—दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता। मोक्ष-मार्ग में ज्ञान-दर्शन-चारित्र है तो कहीं-कहीं दर्शन को ज्ञान के पहले बताया—सम्यग्दर्शन, फिर सम्यग्ज्ञान।

पुद्गल मिलता है, बिछुड़ता है। पर्याय में परिवर्तन होता है। आप इसे उदाहरण से समझें। छिपकली की पूँछ कट गई। कटी हुई पूँछ हिल रही है। इसका मतलब है कि पूँछ में जीव का प्रदेश जुड़ा हुआ है। आपने कभी कठपुतली का नाच देखा होगा। कठपुतली अंगुली के इशारे पर नाचती है। अंगुली में पतला—सा धागा नहीं हो तो कठपुतली का नाच नहीं हो सकता। इसी प्रकार छिपकली की पूँछ जीव प्रदेशों के कारण हिलती है।

एक प्रदेशी द्वि-प्रदेशी बनता है तो उसमें अनन्त काल लग सकता है। परमाणु तो असंख्यात काल के बाद बनेगा ही, किन्तु जो टूटता है, वह मेरा स्वरूप नहीं है। सबसे पहले जीव-अजीव की जानकारी आवश्यक है। ज्ञान-दर्शन सकारात्मक हैं। असत् की

अनुभूतिजनित वेदना ध्यान की कला सिखाती है। ध्यान के लिए अशुभ प्रवृत्ति को तिलाञ्जलि देनी होगी। निर्विकल्पता की स्थिति में निरर्थक चिन्तन और अशुभ कर्म से अलग हटना होगा। इसके लिए हिंसा, झूठ, चोरी का त्याग अनिवार्य है।

आप यहाँ शान्ति से बैठे हैं। अभी पुद्गल की वेदना नहीं है। आप इस दशा में आगे बढ़ सकते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र का 28वाँ अध्ययन भीतर की चेतना जागृत करने वाला है। स्व की विमुखता पर की रुचि को जागृत करती है। स्व की रुचि कभी नष्ट नहीं हो सकती। स्व की रुचि लुप्त तो नहीं होती, लेकिन उस पर आवरण आ सकता है। एक-एक आत्मप्रदेश पर अनन्त-अनन्त कर्म पुद्गलों की सत्ता जीव ने बनाई है। अंग्रेज बुरे नहीं हैं, अंग्रेजों को हमने अपना शासक मान लिया, यह बुरा है। यह कथन महात्मा गाँधी का है। बस, यही बात अजीव के लिए है। अजीव बुरे नहीं, हमने उनकी पराधीनता मान रखी है।

स्व की विमुखता पर की रुचि जागृत करती है। जयपुर में हमारे यहाँ एक बच्चा आया। उससे पूछा गया तुम्हें क्या अच्छा लगता है? बच्चे का उत्तर था-मुझे चाइनीज पिज्जा सबसे अच्छा लगता है। किसी ने कहा-अच्छा, तो ले तू चाइनीज पिज्जा ही खा, इसके अलावा कुछ भी मत खाना। बच्चा तुरन्त बोला-यह सम्भव नहीं।

बच्चे की बात क्या कहूँ, आपके लिए भी यही बात है। आपसे कोई पूछे-आपको कौनसी ड्रेस अच्छी लगती है? जवाब में यह ड्रेस। ठीक है, आप इसी ड्रेस को पहने रहो, इसे बदलना नहीं। आप उस ड्रेस को पहनते-पहनते थक जाएँगे, ड्रेस बदलनी होगी। यही बात पुद्गल के लिए है। पुद्गल में लगातार सुख देने का सामर्थ्य ही नहीं।

आपने चलचित्र देखा होगा। चलचित्र का मतलब क्या? जिसमें चित्र चलते रहते हैं वह चलचित्र है। चल-चल से चलचित्र बनता है तो चल-चल से ही चित्त की

चञ्चलता आती है। जीव चल-चल से चलेगा तो फिर निज-स्वरूप में अचलता का बोध कहाँ से आएगा?

निजस्वरूप में अचलता का बोध ही ज्ञान है। आप बोलते हैं न-“अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार।” कभी प्रार्थना में धुन निकलती है-“रोग-शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।”

मतलब क्या? जो चलता है, वह मैं नहीं हूँ। जो बदलता है वह भी मैं नहीं हूँ। मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ? मैं अचल हूँ-अटल हूँ। जीव को जब वेदना लगती है तो असत् की अनुभूतिजनक वेदना से अरुचि होती है।

स्व की रुचि के दस बोल हैं। पहले गुणस्थान से रुचि जगनी शुरू हो जाएगी। स्व की रुचि जगने पर ही पर की चिन्ता नहीं होगी। आज कई हैं जो बच्चों के लिए कमाते हैं, बंगला बनाते हैं, कार लेते हैं, धन-सम्पदा एकत्रित करते हैं, पर आपका बच्चा गलत सङ्गत में, गलत आचरण में पड़ गया तो?

जब तक अन्दर का रस नहीं आएगा तब तक विकास होने वाला नहीं है। जब अन्दर का रस मिल गया तो फिर घर वाले रोकना चाहें तो भी रोक नहीं सकेंगे। मृगापुत्र को घर वाले रोकना चाहते हैं, पर वह नहीं रुकता। क्यों? कारण क्या? उसे लग गया कि स्व की जागृति ही सब-कुछ है।

असत् की पीड़ा लगती है तो आस्था जगती है। आस्था जगने पर आत्मा महात्मा और परमात्मा बनता है। जो आत्मा की शुद्ध अवस्था में पहुँच गया, जिनके राग-द्वेष नहीं रहे, वे मेरे आराध्य देव हैं और जो राग-द्वेष को जीतने के मार्ग पर बढ़ रहे हैं वे गुरु हैं। देव और गुरु के बताए मार्ग पर गति कराने वाला कोई तत्त्व है तो वह है-धर्म। पूर्ण निर्दोष तो परमात्मा है और जो निर्दोषता के लिए सजग हैं वे महात्मा हैं। आप सुनकर-समझकर मोक्ष-मार्ग में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ करें, यही अपेक्षा है।



## आज से भीतर में करें प्रवेश

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 13 जुलाई, 2022 को जैन स्कूल महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।  
-सम्पादक

### जिज्ञासु उपासकों!

आज का दिन भीतर में प्रवेश करने का दिन है। आपको अपने भीतर में खोजना है कि हम कैसे शाश्वत सुख पायें? आज से सन्त-सती जहाँ भी हैं, वे स्थिर हो जायेंगे। यह दिन आपको भी स्थिरता का सन्देश देता है।

स्थिरता क्यों आवश्यक है? क्योंकि काँच यदि स्थिर नहीं है तो आप मुँह साफ-साफ नहीं देख सकते। पानी में चञ्चलता है तो भी आप अपनी परछाईं ठीक से नहीं देख सकते। आप स्थिर होंगे तो धर्म-साधना कर सकेंगे।

आज चातुर्मास का प्रथम दिन है। आज के दिन से आपके पाँव बाह्य भ्रमण से रुक जाने चाहिए। पाँव ही नहीं रुके तो दुर्भाव कैसे रुकेंगे?

अभी मौसम में कुछ बदलाव हो रहा है। मौसम बदलता है तो मन भी कुछ बदलता रहता है। आज का यह पहला दिन सन्देश देता है कि भीतर आओ। भीतर में आने पर शान्ति मिलेगी। जितनी-जितनी शान्ति होगी उतनी-उतनी साधना पुष्ट होती जायेगी।

मुझे यहाँ एक घटना याद आ रही है। एक सज्जन महाशय थे, उनकी घड़ी गुम हो गई। उन्होंने खूब ढूँढा, पर जब घड़ी कहीं नहीं मिली तो उन्होंने बच्चों से कहा- “बच्चों! मेरी घड़ी कहीं गुम हो गई है, तुम उसे ढूँढकर लाओ तो तुम्हें इनाम दूँगा।”

बच्चे तो बच्चे ही थे। उन्होंने एक-एक कमरे को देखा, पर घड़ी कहीं नहीं मिली। एक बच्चा जो अन्य सभी बच्चों से अलग चुपचाप खड़ा था, उससे कहा कि तुम भी घड़ी ढूँढने में मदद करो। वह बच्चा बोला- “मैं

प्रयास करता हूँ, पर मेरी एक शर्त है कि इन सभी बच्चों को यहाँ से बाहर निकाल दें तो मैं कोशिश कर सकता हूँ।” बच्चे की शर्त का पालन किया गया।

फिर बच्चे ने घड़ी खोजने के लिए एक-एक कमरे में देखा। वह जब एक कमरे में गया तो उसे टिक-टिक की आवाज सुनाई दी। उसने वहाँ से घड़ी उठाई और अंकल से बोला-मैंने आपकी घड़ी ढूँढ ली है। यह रही आपकी घड़ी।

उस आदमी ने पूछा-तुम्हें यह कैसे मिली? बच्चे ने कहा-पहले बहुत सारे लड़के थे और वे घड़ी ढूँढते-ढूँढते बातें भी कर रहे थे। उनके हो-हल्ले में घड़ी की आवाज़ जो टिक-टिक कर रही थी, किसी ने नहीं सुनी। मैं अकेला था, वहाँ शान्ति थी जिससे मुझे घड़ी की टिक-टिक सुनाई दी और मैंने घड़ी खोज ली।

उस बच्चे ने बताया कि मैंने भी प्रत्येक कमरे में देखा और एक कमरे में मुझे टिक-टिक की आवाज सुनाई दी। यह काम सारे बच्चे नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे ढूँढ़ भी रहे थे, बातें भी कर रहे थे।

जहाँ शान्ति है वहाँ समाधि है। जहाँ समाधि है वहाँ आनन्द है। वीतराग भगवन्तों की वाणी यही तो कह रही है-आज स्थिर होकर शान्त-चित्त से साधना करें तो सफलता मिलेगी।

आज आषाढ़ी चौमासी है। आज जो जनसमूह आपको दिखाई दे रहा है उसे न तो बुलाया गया और न ही आमन्त्रित किया गया, बल्कि यह तो पकड़ी, चौमासी का प्रताप है। प्रभु भी यही कहते हैं कि आज से स्थिरता का समय प्रारम्भ हो रहा है।

अब चातुर्मास में क्या करना? आज पाक्षिक एवं चौमासी पर्व है और आज ही के दिन गुरु पूर्णिमा भी है। आपको अतिथि सत्कार करना है, साथ ही साथ आज से आपको आत्म-साक्षात्कार भी करना है। मैं अतिथि सत्कार की मनाही नहीं करता, पर आप आत्म-साक्षात्कार को भूलें नहीं। आप चौके की व्यवस्था में ही न रह जाय, बल्कि अपनी आत्मा के लिए भी कुछ करें।

आपको अपना आवागमन मिटाना है। वह कैसे मिटेगा, इस पर आपको चिन्तन करना है। एक काम तो मैंने बता दिया कि आपको आवागमन नहीं करना है, परन्तु एक जगह स्थिर होकर शांति से साधना करनी है। आप ऐसी साधना करें जिससे आवागमन समाप्त हो जाय।

दूसरा, ज्ञानीजन एक सुगम रास्ता बता रहे हैं कि आपको गुरु-चरण-शरण में रहना चाहिए।

आप मेरी बात पर ध्यान देंगे। मैं आपको जीवन के उपयोगी सूत्र बताने की कोशिश कर रहा हूँ। ये बातें मेरी नहीं हैं, मैंने अनुभवियों से सुनी है, आप इनका अपने

जीवन में उपयोग कर सकते हैं। मैं दो सूत्र बता रहा हूँ।

पहला सूत्र है-आप अदरक को जानते हैं। अदरक के साथ थोड़ा गुड़ लिया जाय तो कफ से छुट्टी मिल सकती है। दूसरा सूत्र है-हरड़ के साथ गुड़ लें तो वात-रोग से निजात मिल सकती है।

आप कहेंगे कि महाराज क्या वैद्यगिरी कर रहे हैं? नहीं, मैं न तो वैद्य हूँ और न ही वैद्यगिरी मुझे आती है। मैं तो गुड़ को गुरु के रूप में देखता हूँ। गुरु अपने भक्तों के कर्म काटने का मार्ग बताता है।

आप गुरु-चरण-शरण में आये हैं तो सन्तों की तरह साधना में कुछ तो करें। सन्त आज प्रतिक्रमण-प्रतिलेखना-प्रायश्चित्त करेंगे। आप भी इन कार्यों को कर सकते हैं। श्रावक भी प्रतिक्रमण करता है एवं प्रायश्चित्त भी लेता है। आप साधना में समय का उपयोग करें तो आपके भावों में शुद्धि होगी।

आपको चातुर्मास सफल बनाना है, इसके लिए तो साधना करनी होगी। आप साधना करेंगे, ऐसा विश्वास है।

### भावी आचार्य दिवस

श्री मन्मोहनचन्द्र बाफणा

जिनका पावन निर्मल है मन,

मीठी वाणी निर्लेप वचन।

हस्ती-हीरा ने ढाला, बने कुन्दन,

पूज्य महेन्द्र को शत-शत वन्दन॥

जिनकी क्रिया में ताप नहीं है,

जिनके हिवड़े में पाप नहीं है।

विषय-कषाय आताप नहीं है,

ऐस पूज्य को करूँ नित वन्दन॥

जिसने ज्ञान उजाला फैलाया,

स्वाध्याय से जग जन जगाया।

हीरा गणी की बोध से महाकाया चन्दन,

आगम ज्ञाता महापुरुष को है वन्दन॥

मोह ममता से दूर इच्छाओं का निरोध है,  
अपनी आत्म-जागृति का पूरा बोध है।  
देश में बहायी ज्ञान गंगा, हीरा का नाम है,  
पा महेन्द्र से मधुर बोल, वन्दन बार-बार है॥

आगम की अमृत वाणी से सदा परिपक्व है,  
जीवन निर्मल, क्रिया निर्मल, अनुपम बोध है।  
सेवा, समर्पण, निर्लेप जीव महान् है,  
ऐसे भावी गणिवर को, अभिवन्दन हजार है॥

सैतालीसवीं दीक्षा पा सुखदाई,  
गणिवर हीरा को पा जिनकी बढ़ी पुण्याई।  
रत्नसंघ में भावी आचार्य को पाकर,  
सारा जग करता है प्रमुदित हो वन्दन॥

-128/376, एच 2 ब्लॉक, जैन सदन, किंदवई  
नगर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

## मुखवस्त्रिका की महत्ता

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य एवं सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की निश्रा में विराजित श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 4 जुलाई, 2022 को प्रताप नगर स्थानक-जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री राजकुमारजी लोदिया, जयपुर ने किया।

-सम्पादक

धर्मप्रेमी सज्जनों!

रूप और स्वरूप को निखारने वाली, जीवों की यतना में सहायक बनने वाली, जिनशासन-जिनधर्म को पहचान दिलाने वाली वस्त्रिका का नाम है- मुखवस्त्रिका। रूप और स्वरूप को निखारने वाली अर्थात् मुखवस्त्रिका धारण करने पर जो रूप बाहर होता है, जो दिखाई देता है वह भी सुन्दर बन जाता है, कभी किसी के अंगोपांग नामकर्म के उदय के कारण मुखाकृति विकृत हो, दन्तपंक्ति वीभत्स हो तो मुखवस्त्रिका धारण करने पर मुख की शोभा, चेहरे की आभा निखर जाती है। साथ ही जो स्वरूप भीतर होता है अन्तर से प्रकटित होता है वह भी मुखवस्त्रिका धारण करने से सु-रूप अर्थात् सुन्दर परिणति वाला बन जाता है।

मुखवस्त्रिका एक ऐसा वस्त्र है जो वायरस से बचाता है, विकार से बचाता है, विराधना से बचाता है, विरक्ति के भाव जगाता है, साथ ही साधक की साधना को विशेष पहचान दिलाता है।

प्रश्न आता है-हम मुखवस्त्रिका को धारण क्यों करें? तो ज्ञानीजन समाधान फरमाते हैं-1. जीवों की रक्षा और 2. आत्म-गुणों की सुरक्षा के लिए मुँहपत्ती धारण करें।

मुँहपत्ती धारण करने से वायुकाय के जीवों की रक्षा होती है। छह काय में वायुकाय की यतना करना सबसे कठिन होता है। अनुभवियों ने कुछ बातें कठिन बताईं, जैसे-1. आठ कर्म में मोहनीय कर्म को जीतना कठिन, 2. पाँच इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय को जीतना कठिन, 3. तीन योगों में मनोयोग को जीतना कठिन, 4. पाँच

महाब्रतों में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना कठिन, 5. चार कषायों में मान कषाय को जीतना कठिन, 6. आठ मर्दों में ज्ञान मद को जीतना कठिन, 7. तीन राग में दृष्टि राग को जीतना कठिन, 8. तीन सम्यक्त्व में क्षायिक सम्यक्त्व को पाना कठिन, 9. चौदह गुणस्थान में 13वें गुणस्थान को पाना कठिन, 10. पाँच ज्ञान में केवलज्ञान को पाना कठिन, 11. तीन गुप्ति में मनोगुप्ति को जीना कठिन, 12. पाँच समिति में एषणा समिति की निर्दोष पालना कठिन और 13. छहकाय में वायुकाय की रक्षा करना कठिन होता है।

छह काय में वायुकाय को छोड़कर 5 काय शरीर रूप में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। पृथ्वी, पानी, तेजस, वनस्पति और त्रस ये सब प्रत्यक्ष नज़र आते हैं। हम इनकी विराधना से अपने आपको बचा सकते हैं, पर वायुकाय प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होती, नज़र नहीं आती। नज़र नहीं आने के कारण विराधना से बचाव करना कठिन होता है। साथ ही वायुकाय के अलावा शेष 5 काय का स्व-पर-उभयकाय शस्त्र सब परस्पर में एक-दूसरे के होते हैं, पर वायुकाय का शस्त्र वायु ही होती है इसलिए भी वायुकाय की यतना करना कठिन होता है। उसी वायुकायिक जीवों की यतना करने में सहायक बनती है-मुखवस्त्रिका। मुखवस्त्रिका धारण करने से जीवों की रक्षा के साथ-साथ आत्म-गुणों की सुरक्षा होती है अर्थात् मुँहपत्ती धारण करने से परिणामों में शुद्धता आती है, निर्मलता की अनुभूति होती है। इसी से हमारे आत्म-गुण सुरक्षित होते हैं, संपोषित होते हैं। आगम-आधार से मुखवस्त्रिका का वर्णन अनेक स्थलों

पर देखने को मिलता है-

सर्वप्रथम पाँच अभिगम जो कि स्थानक में प्रवेश करने के नियम हैं, उनमें तीसरा अभिगम उत्तरासंग अर्थात् उत्तरीय वस्त्र धारण करने का विधान है, जो वर्तमान धारणा से मुँहपत्ती, मास्क, रूमाल आदि के रूप में प्रयुक्त होता है और इनके माध्यम से वायुकाय के जीवों की रक्षा की जाती है।

भगवतीसूत्र शतक 2 उद्देशक 5 में मुहपोत्तियं पडिलेहइ मुँहपत्ती की प्रतिलेखना करने की चर्चा इन्द्रभूति अनगार के प्रसङ्ग में आई है।

भगवतीसूत्र शतक 9 उद्देशक 33 में अट्टपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ अर्थात् आठ पट्ट वाले वस्त्र को मुँह पर बाँधता है। भगवतीसूत्र शतक 16 उद्देशक 2 में शक्रेन्द्र सावद्य और निरवद्य दोनों भाषा बोलता है। खुले मुँह बोली जाने वाली भाषा सावद्य भाषा है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 26वें अध्ययन की 23वीं गाथा में बताया है कि सर्वप्रथम प्रतिलेखना मुँहपत्ती की होती है। इन सभी आगम प्रमाणों से मुँहपत्ती जीवरक्षा और आत्म-गुणों की सुरक्षा का प्रमुख साधन सिद्ध होता है।

जैनधर्म की वर्तमान में मुख्य चार परम्पराएँ प्रचलित हैं-स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, तेरापंथ और दिगम्बर। इन चार परम्पराओं में स्थानकवासी और तेरापंथ समाज में मुख पर मुखवस्त्रिका बाँधने की परम्परा है और मूर्तिपूजक परम्परा में मुखवस्त्रिका को हाथ में रखने की प्रथा है, बोलते समय यतना के लिए मुख पर लगाने का विधान उनके यहाँ पर भी है। दिगम्बर परम्परा में तो सामायिक के लिए एक पाठ बोला जाता है और मुखवस्त्रिका का कोई विधान नहीं है।

मुखवस्त्रिका का माप (नाप) कितना होना चाहिए तो श्रुत परम्परा से मुखवस्त्रिका का प्रमाण 21 अंगुल लम्बाई और 16 अंगुल चौड़ाई के साथ 8 पट्ट युक्त होता है।

यहाँ पर यह बात ध्यान में लेने की है कि हर

व्यक्ति की मुँहपत्ती का प्रमाण अपनी-अपनी अंगुली प्रमाण होना चाहिए। चाहे छोटे हो या चाहे बड़े। सभी को अपने-अपने अंगुल प्रमाण से ही मुँहपत्ती का निर्माण करना चाहिए। लेकिन वर्तमान में ज्यादातर लोग एक ही नाप की मुँहपत्ती प्रयोग/उपयोग में लेते हैं। संसार में देखा जाता है शरीर पर धारण किये जाने वाले प्रत्येक कपड़े की नाप अपने-अपने आकार के अनुसार होती है, कहीं छोटा-बड़ा नहीं, सिर्फ धर्म के क्षेत्र में हमारी जागृति और जानकारी का अभाव होने के कारण हम साधन की शुद्धि नहीं कर पाते।

मुखवस्त्रिका जो कि 21 अंगुल लम्बी और 16 अंगुल चौड़ी होना प्रमाण बताया है उस 21 अंगुल को नापने हेतु अंगुल का ऊपरी भाग अर्थात् पहला पोर कपड़े पर रखकर ही मापना चाहिए। जिससे मुँहपत्ती प्रमाणोपेत बन सके।

मुँहपत्ती में 8 पट्ट होते हैं। उसे फोल्ड करने की भी एक विधि होती है। पहला फोल्ड लम्बाई के रूप में होता है और दूसरा तीसरा फोल्ड चौड़ाई के रूप में किया जाता है, जिससे 8 पट्ट का निर्माण हो जाता है।

मुँहपत्ती के साथ-साथ मुँहपत्ती बाँधने के लिए भी धागा उचित होना चाहिए। धागे का निर्माण इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे कि एक ही धागे को छोटे-बड़े किसी के भी उपयोग में लिया जा सके। एक ही धागे को छोटा-बड़ा बनाया जा सके।

अक्सर हम देखते हैं कि छोटे बच्चों को जब धागे की आवश्यकता होती है तो डोरे के बीच में गाँठ लगा दी जाती है, जिससे धागा छोटा तो हो जाता है पर वहीं जब बड़ों को उस धागे की आवश्यकता होती है तब गाँठ नहीं खुल पाने के कारण उस धागे को निरुपयोगी समझ व्यर्थ में फेंक दिया जाता है। कितना अनर्थदण्ड? एक धागे के निर्माण में कितना श्रम, कितनी मेहनत और कितनी प्रक्रिया पूर्ण होती है तब कहीं आपके हाथों में धागा आ पाता है और आपके एक छोटे से अविवेक के कारण धागा मजबूत और उपयोगी होते हुए भी व्यर्थ में फेंक दिया जाता है।

अभी वर्तमान में मास्क का प्रचलन बहुत बढ़ा है। पर हमारे यहाँ प्रारम्भ से मुँहपत्ती का विधान है। मुँहपत्ती और मास्क में अन्तर होता है—

मुँहपत्ती जीवरक्षा के लिए है, मास्क शरीर सुरक्षा के लिए है। मुँहपत्ती जिनशासन के लिए है, मास्क प्रशासन के लिए है। मुँहपत्ती में 8 पट्ट होते हैं, मास्क में 1-2 पट्ट होते हैं। मुँहपत्ती करुणा के लिए है, मास्क कोरोना से बचने के लिए है। इसलिए सामायिक में मास्क नहीं मुँहपत्ती लगायें। मुँहपत्ती लगाकर ही सामायिक करें।

मुखवस्त्रिका की शुद्धता पर भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। मुखवस्त्रिका इतनी गन्दी, मलिन एवं बेडोल नहीं हो कि जिससे जनता घृणा करने लग जाये।

कुछ बहनें मुखवस्त्रिका को गहना ही बनाकर रख देती हैं, गोटा लगाती हैं, सलमें से सजाती हैं, मोती जड़ती हैं, परन्तु ऐसा करना सामायिक के शान्त एवं ममता शून्य वातावरण को कलुषित करना है। अतः मुखवस्त्रिका सादा और शुद्ध होना आवश्यक है।

मुँहपत्ती का कपड़ा सफेद एवं सूती होना चाहिए। छपी हुई मुँहपत्ती हमारी विधि में नहीं है।

आज हमने 'मुँहपत्ती दिवस' के रूप में मुँहपत्ती का वास्तविक स्वरूप समझा। इस स्वरूप को सुनकर आप सभी को यह प्रण लेना है, यह संकल्प करना है कि सन्त-सतियों के सामने खुले मुँह बोलकर सावद्य भाषी नहीं बनेंगे, अपितु यतना के लिए मुँहपत्ती लगायेंगे।

आपके मुख पर होगी मुँहपत्ती।  
तो हमें नहीं होगी बात करने में आपत्ति।।

## विचारों को निर्मल रखने के लिए करें स्वाध्याय

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती प्राचार्य

मानव जीवन में विचारों का महत्त्व है। विचार मन को गतिशीलता प्रदान करते हैं। मन को अनिन्द्रिय कहा गया है। मन बहुत चञ्चल होता है। क्षण भर में मन की सोच के विचार कल्पना के पंख लगाकर कहीं भी पहुँच जाते हैं, क्योंकि मानव मन की सोच बहुआयामी है। विचारों का उद्भव हमारे मन में होता है। इस मन की सोच सभी के सामने पूरी तरह से दृष्टिगोचर नहीं होती, क्योंकि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अपने लिए निकटता का आभास कराने वाले व्यक्ति के मन के विचारों को भी हम नहीं समझ पाते।

सुप्रसिद्ध दार्शनिकों ने विचारों को दो रूपों में परिभाषित किया है। एक विचार जो पूर्वोपार्जित कर्मों के आधार पर व्यक्ति के अन्तर्मन में प्रकट होते हैं और तदनुसार व्यक्ति कार्य करता है। दूसरे प्रकार के वे विचार हैं जो लोगों की संगति से प्रभावित होकर हमारे मन में प्रवेश कर जाते हैं। इस तरह के विचार दो तरह से व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। यदि व्यक्ति को अच्छी

संगति मिल गई, तो उसका आचरण अच्छा बनता है और यदि कुसंगति में फँस गया तो अपने जीवन को दुःखमय बना लेता है, क्योंकि व्यक्ति को जैसे विचार मिलेंगे, मन उन्हें ग्रहण कर तदनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित होगा। अतः मन को नियन्त्रित करने के लिए आवश्यक है कि हम सत्संगति को महत्त्व दें तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए अनवरत जिनवाणी का स्वाध्याय करें। कहा गया है—

अपनी ही करनी का फल है, नेकी और बुराइयाँ।  
आपके ही साथ चलेंगी, आपकी परछाइयाँ।।

आप जैसे कर्म करेंगे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी। आपका कर्म आपके साथ है। कर्म का निर्धारण मन के शुभ-अशुभ परिणाम हैं। अतः मन को स्वच्छ और पवित्र बनाये रखने के लिए नियमित सत्संगति और स्वाध्याय की आदत डालनी चाहिए ताकि हमारा जीवन धर्ममय बना रहे। मन में निर्मल विचारों का ही प्रवाह बना रहे और हम श्रेष्ठ विचारों से अपने जीवन को आनन्दमय बनाकर मोक्ष पथ के पथिक बनने में समर्थ हो सकें।

—ए 27, नर्मदा विहार, सन्नावद

## ज्ञाता-द्रष्टा बनकर करें संयम की साधना

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा नेहरु पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, जोधपुर में 9 सितम्बर, 2021 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है।

-सम्पादक

### धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

संसार में हर प्राणी को सुख चाहिये। शाश्वत सुख की कामना में हर मानव प्रयत्नशील रहता है। सुख भी कई प्रकार के हैं। एक है-तन का सुख, तो दूसरा है मन का सुख और तीसरा है चेतन का सुख।

आज पर्वाधिराज पर्युषण का छठ्ठा दिवस है। इस दिवस को हम संयम-दिवस कह सकते हैं। शास्त्रकारों ने 'संयमः खलु जीवनम्' कहा है। संयम साधकों को आनन्द देता है, सुख और शान्ति की अनुभूति कराता है।

संयम के भेद-प्रभेदों की बात करें तो मन का संयम प्रमुख है। जिनका मन चञ्चल है और मन वश में नहीं रहता वे मनोविजेता कैसे हो सकते हैं? ज्ञानियों ने ठीक ही कहा है कि जिसने एक को जीत लिया, कहना होगा उसने पाँच को जीत लिया।

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।

दसहा उ जिणिताणं, सब्वसत्तू जिणामहं।।

जिसने मन को जीत लिया उसने चारों कषायों को भी जीत लिया और जिसने मन और चारों कषायों को जीत लिया, उसने पाँचों इन्द्रियों को भी जीत लिया। मन को जीतने वाला चारों कषायों और पाँचों इन्द्रियों को जीत सकता है। कहा भी है-

अप्या चेव दमेयव्वो, अप्या हु खलु दुइमो।

अप्या दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।

अर्थात् स्वयं का दमन करने वाला इस लोक

में सुखी होता है, तो परलोक में भी उसे सुख ही मिलता है। यहाँ स्वयं का दमन करने में मन का दमन शामिल है। मन को जीतना कठिन है। मुनि जीवन में मन-विजय के कारण से सन्त सुखी हैं।

एक व्यक्ति गुरुदेव (आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा.) के पास आया और बोला-“बाबजी! यह मन तो वश में नहीं होता। मन बड़ा अशान्त रहता है, यह अधिक चञ्चल है इसे शान्त कैसे करना चाहिये?”

गुरु भगवन्त फरमाते हैं-“श्रुत की रस्सी से मन रूपी अश्व को वश में किया जा सकता है। मन प्रायः बदलता रहता है, इसीलिये मन को चञ्चल घोड़े से अधिक चञ्चल कहा गया है।” मन के लिए एक दोहा तो जग जाहिर है-

मन लोभी, मन लालची, मन कपटी मन चोर।  
मन के मते न चालिये, पलक-पलक मन ओर।।

आपने यह दोहा कई बार सुना होगा। इसका अर्थ भी आपको ध्यान में होगा। हमारी जो आत्मा है एक अर्थ में वही श्रुत है। मतलब हुआ आत्म-उपयोग में प्रतिष्ठित होने से मन वश में किया जा सकता है। मतलब, मन को वश में करने का उपाय है-ज्ञाताद्रष्टा बन जाना।

मन को जानने का अर्थ है-मन के बहाव में नहीं बहना। यहाँ, आपको ज्ञात होना चाहिये कि मन भी दो तरह का है। एक है-द्रव्य मन तो दूसरा है-भाव मन।



आप में कई स्वाध्यायी हैं और वे बोल-थोकड़ों के जानकार भी हैं। वे जानते हैं कि भाव मन 12वें गुणस्थान तक रहता है। अब देखिये, पाँच इन्द्रियों के विषय में 11वें, 12वें गुणस्थान में राग-द्वेष नहीं होने के कारण कर्मबन्ध नहीं होते इसलिये निष्कर्ष यह है कि कर्मबन्ध का कारण है राग और द्वेष।

आप जानते हैं-बन्ध के चार भेद हैं। वे हैं-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। दो योग के कारण बँधते हैं तो दो कषाय के कारण। स्थिति और अनुभाग के कारण कषाय हैं तो प्रकृति और प्रदेश ये दो योग के कारण बँधते हैं। राग और द्वेष की मलिनता से मन अशान्त होता है। मन जब कषायों के साथ जुड़ जाता है तो मन अशान्त होता ही है।

आप देखें कि हम सन्तों के भी इन्द्रियाँ हैं। आपने पाँच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार सुने हैं। इनमें सन्त न राग करता है, न द्वेष, इसलिये उसके इन्द्रियाँ हैं तो भी अशुभ कर्म नहीं बन्धते हैं।

निर्ग्रन्थ बनने का उपाय है-ज्ञाताद्रष्टा बन जाओ। सन्त जीवन में ज्ञाताद्रष्टा बनकर देखते रहने से पाप-कर्म का बन्ध नहीं होता। सातवीं नरक में महाकृष्ण लेश्या है तो भी सम्यग्दृष्टि आत्मा ज्ञायक को ज्ञेय बनाता है। वहाँ वह मन को आत्मा से भिन्न समझता है। अतः वहाँ पर मन ज्ञाताद्रष्टा के उपयोग का विषय बन जायेगा।

मन के विचारों को अरहट की उपमा से उपमित किया गया है। एक घुड़सवार को अपने घोड़े को पानी पिलाना था। वह घोड़े को लेकर अरहट के समीप पहुँचा। अरहट चलता है तो खट.....खट ...खट की आवाज़ आती ही है। अरहट चलता है तो पानी निकलता है और अरहट की आवाज़ से घोड़ा चमक कर पानी नहीं पीता।

घुड़सवार ने कहा-भाई! मेरा घोड़ा अरहट की आवाज़ से चमकता है, इसलिये यह आवाज़ बन्द कर दे। अरहट की आवाज़ ज्यों ही बन्द हुई तो

पानी निकलना भी बन्द हो गया। घोड़ा पहले तो चमकता था अब पानी नहीं आने से भी वह प्यासा का प्यासा रहा।

यही स्थिति मन की है। मन की चञ्चलता में ही धर्म और पुण्य के काम करने होंगे। आप स्वयं को ज्ञाताद्रष्टा बनाकर रखें तो मन की शान्ति बनी रहेगी। यह भगवान की बतायी विधि है। आप आसक्ति को भी ज्ञाताद्रष्टा बनकर देखें। आपकी तो क्या कहूँ, शासनपति श्रमण भगवान महावीर ने 12½ वर्ष तक यही साधना की थी।

कर्म काटने का प्रमुख साधन है-ज्ञाताद्रष्टा बनकर आप प्रतिक्रिया करने से बचें। आप जानते हैं-एक्शन का रि-एक्शन होता ही है। इसलिये आप न किसी को अच्छा कहें और न बुरा ही। हर स्थिति-परिस्थिति में ज्ञाताद्रष्टा बनकर रहने वाला अर्थात् समता में स्थित जीव कर्मबन्ध नहीं करता। समता में रहने पर न राग होगा और न ही द्वेष।

अज्ञान और अन्धकार का भाव भी ज्ञाताद्रष्टा के भाव से चला जाता है। आपने शायद सुना होगा कि एक सिंह का बच्चा भेड़ों के झुण्ड के बीच आ गया। वह भेड़ों के साथ रहता और दूध भी भेड़ का पीता। धीरे-धीरे वह शेर का बच्चा बड़ा हुआ तो भी वह भेड़ों के झुण्ड में रहकर खुश रहता। यदि उसे अपनी पहिचान हो जाय तो क्या वह शेर का बच्चा भेड़ों के झुण्ड में रहेगा? पहिचान होने पर वह भेड़ों के झुण्ड में कतई नहीं रहेगा। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने भजन में कहा है-

समझो चेतन जी अपना रूप,

यो अवसर मत हारो।।टेर।।

ज्ञान दरस-मय रूप तिहारो

अस्थि मांसमय, देह न थारो।

दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो।।

आचार्य भगवन्त ने ठीक ही कहा है कि यह जीव भूला हुआ है। उसे अपनी पहिचान हो जाय तो

वह अपने शुद्ध स्वरूप में जरूर आ जायेगा। इसीलिये कहा है-अपने स्वरूप में चरण बढ़ाना ही चारित्र है।

कर्मों का छुटकारा कैसे होगा? राग-द्वेष के त्याग से कर्म बन्धन टूट सकते हैं, अतः ज्ञाताद्रष्टा भाव में आत्मा के मूल गुण जो ज्ञान और दर्शन हैं यही खज़ाने की चाबी है। इस चाबी से हम आत्मा के अनन्त गुणों को प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान के उपदेश का सार है-ज्ञाताद्रष्टा

बनना, समता में रहना। आप ज्ञाताद्रष्टा बनकर साधना करेंगे तो मन शान्त होता जायेगा। आप सोचें तो इतना ही सोचें-अच्छा हुआ या बुरा, जो होना था वह हो गया। हे जीव! तू राग-द्वेष में क्यों जाता है, जबकि वीतरागता से ही आनन्द आता है।

आप संयम-दिवस पर ज्ञाताद्रष्टा बनकर राग-द्वेष से नहीं जुड़ें तो सुख-शान्ति और आनन्द पा सकेंगे।

## जिनवाणी लेखक-सम्मान- समारोह पर अभिव्यक्तियाँ

(1)

17 जुलाई, 2022 को जयपुर में जिनवाणी लेखक सम्मान समारोह उद्देश्यपूर्ण, प्रेरणादायी और सवाया सफल रहा। इसके लिए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था (साँगानेर-प्रतापनगर, जयपुर) तथा प्रत्यक्ष-परोक्ष जुड़ी सभी संस्थाएँ और महानुभाव बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं।

मेरा अनेक पत्र-पत्रिकाओं से सुदीर्घ जुड़ाव है। जिनमें जैन, हिन्दी साहित्य और अन्य प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ हैं। मेरी जानकारी के अनुसार सैकड़ों जैन पत्रिकाओं में केवल *जिनवाणी* ही है, जिसके लेखकों को इतनी श्रेणियों में पुरस्कृत किया जाता है।

*जिनवाणी* में वैचारिक स्वतन्त्रता तथा स्वतन्त्र वैचारिकता का अनेकान्तमय निर्झर प्रवाहित होता है। इसकी अपनी सुलझी हुई रचनात्मक रीति-नीति है। गैर-जरूरी आग्रह नहीं है। गुणवत्ता, स्तरीयता और मौलिकता का सहज सम्मान है।

*जिनवाणी* का विभिन्न रुचियों वाला विशाल पाठक वर्ग है। *जिनवाणी* अपने पाठकों की रुचि परिष्कृत करती है और उसे समृद्ध एवं रचनात्मक बनाती है। *जिनवाणी* नये लेखक बनाती है और लेखकों को

श्रेष्ठतर नवसृजन की प्रेरणा देती है। एक संघ की पत्रिका होने के बावजूद इसका संघातीत स्वरूप सभी संघों और सम्प्रदायों के प्रबुद्ध पाठकों को आकर्षित और अनुप्रेरित करता है।

यह सर्वविदित है कि *जिनवाणी* तथा *जिनवाणी* संरक्षक रत्नसंघ में विद्या और विद्वानों का, ज्ञान और ज्ञान के उपासकों का सदैव विशेष सम्मान होता रहा है। सम्मान की इस शृङ्खला में यादगार जिनवाणी लेखक सम्मान समारोह भी जुड़ गया। पुनः हार्दिक आभार!

-डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

(2)

*जिनवाणी* पत्रिका से जुड़े सभी कमेटी के सदस्य एवं पाठकों को मेरा प्रणाम।

*जिनवाणी पत्रिका* के लेखक सम्मान समारोह में सपरिवार सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। यह समारोह मेरे जीवन का पहला अवसर था, जिसमें लेखकों को पत्रिका द्वारा सम्मानित किया जाता है। उनके व्यक्तिगत विचारों को रखने का अवसर दिया जाता है बहुत प्रशंसनीय कार्य है। मैं पत्रिका के सभी सदस्यों के इस कार्य की सराहना करती हूँ, सभी को साधुवाद।

-डॉ. दर्शना जैन धर्मपत्नी डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन,  
प्राकृत अध्ययन शोध केन्द्र, केन्द्रीय संस्कृत  
विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर (राज.) 302018

## त्रिपिटक में उपलब्ध कतिपय जैनधर्म के सन्दर्भ

प्रो. धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र

धार्मिक उत्क्रान्ति के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है—ईसा पूर्व छठी शताब्दी, जिसमें विश्व के अधिकांश देशों में धार्मिक गुरुओं का आविर्भाव हुआ। इसी काल खण्ड में ही भारतभूमि पर भी दो महापुरुषों ने जन्म लेकर अपने-अपने ज्ञान और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। वे महापुरुष विशेष हैं—तीर्थङ्कर महावीर और तथागत गौतम बुद्ध।

ज्ञातृवंशी महावीर स्वामी जैन धर्म के अन्तिम 24वें तीर्थङ्कर हैं जिन्हें विरासत में पूर्व प्रचलित जैन धर्म उपलब्ध था, जबकि शाक्यवंशी सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने एक नये धर्म का प्रवर्तन किया जो मध्यममार्ग से प्रख्यात हुआ।

अधिकतर ऐतिहासिक विद्वान इन दोनों को एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी के रूप में देखते हैं, कारण कि महावीर स्वामी की वाणी में अथवा जैन आगम ग्रन्थों में बुद्ध तथा उनके अनुयायियों का यत्किञ्चित् भी उल्लेख नहीं मिलता जबकि समकालीन होते हुए भी दोनों ने अनेक बार एक ही ग्राम एवं नगर में पृथक्-पृथक् स्थलों में अपना-अपना चातुर्मास किया और अपने अनुयायियों तथा उपासकों को सम्बोधित भी किया, परन्तु दोनों परस्पर में कभी भी नहीं मिले। हाँ, दोनों के कुछ एक शिष्य एवं उपासक-सद्गृहस्थों ने अवश्य ही एक-दूसरे के धर्म को सहजतया अपनाया, ग्रहण किया, जिसके विविध सन्दर्भ एवं उल्लेख त्रिपिटक में विशेषतः निकायग्रन्थों में तथा उनके टीकाग्रन्थों (अट्टकथाओं) में संगृहीत मिलते हैं, जिन्हें उजागर करना प्रस्तुत आलेख का विवेच्य विषय है।

त्रिपिटक में निगण्ठा और निगण्ठनातपुत्त ये दो शब्द बहुलतया प्रयुक्त मिलते हैं। स्वतन्त्र रूप में

उल्लिखित निगण्ठ पद जैन श्रावक तथा जैन साधु-सन्त के लिए आता है जबकि संयुक्त रूप में प्रयुक्त निगण्ठनातपुत्त ज्ञातृवंशी भगवान वर्धमान स्वामी का सम्बोधक है।

त्रिपिटक में तीर्थङ्कर महावीर स्वामी को सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, भूत-भविष्य एवं वर्तमान के समस्त पदार्थों, धर्म-कर्मों का ज्ञाता बतलाया गया है। बुद्धवचनों विशेषकर अंगुत्तरनिकाय में आता भी है कि निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र अपने को अनन्त ज्ञान-दर्शन-सुख एवं वीर्य सम्पन्न कहते हैं, वे अनन्त लोक को जानते और देखते हुए विहार करते हैं—अयं पि भो गौतम! निगण्ठो नाटपुत्तो सब्बन्नू सब्बदस्सावी अपरिसेसं जाणदस्सनं पटिजानाति चरतो च तिद्वतो च सुतस्स जागरतो च सततं समितं जाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं ति। सो एवमाह-अहं अनन्तेन जाणेन अनन्तं लोकं जातं पस्सं विहरतीति।<sup>1</sup>

यहाँ एक अन्य प्रसङ्ग दुःखनिर्जरावाद में आता है कि महावीर विशुद्धि का जैसा मार्ग बतलाते हैं वह इस प्रकार है—तपस्या द्वारा पुराने कर्म नष्ट हो जाते हैं और प्रज्ञा से नये कर्म नहीं होते, इस तरह कर्मक्षय से दुःखक्षय, दुःखक्षय से वेदनाक्षय और वेदनाक्षय से सभी दुःख जीर्ण (नष्ट) हो जाते हैं। इस प्रकार सान्द्रष्टिक निर्जरा से विशुद्धि लाभ हो जाता है। ऐसा ही तथागत बुद्ध भी मानते हैं -

सो पुराणं कम्मनं तपसा व्यन्तीभावं पजायं ति नवानं कम्मनं अकरणा सेतुधातं। इति कम्मक्खया दुक्खक्खयो, दुक्खक्खया वेदनाक्खयो, वेदनाक्खया सव्वं दुक्खं निज्जरणं भविस्सति। एवमेतस्सा सन्दिट्टिकाय निज्जराय विसुद्धिया

समतिक्कमो होति, इध भन्ते, भगवा किमाहा ति।<sup>1</sup>

मज्झिमनिकाय के चूलदुक्खक्खन्धसुत्त में कुछ निर्ग्रन्थों ने बुद्ध को बतलाया कि सुख से सुख की उपलब्धि नहीं होती, दुःख से सुख की प्राप्ति होती है। यदि सुख से सुख मिलता होता तो राजा को सबसे अधिक सुख मिलना चाहिए था—न खो आवुसो गोतम, सुखेन सुखं अधिगन्तब्बं, दुक्खेन खो सुखं अधिगन्तब्बं, सुखेन, चावुसो गोतम, सुखं अभविस्सं, राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो सुखं अधिगच्छेय्य, राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो सुखविहारितरो आयस्मता गोतमेनाति।<sup>3</sup>

बुद्ध ने कहा—राजा यथार्थ में सुखी नहीं है। उसके जो सुख दिखलायी देते हैं वे सब बाह्य साधनों पर आधारित हैं, जो नश्वर हैं। यदि राजा को एकान्त में स्थित किसी कमरे में बन्द हो कर रहना पड़े तो वह व्याकुल हो जायेगा। इसके विपरीत एक अभ्यासी योगी साधक भिक्षु अनेक दिनों तक वहाँ बन्द कमरे में पड़ा रह सकता है और वह अपने अन्तरंग हृदय में फूटने वाले सुख के स्रोत में आनन्द उठाता रहेगा। अतः आन्तरिक (लोकोत्तर) सुख ही सुख है, बाह्य लौकिक सुख, सुख नहीं। अतः योगावचर साधक भिक्षु और साधु को सच्चा सुख है, राजा को नहीं।<sup>3,4</sup>

अगुत्तरनिकाय के तीसरे भाग में दसवाँ उपोसथसुत्त है जिसमें महावीर प्राणियों को किस प्रकार का उपोसथ बतलाते हैं यह वर्णित है जैसे कि—

‘अरे अज्ञानी जन’ जो पूर्वदिशा में सौ योजन तक प्राणी हैं उनमें दण्ड धारण करो अर्थात् उन्हें न मारने (हिंसा न करने) की भावना (प्रणिधान) करो, ऐसे ही पश्चिम दिशावर्ती, उत्तरदिशावर्ती एवं दक्षिण दिशावर्ती प्राणियों के विषय में भी अहिंसा की भावना रखो। इस प्रकार कुछ प्राणियों में वे (नाथपुत्र) अनुदया तथा अनुकम्पा का उपदेश करते हैं तो कुछ पर दया, अनुकम्पा नहीं करते।<sup>4</sup>

मज्झिमनिकाय के उपालिसुत्त में दीघतपस्वी

का जिक्र मिलता है जो बतलाता है कि निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र कर्म—कर्म और दण्ड—दण्ड का उपदेश देते हैं। तब प्रश्न होता है कि मनोदण्ड कितने प्रकार का होता है? निर्ग्रन्थ तीन प्रकार के दण्ड बतलाते हैं—कायदण्ड, वचनदण्ड और मनोदण्ड। इन तीनों से पापकर्म में प्रवृत्ति होती है। तीनों दण्ड भिन्न—भिन्न हैं और इनमें कायदण्ड श्रेष्ठ है कारण कि इससे ही गुरुतर पापकर्म उपार्जित होता है।<sup>5</sup>

महावीर और बुद्ध दोनों समकालीन होने से यह अतिस्वाभाविक है कि दोनों के श्रद्धालु एक—दूसरे के उपदेश को सुनने, ग्रहण करने उनके समोसरण में पहुँचते थे और तत्त्वचर्चा मनोज्ञ लगने पर वे उनके उपासक बन जाते थे। जैसे —

(क) जैन से बौद्ध

1. सीह सेनापति जैन श्रावक था जिसने बुद्ध की बहुत प्रशंसा सुन रखी थी, उसने अनेक बार अपने गुरु निर्ग्रन्थ महावीर से बुद्ध के पास जाने की, उन्हें देखने की अनुमति माँगी थी, किन्तु ज्ञातपुत्र ने ‘बुद्ध अक्रियावादी है’ कह कर टाल दिया था। अन्ततोगत्वा वह अनुमति के बिना ही बुद्ध के पास चला गया। उसने बुद्ध को सारी घटना सुना दी। बुद्ध ने उसे समझाया कि मैं तो धर्मपरिणय को परिणय से अच्छी तरह समझाता हूँ और श्रावकों को विनय में नियुक्त करता हूँ। सीह सेनापति को बुद्धवचन अच्छे लग जाते हैं और वह उनका उपासक बन जाता है।<sup>6</sup>
2. अभय राजकुमार जैन श्रावक था। वह एक समय बुद्ध की धर्मसभा में पहुँच गया और उसने बुद्ध के विषय में जो सुना था वह उन्हें बतला दिया कि श्रमण गौतम जो वाणी दूसरों को बोलते हैं, वह अप्रिय और मन को बुरी लगने वाली होती है। उनके पुनः पूछने पर भी अभय का यही कहना था। अभय अपने घर चला गया। गौतम बुद्ध ने राजकुमार के अभिप्राय को समझ लिया। बुद्ध अगले दिन सुबह—सुबह राजकुमार के निवास पर

पहुँच गए। राजकुमार ने उनका आतिथ्य सत्कार किया। पुनः राजकुमार से उक्त बात पूछी। राजकुमार ने वैसा ही बतलाया। तब बुद्ध ने कहा कि निर्ग्रन्थों ने ठीक से नहीं सुना, यह एकांशिक सत्य है। तथागत वैसा अप्रिय वचन नहीं बोलते जो दूसरों को बुरा लगे, अच्छा न लगे। तत्त्वचर्चा के अन्त में बुद्ध से प्रसन्न हो कर अभय राजकुमार बौद्ध उपासक बन जाता है।<sup>7</sup>

3. दीघनिकाय के आठवें महासीहनादसुत्त में अचेलकस्सप की चर्चा मिलती है। अचेलकस्सप जैन निर्ग्रन्थ साधु था। उसने बुद्ध के पास जाकर पूछा कि क्या बुद्ध सभी तपश्चर्याओं तथा उनकी कठोरताओं को ठीक नहीं समझते। बुद्ध ने कहा सभी को ऐसा नहीं समझता कारण कि कुछ तपस्वी स्वर्ग जाते हैं तो कुछ नरक गामी होते हैं। अतः मैं सभी तपस्याओं की निन्दा नहीं करता।

अचेलकस्सप ने कहा कि नग्न रहना, अपनी निर्धारित सीमा में रहकर भिक्षा ग्रहण करना, भिन्न-भिन्न अवधि वाले लम्बे-लम्बे व्रत-उपवासों को करना, गर्भवती स्त्री से तथा दूध पिलाती हुई स्त्री के हाथ से भोजन ग्रहण नहीं करना, उद्विष्ट भोजन नहीं करना, अरुचिकर वस्त्र पहनना, उकड़ू बैठना और व्रत धारण करना इत्यादि कठिन तपस्याओं अथवा साधनाओं का भी समुचित आदर है। ये भी ठीक साधनाएँ हैं।

बुद्ध ने कहा कि ये सभी बाह्य साधनाएँ हैं, थोड़े अभ्यासमात्र से कोई भी इन्हें कर सकता है। इनका आध्यात्मिक महत्त्व कुछ भी नहीं है। श्रमणत्व अथवा ब्राह्मणत्व का वास्तविक अभिप्राय है-चित्तविशुद्धि और वैर तथा द्रोह से रहित होकर मैत्रीभावना को स्थापित करना। शील, समाधि (चित्त) एवं प्रज्ञा ही सब कुछ है, जिनकी प्राप्ति आर्य अष्टांगिकमार्ग पर चल कर होती है। आर्य-अष्टांगिक मार्ग ही सब कुछ है, अन्य दूसरा मार्ग नहीं। अचेलकस्सप बुद्धवचन सुनकर उनसे अधिक

प्रभावित हुआ और वह बौद्ध भिक्षु बन गया।<sup>8</sup>

4. सच्चक का पिता निर्ग्रन्थ श्रावक था और सच्चक एक बड़ा तार्किक विद्वान् था, किन्तु उसे अभिमान था कि मैं ऐसे किसी श्रमण एवं ब्राह्मण को नहीं देखता जो मेरे सामने खड़ा रह सके तथा घबराहट में उसकी काँख से पसीना न छूट जाय और तो और यदि मैं खम्भे से भी बात करूँ तो वह भी काँपने लगता है, मनुष्य का तो कहना ही क्या? किसी समय वह बुद्ध के पास पहुँच गया, वह उनके सिद्धान्तों एवं वचनों का खण्डन करने लगा, तब बुद्ध ने उससे शास्त्रार्थ किया। वह बुद्ध से हार गया। बुद्ध ने उसे सद्धर्म एवं सन्मार्ग की देशना दी। उन्होंने सच्चक को काय एवं चित्तभावना का अभ्यास करने पर बल दिया। बुद्ध के वचन सुनकर सच्चक की समस्त शंकाएँ नष्ट हो गयी और उसने तथागत बुद्ध में अपनी सच्ची श्रद्धा व्यक्त की। वह उनका उपासक बन गया।<sup>9</sup>

5. संयुक्त निकाय में आता है कि ग्रामवासी असिबन्धकपुत्र निर्ग्रन्थ श्रावक था। वह किसी समय बुद्ध की प्रशंसा सुन उनके पास पहुँच गया। बुद्ध ने उससे पूछा निर्ग्रन्थनातपुत्र अपने श्रावकों को किस प्रकार के धर्म का उपदेश देते हैं और विनय में नियुक्त करते हैं। तब ग्रामीण असिबन्धक ने बतलाया कि निगण्ठनातपुत्र 'जीवों को नहीं मारना, झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, मैथुन नहीं करना तथा वस्तुओं का अधिक संग्रह नहीं करना' आदि का उपदेश देकर विनय में मानवों को स्थिर करते हैं। बुद्ध ने कहा मैं भी ऐसे ही धर्म का उपदेश करता हूँ। प्राणियों को इन दुष्कर्मों से सदैव दूर रहना चाहिए।<sup>10</sup>

#### (ख) बौद्ध से जैन

1. उक्त सुत्त के 8वें निगण्ठनातपुत्तसुत्त में आता है कि बौद्ध उपासक चित्तगृहपति किसी समय निगण्ठनातपुत्त के पास पहुँचा। तब कुशलक्षेम

पूछने के उपरान्त महावीर ने चित्तगृहपति से पूछा- गृहपति तुम श्रमण गौतम में श्रद्धा रखते हो, हाँ भगवन्! रखता हूँ। तब तुम यह बतलाओ कि समाधि क्या अवितर्क-अविचार है अथवा वितर्क विचारों का निरोध है। चित्तगृहपति बोला - नहीं भगवन्! तदनन्तर महावीर ने उसे समाधि एवं ध्यान-योग साधना पद्धति को स्पष्ट कर समझाया। चित्तगृहपति महावीर की इस देशना से बहुत प्रसन्न हुआ और निर्ग्रन्थ श्रावक बन गया।<sup>11</sup>

2. अंगुत्तरनिकाय में उल्लेख मिलता है कि एक समय प्रमुख एवं प्रौढ़ शिष्य आनन्द गौतम बुद्ध के पास ही बैठे थे तभी उन्होंने तथागत बुद्ध को बतलाया कि पूरणकश्यप ने प्राणी जगत् को छह अभिजातियों में बाँटा है, वे अभिजातियाँ हैं-कण्हाभिजाति (कृष्णाभिजाति), नीलाभिजाति, लोहिताभिजाति (तेजसाभिजाति), हलिद्वाभिजाति (पीताभिजाति), सुक्काभिजाति (शुक्लाभिजाति) और सुक्कसुक्काभिजाति (शुक्लशुक्लाभिजाति)।

(1) लोहिताभिजाति के निर्ग्रन्थ एक शाटिक अर्थात् एक वस्त्रधारी थे-तत्रिदं, भन्ते, पूरणेन कस्सपेन लोहिताभिजाति पञ्जता, निगण्ठा एक साटिका।<sup>12</sup>

(2) हरिद्राभिजाति के गृहस्थ धवलवस्त्रधारी अचेल श्रावक थे।<sup>13</sup>

उपर्युक्त एक शाटक एवं धवलवस्त्रधारी दोनों पद स्पष्ट रूप से महावीर से पूर्ववर्ती अथवा उनसे भिन्न निर्ग्रन्थों अर्थात् श्वेताम्बर साधु-सन्तों के आविर्भाव को दर्शाते हैं।

3. अंगुत्तरनिकाय में एक वप्पसुत्त मिलता है, जो वप्पशाक्य को निर्ग्रन्थ श्रावक बतलाता है। ये वप्पशाक्य और कोई नहीं, सिद्धार्थ गौतम बुद्ध के चाचाश्री थे जिनके पास बुद्ध शिष्य मोग्गल्लान

मिलने पहुँचा था-अथ खो वप्पसक्को निगण्ठसावगो, येनायस्मा महामोग्गल्लानो तेनुपसंकमि।<sup>14</sup>

यहाँ दो तथ्य सामने उपस्थित होते हैं, इनमें से एक यह है कि गौतम सिद्धार्थ के बुद्ध बनने से पहिले पृथ्वी पर एक अन्य सशक्त श्रमण निर्ग्रन्थ धर्म प्रचलित था। दूसरे, सिद्धार्थ गौतम ने उक्त निर्ग्रन्थ धर्म में भागवती दीक्षा संन्यास धारण की थी जैसे कि बुद्ध स्वयं कहते भी हैं कि 'मैं नग्न रहता था, केशलुंचन करता था, हथेली पर भिक्षा लेकर खाता था, निमन्त्रण स्वीकार नहीं करता था, कभी एक दिन तो कभी दो दिन छोड़कर भोजन करता था, कभी-कभी सप्ताह एवं पखवाड़े में एक दिन खाता था। अनेक वर्षों की धूलि से मेरे शरीर पर मैल की पर्त जम गयी थी। कृशकाय हुआ मैं बड़ी सावधानी से आता जाता था, पानी की बूँदों के प्रति भी मेरी तीव्र दया रहती थी'।<sup>15</sup>

निश्चित ही उक्त चर्या निर्ग्रन्थों की तपसाधना पद्धति है जिसे कुछ समय तक बुद्ध ने अपनाया था। ख्यातिलब्ध दिगम्बराचार्य देवसेन (8वीं शती) ने स्पष्ट लिखा है कि जैन श्रमण पिहितास्रव ने सरयूनाथ स्वामी के तट पर पलाश नामक ग्राम में भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी के संघ में सिद्धार्थ गौतम को दीक्षित किया था, उस समय उनका नाम बुद्धकीर्ति था -

सिरिपासणाहत्तित्थे सरयूतीरे पलासणयरत्थो।  
पिहितासवस्स सिस्सो महासुदो वड्ढकित्तिमुणी।।<sup>16</sup>

त्रिपिटक में बुद्ध ने उक्त जैन तप-ध्यान साधना को 'अत्तकिलमथानुयोगो बतलाया है और भी जैसे कि-महावस्तु के अनुसार एक समय बुद्ध श्रावस्ती में विहार कर रहे थे। उन्होंने भिक्षुओं को सम्बोधित किया- भिक्षुओं मैं प्रव्रजित हो वैशाली गया, वहाँ आराडकलाम तीन सौ शिष्यों के साथ साधनारत थे। उन्होंने अपने जिन-श्रावकों को सिखाया कि त्याग करो, त्याग करो। जिन-श्रावक उत्तर में कहते हैं - हम त्याग करते हैं, हम

त्याग करते हैं।

गौतम ने उन्हें कहा-मैं भी आपका शिष्य बनना चाहता हूँ। जैसा तुम चाहो वैसा करो। गौतम शिष्य बनकर वहाँ रहने लगे। जो सिखलाया गया, मैंने सीखा। वे मेरी प्रखर बुद्धि से प्रभावित हुए। सभी को उन्होंने कहा-जो मैं जानता हूँ, वही यह गौतम भी जानता है। अच्छा हो, गौतम और मैं दोनों मिलकर संघ का सञ्चालन करें। इस प्रकार आराडकलाम ने मेरा सम्मान किया।

बुद्ध कहते हैं-मुझे अनुभव हुआ कि मात्र इतना ज्ञान पापनाश के लिए पर्याप्त नहीं। मुझे और गवेषणा करनी चाहिए, यह विचार कर मैं वहाँ से राजगृह चला गया। वहाँ पर अपने सात सौ शिष्यों के साथ उद्दक रामपुत्र साधना में लीन रहते थे। ये भी अपने जिन-श्रावकों को वैसी ही शिक्षा देते थे। मैं (बुद्ध) उनका भी शिष्य बना। उनसे भी बहुत कुछ सीखा और सम्मान भी पाया, किन्तु मुझे अनुभव हुआ कि इतना ज्ञान भी पापक्षय के लिए पर्याप्त नहीं है, मुझे और खोज करनी चाहिए, यह सोचकर मैं वहाँ से भी आगे चल पड़ा।<sup>17</sup>

उपर्युक्त प्रसङ्ग में समागत जिनश्रावक पद दर्शाता है कि आराडकलाम तथा उद्दकरामपुत्र दोनों निर्ग्रन्थ धर्म के पालन करने वाले जैन साधक थे। उनके अनुयायी भी जैन उपासक थे। सिद्धार्थ गौतम ने इन निर्ग्रन्थ गुरुओं के साथ-साथ रहकर निर्ग्रन्थधर्म का आचरण किया था तथा बहुत-सी शिक्षाओं को बाद में अपने धर्म में उन्होंने अपनाया भी।

दीघनिकाय के सामञ्जसफलसुत्त में एक अन्य प्रसंग में तत्कालीन मगधनरेश अजातशत्रु तीर्थङ्कर महावीर के साथ हुई अपनी तत्त्वचर्चा को तथागत बुद्ध को बतलाते हुए कहते हैं कि भन्ते! मैं निगण्ठनातपुत्त के पास भी गया और उनसे भी सांद्ष्टिक श्रामण्यफल के सन्दर्भ में पूछा। उन्होंने मुझे चातुर्याम संवर बतलाया। उन्होंने कहा-निर्ग्रन्थ चार संवरों से संवृत रहता है, वे चार संवर हैं-जल के व्यवहार का वर्जन अर्थात् जिससे

जल के जीव न मरें, सभी पापों का वर्जन, सभी पापों के वर्जन से धुतपाप होना और सभी पापों के वर्जन में लाभ रहना। इस तरह निर्ग्रन्थ गतात्मा, यतात्मा और स्थिरात्मा कहलाता है-एवं वुत्ते, निगण्ठो नाटपुत्तो मं एतदवोच-इध महाराज, निगण्ठो चातुर्यामसंवरसंवुत्तो होति। कथं च महाराज, निगण्ठो चातुर्यामसंवरसंवुत्तो होति? इध, महाराज, निगण्ठो सब्बारियुतो च होति, सब्बारियुतो च, सब्बारिधुतो च, सब्बारिफुटो च। एवं खो महाराज, निगण्ठो चातुर्यामसंवरसंवुत्तो होति। यतो खो महाराज, निगण्ठो एवं चातुर्यामसंवरसंवुत्तो होति; अयं वुच्चति महाराज, निगण्ठो गतत्तो च यतत्तो च ठितत्तो चा ति।<sup>18</sup>

मानवमात्र का यह स्वभाव है कि जो बात या वस्तु उसे अच्छी लगती है वह उसे तुरन्त ग्रहण करने की चेष्टा करता है बल्कि वह उसे ग्रहण कर ही लेता है, चाहे वह धर्म अथवा सम्प्रदाय ही क्यों न हो, इसे आज भी देखा जा सकता है, इसे रोका भी नहीं जा सकता किन्तु उपर्युक्त कतिपय त्रिपिटक में उद्धृत निर्ग्रन्थ धर्म विषयक सन्दर्भों से स्पष्ट हो जाता है कि बुद्ध से पूर्व इस धरा पर श्रमण (जिन) संस्कृति एवं धर्म विद्यमान था जिसकी जड़ें अधिक गहरी थीं।

यह भी सच है कि जैन आज भी जल का विशुद्ध प्रयोग करते हैं, जीवहिंसा का वारण करते हैं, जीवों के प्रति मैत्री भावना से ओतप्रोत रहते हैं, किन्तु त्रिपिटक में वर्णित चातुर्यामसंवर जैनागमों से थोड़ा-सा भी नहीं मिलता। निर्ग्रन्थ महावीर से लगभग 300 वर्ष पूर्व आविर्भूत 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अपने शिष्यों एवं अनुयायियों को अहिंसा, सत्य, अचौर्य एवं अपरिग्रह रूप चतुर्विध संवर की शिक्षा दी थी जिसे बुद्ध ने भी कुछ समय तक अपने जीवन में उतारा था। श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने पार्श्वनाथ के उक्त चातुर्याम संवर में ब्रह्मचर्य को जोड़कर जीवन में पंचशील (संवर) का आचरण करने पर अधिक बल दिया था।

जो भी रहा हो फिर भी इतना तो निश्चित ही है कि

बुद्ध की साधना जैन ध्यान-योग साधना से अवश्य ही प्रभावित थी, दूसरे तथागत बुद्ध को जैन अहिंसा अधिक भायी, उन्हें रुचिकर लगी जिसे उन्होंने अपनी देशना में ही सम्मिलित नहीं किया बल्कि उसे अपने धर्म का मूल आधार भी बना दिया। कर्मास्रव एवं सर्वज्ञत्व को उन्होंने अपने तरीके से परिभाषित किया। आत्मप्रत्यवेक्षण पर बल दिया। पंचशील, अष्टशील एवं दशकुशल<sup>19</sup> कर्मपथ पर प्राणियों को चलने तथा निर्वाणलाभ प्राप्त करने का स्पष्ट निर्देश दिया।

19वीं सदी में जब भारतीय वाङ्मय अंग्रेजों के हाथ लगा तब वे भी भ्रमित हो गये और उन्होंने उपर्युक्त सन्दर्भों के सादृश्य के कारण दोनों धर्मों को एक ही समझा तथा महावीर को जैनधर्म का प्रवर्तक भी बतलाया, किन्तु आज ऐसा नहीं है। डॉ. जैकोबी, कोलबुक, स्टीवेन्सन, एडवर्ड टामस, डा. वेलवल्कर, डॉ. दासगुप्ता, डॉ. राधाकृष्णन<sup>20</sup>, डॉ. चार्ल शार्पेन्टियर<sup>21</sup>, गेरीनोट, ईलियट और पूसिन प्रभृति अनेक पाश्चात्य एवं पौरात्य विद्वानों ने सिद्ध कर दिया है कि महावीर से पूर्व निर्ग्रन्थ धर्म यानी जैनधर्म विद्यमान था जिसके मूल सिद्धान्तों की प्रमुख-प्रमुख बातें अथवा सिद्धान्त महावीर से पहले ही सूत्ररूप धारण कर चुके थे।

#### निष्कर्ष

1. बुद्ध एवं बौद्धधर्म का उदय ईसापूर्व छठी शताब्दी में हुआ जबकि निर्ग्रन्थ धर्म (जैन धर्म) इससे भी पहले से चला आ रहा था।
2. महावीर स्वामी से पूर्ववर्ती 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का धर्म-तीर्थ छठी शताब्दी तक चला।
3. बुद्धवचन पालित्रिपिटक साहित्य में संगृहीत हैं, जिसमें निर्ग्रन्थ धर्म के कतिपय प्राचीन सन्दर्भ उपलब्ध हैं।
4. निर्ग्रन्थ साधु-श्रावक बुद्ध से प्रभावित होकर बौद्ध भिक्षु एवं बौद्ध-उपासक बने जिनमें-अभय, अचेल कश्यप, सच्चक एवं सीहसेनापति आदि प्रमुख हैं।

5. ऐसे ही बौद्ध साधु-श्रावक भी महावीर स्वामी की वाणी से प्रसन्न हो कर जैन साधु-श्रावक बन गए इसमें चित्तगृहपति एवं वप्पशाक्य प्रमुख हैं।
6. बुद्ध ने महावीर स्वामी के सर्वज्ञत्व की प्रशंसा की और माना कि वे सचमुच में सर्वज्ञ हैं।
7. बुद्ध वचनों में वप्प जैसे निर्ग्रन्थ उपासकों के नाम मिलते हैं। वप्प शाक्यवंशी ही नहीं बल्कि, बुद्ध के सांसारिक चाचा थे।
8. बुद्ध ने कुछ समय तक बुद्ध बनने से पूर्व जैन साधु चर्या का आचरण किया था, जैन ध्यानसाधना की थी।
9. अर्हत्व, सर्वज्ञत्व एवं निर्वाण विषयक जैन कल्पना से बौद्ध धर्म स्पष्ट प्रभावित है।

उक्त सभी सन्दर्भों से जैन निर्ग्रन्थ धर्म की प्राचीनता स्पष्ट झलकती है तथा प्राप्त दुर्लभ जैन वाङ्मय के आधार पर आज पाश्चात्य एवं पौरात्य विद्वान् भी जैनधर्म के अस्तित्व को अतिप्राचीन मानने लगे हैं।

#### सन्दर्भ

1. अंगुत्तरनिकाय 4.4.7.2 पृष्ठ 67 तथा दे. मज्झिमनिकाय भा. 1, 14.2.6, पृष्ठ 128 (नालन्दा संस्करण)
2. वही, निगण्ठसुत्त, 3.8.4, पृष्ठ 204 तथा मज्झिमनिकाय भा. 1, पृष्ठ 128: सो एवमाह-अत्थि खो वो, निगण्ठा, पुब्बे पापकम्मं कतं, तं इमाय कटुकाय दुक्करकारिकाय निज्जीरिथ, यं पनेत्थ एतरहि कायेन संवुता वाचाय संवुता मनसा संवुता वं आयतिं पापस्य कम्मस्य अकरणं, इति पुराणानं कम्मानं तपसा व्यन्तिभावा, नवानं कम्मानं अकरणा, आयतिं अनस्सवो, आयतिं अनस्सवो कम्मक्खयो, कम्मक्खया दुक्खक्खयो, दुक्खक्खया वेदनाक्खयो, वेदनाक्खया सब्बं दुक्खं निज्जिण्णं भविस्सतीति। तं च पनम्हाकं रुच्चति चेव खमति च, तेन चम्हं अत्तमना ति।
3. वही, दे. मज्झिमनिकाय भा. 1, पृष्ठ 129-130 तथा यही भूमिका, पृष्ठ 6
4. अंगुत्तरनिकाय, उपोसथसुत्त, 3.7.10, पृष्ठ 190, 191
5. मज्झिमनिकाय भा. 2, उपालिसुत्त 3, पृष्ठ 43-60



6. अंगुत्तरनिकाय 8.2.2.1-3, पृष्ठ 293
7. मज्झिमनिकाय भा. 2, पृष्ठ 67-71
8. दीघनिकाय भा. 1, महासीहनादसुत्त 8, पृष्ठ 138-149 (नालन्दा संस्करण)
9. मज्झिमनिकाय भा. 1, पृष्ठ 35-36 चूलसच्चकसुत्त एवं महासच्चकसुत्त देखिए।
10. दे. संयुक्तनिकाय 42.8.7, पृष्ठ 265-66
11. वही, 41.8.7, पृष्ठ 265-66
12. अंगुत्तरनिकाय 6.6.3.; तथा मिलाइए दीघनिकाय अट्ठकथा-सुमंगलविलासिनी भा. 1, पृष्ठ 162, एवं आचारांगसूत्र 1/9
13. अंगुत्तरनिकाय 6.6.3.5
14. वही, 4.20.5, पृष्ठ 210-13
15. मज्झिमनिकाय भा. 1, महासीहनादसुत्त 12.6.15, पृष्ठ 109-110 (नालन्दा संस्करण, 1958)
16. देवसेनाचार्य-दर्शनसार, श्लोक 6, (सं. नाथूलाल प्रेमी, जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई 1920, तथा दे. धर्मानन्द कोसाम्बी-भगवान् बुद्ध, पृष्ठ 68-69 एवं पं. सुखलाल संघवी-चार तीर्थकर, बनारस, 1953.
17. महावस्तु भा. 2, पृष्ठ 114-117 (सं. एवं अनु.जे.जे. जोन्स)
18. दीघनिकाय भा. 1, 2.5.28, पृष्ठ 50
19. (प) अष्टांगशील - पाणातिपातावेरमणी, अदिन्नादाना वेरमणी, काममिथ्याचारा वेरमणी, मुसावादा वेरमणी, सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठाना वेरमणी एतानि पंचसीलानि एतेसु विकालभोजना वेरमणी, नच्चगीतवादितविस्सुकदस्यसना वेरमणी, मालागंधविलेपनधारणमण्डनविभूसनट्ठाना वेरमणी एतानि सब्बानि मिलित्वा अट्ठसीलं उपासकोपासकानं आचरणं भवति।  
(पप) दशकुशलकर्मपथ - प्राणातिपातविरति, अदत्तादानविरति, कामेसु मिथ्याचारविरति, मृषावादविरति, पैशुन्यवाग्विरति, पारुष्यवाग्विरति संभिन्नप्रलापविरति, अभिध्याविरति, अव्यापाद, मिथ्यादृष्टिविरति (सम्यग्दृष्टि)। अर्थविनिश्चयसूत्रनिबन्धनम्, पृष्ठ 36 (सम्पा. डा. एन.एच. साम्ताणी, पटना, 1971)
20. भारतीय दर्शन, भा. 1, पृष्ठ 287
21. उत्तराध्ययनसूत्र, भूमिका, पृष्ठ 21  
-1756-बी/6, ज्योतिनगर, कुरुक्षेत्र-136118  
(हरियाणा)

## सुन्दर समाज का निर्माण

श्री सुगन्धचन्द्र बोधरा

आज हम देख रहे हैं कि कई संस्था, समाज, संगठनों में दरारें पड़ रही हैं और अनचाहे विवाद खड़े हो रहे हैं। इन सबका कारण है निःस्वार्थ भाव का अभाव। कार्यकर्ता अपने आपको सेवक न समझकर शासक समझने लगता है, यह अत्यन्त चिन्ताजनक एवं विचारणीय विषय बन जाता है। हमें यह सोचने की जरूरत है कि मैं अपनी ओर से संघ एवं समाज को किस रूप में सहयोग एवं योगदान कर सकता हूँ। इस ओर हमें ध्यान रखने की आवश्यकता है।

लोगों का आदर उनकी शक्ति या सम्पत्ति के कारण नहीं, उनकी उदारता के कारण होता है। हम सूर्य की कद्र उसकी ऊँचाई के कारण नहीं करते, बल्कि उसकी उपयोगिता के कारण करते हैं अतः व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व आदरणीय होता है, सम्माननीय होता है।

संसार आवश्यकता के नियम पर चलता है। सर्दियों में जिस सूरज का हम इन्तज़ार करते हैं उसी सूरज का गर्मियों में तिरस्कार भी होता है।

ज़िन्दगी का सारा खेल कर्मों का है, इन्सान तो सिर्फ अपना किरदार निभाता है। किसी ने एक छोटी भूल की और हमने वह याद रखकर बड़ी भूल की। भावनाएँ शुद्ध होंगी तो कर्म सत्य मार्ग पर होगा और मन भी उज्ज्वल रहेगा।

हमें आने वाले समय में सबको मिलकर यह सोचना होगा कि समाज किस दिशा में जा रहा है और उसे सही दिशा में आगे बढ़ाने में हमारा क्या योगदान हो सकता है। अगर हमें समाज को सही दिशा में आगे बढ़ाना है तो अहंकार को त्यागना होगा। तभी समाज में एकता आयेगी और समाज उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

-देव दर्शन अपार्टमेंट, क्लिफपाँक, चेन्नई

## जल में जीवत्व होने की वैज्ञानिकता

डॉ. जीवराज जैन

**जल में जीवत्व के पैदा होते समय, उसके अणुओं में होने वाली भौतिक क्रियाएँ-**

जल में जीवत्व की जो परिकल्पना 2004 और 2010<sup>1, 2</sup> के बीच में विकसित होकर सामने आई थी, उसके परिप्रेक्ष्य में जल में जीवत्व पैदा होते समय हो रही घटनाओं का पुनर्निरीक्षण करते हैं।

उस परिकल्पना के अनुसार जल कोषाणु की संरचना नैनो ट्यूब के रूप में मधुमक्खी के छत्ते की तरह होती है। वातावरण के संयोग से पानी की कोशिकाएँ फिर से स्वभावतः सजीव होना शुरू कर देती हैं। अचित्त जल के अणु अपने विद्युत्-चुम्बकीय (EM)-बलों से (चित्र-1, 2) एक अचित्त योनि बनाते हैं, जो कि गोल (Spherical) आकार (चित्र-3) की होती है। जल का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि हवा में खुला छोड़ने पर वह वातावरण से हवा को अवशोषित करना शुरू देता है, जब तक कि वह अपने सन्तृप्ति बिन्दु तक नहीं पहुँच जाता है। इस घुलित ऑक्सीजन का लगभग 15% भाग, मूलक कणों (Anions) में परिवर्तित हो जाता है। यह मूलक अचित्त योनि से प्रतिक्रिया करके, उस मधुमक्खी के छत्ते-रूप कोषाणु के मुँह को चपटा बना देते हैं, जिससे उनका उस अचित्त योनि में प्रवेश करना सम्भव हो जाता है (चित्र- 3)। ये मूलक कण, योनि के खोखले गोले के आकाश में उसकी 'क्वांटम-रिक्ति' (Quantum vacancy) में अवशोषित (पचाना) कर लिए जाते हैं। इस प्रकार कोषाणु की संरचना योनि भूत हो जाती है। यानी उसमें जीवोत्पत्ति हो जाती है। वह संरचना ऑक्सीजन आयनों को, एक तरफ सहजता से अपने भीतर आने की अनुमति देती है, तो इस योनि का आन्तरिक ऊर्जा क्षेत्र, अन्दर में प्रविष्ट इन

कणों से प्रतिक्रिया करके, उनको दूसरी तरफ बाहर धकेलने की कोशिश करता है। यानी यह एक ट्रांसड्यूसर (Transducer) की तरह काम करना शुरू करता है। इसकी स्थितिज-ऊर्जा नैनो ट्यूब रूप कोषाणु में 'निश्चित' रहती है।

उन मूलकों की आवाजाही, एक विशिष्ट प्रकार के स्पन्दन या ऊर्जा क्षेत्र, शायद होल्ड्रज क्षेत्र (Holtz field, bio-em) का निर्माण करती है। यह कोषाणु ऊर्जा, ऑक्सीजन मूलक की आवाजाही को सक्रिय रूप से सन्तुलन में रखती है। यह पानी के खोखले गोले को दो चपटे मुँह वाली बेलनाकार (बुलबुलाकार) आकृति की संरचना में बदल देती है।<sup>3</sup>

**पाउड्र परिहार क्रिया : (त्यागे हुए विखण्डित शरीर से पुनः सचित्त योनि बन जाना।<sup>4</sup>**

इस प्रकार की विशिष्ट क्रिया का वर्णन शास्त्रों में वनस्पतिकायिक जीवों के लिए हुआ है। जल-जीवों के लिए इस क्रिया की प्रासङ्गिकता की छानबीन सन् 2017 में की गयी थी। उस अनुसन्धान में पाया गया था कि जल में अचित्त योनि बन जाने के बाद, आसपास के वातावरण के संयोग से उसमें नए या वहाँ के मरे हुए जीव आकर च्यव/उत्पन्न होते हैं। लेकिन जल-जीव में वृक्ष आदि की तरह कोई मूल-जीव की अवगाहना तथा उसके अलग अलग अवयव नहीं होते हैं। अतः वहाँ उत्पन्न होने वाले जीव को पाउड्र परिहार (Paautth parihaar) नहीं कहकर, अचित्त शरीर का योनिभूत (Potential Yoni) होना कहा जा सकता है। अर्थात् जीवोत्पत्ति के योग्य योनि कहा जाता है। जलकोशिकाओं द्वारा अचित्त योनि का पुनः निर्माण होना तथा हवा का अवशोषित होना उनकी प्राकृतिक

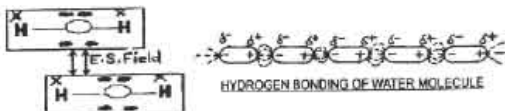
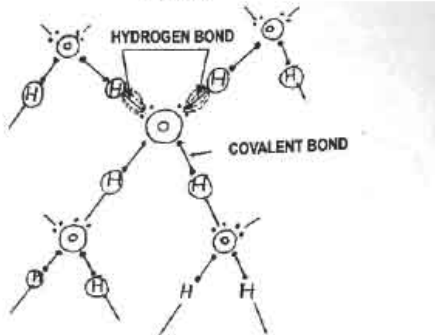
संरचना के नियमानुसार होता है।

**मल - उत्सर्जन**

जीवों को अपनी चयापचय गतिविधि को पूरा करने के लिए जैव-भौतिक/ रासायनिक स्वायत्तता की एक डिग्री की आवश्यकता होती है, अर्थात् मूलक को गति देने के लिए और उनको शरीर की क्वाण्टम रिक्ति में स्थापित करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह गतिविधि जीव को बनाए रखने के लिए आवश्यक अणु और ऊर्जा पैदा करती है। अधिकांश जीवत्व की परिभाषाओं में स्वायत्तता का यह स्तर आवश्यक है। मूलक ट्यूबलर सेल से बाहर निकलने पर फिर से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार एक चक्रीय क्रिया हो सकती है, जैसे अणु, मूलक में और मूलक का वापस अणुओं में परिवर्तन होना।

लेकिन इसके मलमूत्र के उत्सर्जन की क्या स्थिति बनती है? रूपान्तरण की दक्षता जितनी अधिक होगी, मल उतना ही कम होगा। यह सम्भवतः ऊष्मा ऊर्जा के रूप में होता है। इस पर अनुसन्धान की जरूरत है।  
**संलग्न चित्र : अचित्त जल में जीवत्व पैदा होने की तीन स्तरीय प्रक्रियाएँ**

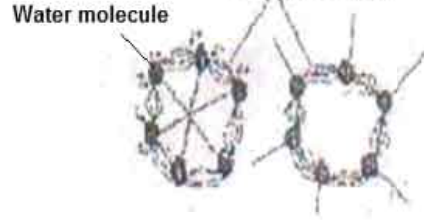
**चित्र-1 : हाइड्रोजन बाण्ड**



Creation of Yoni some time after formation of  $H_2O$

**चित्र 2 : षष्ट-कोणी जल ( $H_2O$ ) अणुओं की स्वतः जुड़ी संरचना**

Electro static forces between polar molecules.



**संरचना { जल-कोषाणु की प्रस्तावित संरचना (मूलक का यात्रा-पथ)}**



जल कोषाणु के मध्य से गुजरते हुए ऑक्सीजन मूलक (काते विंदुओं से दर्शाये)

**सन्दर्भ**

1. A. K. Jain & J. R. Jain, One sensed Sammurchhan Beings p334-358, Scientific Perspectives of Jainism, Jain VishvaBharti Institute, Ladnun, 2017
  2. Jeoraj Jain, "A Novel Life-Form Identifying the Non-Living Water from Living-Water", International Journal of Engineering Science Invention, Volume 3, Issue 1, January 2014, PP.19-29, 26.6718/03101019029
  3. भगवतीसूत्र-शतक 15/7/494, Sudharm Sanskriti Rakshak Sangh, Beawar
  4. Jeoraj Jain, (2020), "जल में जीवत्व सदी के एक क्रान्तिकारी आविष्कार की ओर" Paper presented at GyanSagar Science Foundation, 1st International Webinar, 27th June-2020
- 40, Kamani Center, 2nd Floor, Bistupur, Jamshedpur-831001 (Jharkhand)

## ‘जय जिनेन्द्र’ की जयवन्त प्रेरणाएँ

डॉ. दिलीप धींग

मानवीय सम्बन्ध और व्यवहार में कई तरीकों से शिष्टाचार का पालन किया जाता है। एक सर्वमान्य तरीका है-अभिवादन करना। अभिवादन के अनेक रूप हैं और अनेक शब्द प्रयोग हैं। भावना, श्रद्धा, क्षेत्र, भाषा आदि के अनुसार भारत में अनेक प्रकार के अभिवादन हैं। जैन समाज में जय जिनेन्द्र अभिवादन सर्व प्रचलित है। विश्व के जिस किसी देश में जैन रहते हैं, वहाँ ‘जय जिनेन्द्र’ अभिवादन प्रचलित है। इस प्रकार यह एक वैश्विक अभिवादन है। इसमें हमारी भाषा, संस्कृति और संस्कारों का गौरव है।

‘जय जिनेन्द्र’ सिर्फ जैन समाज तक ही सीमित नहीं है। अनेक स्थानों और अवसरों पर जैन-जैनेतर सबके बीच सहज रूप में जय जिनेन्द्र से अभिवादन किया जाता है। कभी-कभी अवसर के अनुसार भी जय जिनेन्द्र अभिवादन किया जाता है। जैसे 3 मई 2022, अक्षय तृतीया को दिल्ली में भगवान महावीर चिकित्सालय शिलान्यास समारोह में राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने अपने सम्बोधन की शुरुआत जय जिनेन्द्र अभिवादन से की थी और सम्बोधन का समापन जय जिनेन्द्र और जय हिन्द के साथ किया था।

यह भी स्पष्ट है कि जय जिनेन्द्र के माध्यम से अवसर के अनुसार व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों प्रकार का अभिवादन होता है। मौखिक के अलावा पत्र आदि में लिखित जय जिनेन्द्र भी किया जाता है। हाँ, जय जिनेन्द्र अभिवादन सिर्फ गृहस्थजनों के मध्य ही होता है। सन्तों के प्रति विनय के लिए अलग शब्द और अलग भाव होते हैं।

जैनधर्म के सर्वमान्य सूत्र नवकार महामन्त्र में जिस प्रकार किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, उसी प्रकार

जय जिनेन्द्र अभिवादन में भी किसी का नाम नहीं है। यह गुणवाचक अभिवादन है। जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया, जो वास्तविक विजेता बन गये; उन जिनेन्द्र परमात्मा की इसमें जय है। इस जयकार के साथ व्यवहार में एक-दूसरे को नमस्कार किया जाता है और श्रद्धास्पद माध्यम से शिष्टाचार निभाया जाता है।

गहराई से देखें तो जय जिनेन्द्र अभिवादन में अनेक शुभ सन्देश और पावन प्रेरणाएँ हैं। दो शब्दों और पाँच अक्षरों के इस अभिवादन की मुख्यतः पाँच प्रेरणाएँ हैं-विनय, वाणी-विवेक, साधर्मी वात्सल्य, जैन एकता और जैन होने का गौरव। आओ! इन प्रेरणाओं को जानें।

### (1) विनय

आगम-साहित्य में विभिन्न सन्दर्भों में विनय के अनेक प्रकार बताए गये हैं और अनेक व्याख्याएँ की गई हैं। यहाँ उन शास्त्रीय व्याख्याओं में नहीं जाते हुए जय जिनेन्द्र अभिवादन के सन्दर्भ में विनय के बारे में चर्चा अभिप्रेत है। विनय के दो प्रकार मुख्य हैं-लौकिक विनय और लोकोत्तर विनय। जय जिनेन्द्र अभिवादन का मुख्य सम्बन्ध लौकिक विनय यानी व्यवहार विनय और पारस्परिक शिष्टाचार से है। व्यवहार पक्ष की शिष्टता, विनम्रता और सरलता आपसी सम्बन्धों को सुमधुर, सुदृढ़ और स्थायी बनाती है तथा आध्यात्मिक साधना में भी सहायक तथा सुफलदायी होती है।

औपपातिक और स्थानांग सूत्र में विनय के सात प्रकार बताए गए हैं-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, मन, वचन, काया और लोकोपचार विनय। मोटे तौर पर जय जिनेन्द्र अभिवादन लोकोपचार विनय है, लोक-व्यवहार का विनय है। लेकिन इस विनय के साथ भी हमने जिनेन्द्र भगवान का स्मरण किया है, उनकी जयकार की है। जब

हम हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र बोलते हैं तो लोक-व्यवहार विनय के साथ वचन विनय और काया विनय तो हो ही जाता है और यदि मन से जय जिनेन्द्र कहते हैं तो मन विनय भी हो जाता है।

जय जिनेन्द्र के माध्यम से किसी को नमस्कार किया जाता है तो नमस्कार पुण्य हो जाता है, जो पुण्य का नौवाँ भेद है। इससे पूर्व मन, वचन और काया ये तीन पुण्य भी हैं। यदि हाथ जोड़कर, मान मोड़कर और मन से जय जिनेन्द्र किया जाए तो मन, वचन और काया पुण्य का लाभ भी मिल जाता है।

विनय तप भी है। उत्तराध्ययनसूत्र में विनय तप के लिए पाँच बातें बताई हैं—खड़ा होना, हाथ जोड़ना, आसन देना, गुरुभक्ति और भावपूर्वक सेवा। हमारे व्यावहारिक जीवन के अभिवादन में गुरुभक्ति को छोड़कर विनय तप की एक से चार बातें लागू हो सकती हैं। किसी के आने पर हम प्रायः खड़े होते हैं, हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र कहते हैं और उसे बैठने के लिए कहते हैं। आतिथ्य या पारस्परिक सहयोग भाव भी जय जिनेन्द्र का फलित माना जा सकता है। यानी एक जय जिनेन्द्र भी यदि कोई ढंग से कर लेता है तो चार प्रकार का विनय, चार प्रकार के पुण्य और विनय तप के चार चरणों का सुफल भी मिल जाता है। मेरे जय जिनेन्द्र गीत की शुरूआती पंक्तियाँ विनय और जय जिनेन्द्र की इसी प्रकार की अर्थपूर्ण अभिन्नता दर्शाती हैं—

विनय धर्म को धारण करके गाँठ अहम् की खोलें,

जय जिनेन्द्र हम बोलें।

हाथ जोड़कर मान मोड़कर प्रेम से हौले हौले,

जय जिनेन्द्र हम बोलें।

जय जिनेन्द्र के माध्यम से अहम् की गाँठ खोलकर; मन और मान को मोड़कर विनय की सच्ची आराधना करनी चाहिये।

## (2) वाणी-विवेक

‘जय जिनेन्द्र’ बहुत अच्छा शब्द प्रयोग है। जब हम कुछ अच्छा बोलते हैं तो उसका एक अर्थ यह है कि

हमें बुरा, अप्रिय और असत्य नहीं बोलना है। यूँ तो जीव के द्वीन्द्रिय होते ही, त्रस पर्याय पाते ही, उसे वचन बलप्राण मिल जाता है। लेकिन वचन और वाणी का जो अतिशय वैभव मनुष्य के पास है, वैसा किसी भी प्राणी के पास नहीं है। शब्द, भाषा, व्याकरण, साहित्य, संगीत आदि अनेक माध्यमों से मानव ने वचन बल प्राण को अपरिमित ऊँचाइयाँ दी हैं। भाषा समिति और वचन गुप्ति का पालन करके हमें वाणी को प्रभावी, साताकारी और शान्तिकारी बनाना चाहिये। वाणी-संयम जय जिनेन्द्र का एक बहुत ही उपयोगी, व्यक्तित्व उन्नायक और जीवन निर्माणकारी सन्देश है। जय जिनेन्द्र गीत का पाँचवाँ पद भी यह सन्देश देता है—

दीर्घ साधना का सुफल है यह वाणी की सत्ता।

बोल-बोल करते रहते समझी नहीं मौन महत्ता।

बोलें पर उससे पहले हम एक बार फिर तोलें।

जय जिनेन्द्र हम बोलें।

## (3) साधर्मी वात्सल्य

जय जिनेन्द्र साधर्मी वात्सल्य की प्रबल प्रेरणा देता है। साधर्मी वात्सल्य का अर्थ है जो समानधर्मी, सहधर्मी और स्वधर्मी हैं, उनके प्रति विशेष प्रेम, अनुराग और सद्भाव रखना। साधर्मी वात्सल्य का जो प्रचलित अर्थ है, वह सिर्फ भावनात्मक अनुराग तक ही सीमित नहीं है। वह समय, पात्रता और आवश्यकता के अनुसार वास्तविक सहयोग करने तक विस्तृत है। व्यक्ति अपनी भावना और क्षमता के अनुसार साधर्मी सहयोग को कई प्रकार की मर्यादाओं में बाँध सकता है और कई प्रकार से विस्तार दे सकता है। मर्यादा और विस्तार के कुछ उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं—

1. अपने धर्म के व्यक्तियों तक,
2. अपनी सम्प्रदाय या उप-सम्प्रदाय के लोगों तक,
3. अपने स्व-गोत्रीय बन्धुओं तक,
4. अपने स्व-क्षेत्रीय बन्धुओं तक,
5. अपने व्यवसाय या कार्यस्थल से जुड़े साधर्मी व्यक्तियों तक,

6. परिवारजनों और सगे-सम्बन्धियों तक,
7. किसी विशेष उद्देश्य को समर्पित सहयोग। जैसे-साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा आदि और
8. किसी विशेष अवसर, परिस्थिति या आपदा में सहयोग करना।

साधर्मी वात्सल्य जय जिनेन्द्र की एक ऐसी प्रेरणा है, जिसमें हमारा सहयोग भाव प्रकट होता है, विकसित होता है। यदि हम किसी भी रूप में हमारे किसी भाई या बहिन का कोई सहयोग कर सकते हैं तो इससे जय जिनेन्द्र बोलने का गौरव बढ़ता है। जय जिनेन्द्र गीत का नौवाँ पद है-

जय विजय का भाव हृदय में अभिवर्धित है होता।  
बढ़ता है विश्वास परस्पर मन खुशियों से भरता।  
जिनको खुशियाँ कम नसीब हैं उनके भर दें झोले,  
जय जिनेन्द्र हम बोलें।

#### (4) जैन एकता

जैनधर्म और सर्व समाज में जिस प्रकार नवकार मन्त्र सर्वमान्य है, उसी प्रकार जय जिनेन्द्र अभिवादन में भी कोई मतभेद नहीं है। जय जिनेन्द्र अभिवादन हमें जैन एकता का बोध कराता है। जिनेन्द्र भगवान के प्रति श्रद्धा रखने वाले और उनकी जय बोलने वाले सभी जैनों में एकत्व का भाव होना चाहिये। हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि नवकार महामन्त्र में जिनेन्द्र भगवान (अरिहन्त और सिद्ध परमात्मा) का स्थान प्रथम है। उनके बाद ही गुरु का स्थान है। पंच परमेष्ठी में जिनेन्द्र भगवान प्रथम हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखने से जैन समाज की सम्प्रदायवाद की समस्या का समाधान हो सकता है। युवा पीढ़ी, साधारण जैन और जनसामान्य भेदभाव की बातों को न तो समझता है और न ही समझना चाहता है। आज दुनिया जैनत्व चाहती है, लेकिन जैनत्व में एकत्व देखना चाहती है। जय जिनेन्द्र गीत के सातवें पद में मैंने इसी भाव को शब्द दिये हैं-

मतभेदों के कारण से मनभेद न होने पाए।  
भेद के भीतर जो अभेद है वह समझें-समझाएँ।

बिना समन्वय सद्भावों के जिनशासन यह डोले।  
जय जिनेन्द्र हम बोलें।

जय जिनेन्द्र के माध्यम से विनय, वाणी-संयम और साधर्मी वात्सल्य के माध्यम से भी एकता और सौहार्द की भावनाएँ पुष्ट होती हैं।

#### (5) जैन होने का गौरव

जय जिनेन्द्र के माध्यम से जैन होने का गौरव भी अभिवर्धित होता है। जिनेन्द्र भगवान की शाश्वत परम्परा से अनेक गौरवशाली तथ्य जुड़े हैं। जैसे, जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ। इस तथ्य को जय जिनेन्द्र गीत में मैंने यँ अभिव्यक्त किया है-

ऋषभ-पुत्र भरत का भारत, भारत का यह गौरव।  
इतिहासों से परे पर खरे, ऋषि-मुनियों के अनुभव।  
उनके कालजयी सन्देशों को क्यों कर हम टालें।

जय जिनेन्द्र हम बोलें।

जैनधर्म, दर्शन, समाज और संस्कृति की अनेक विशेषताएँ हैं। जैन समाज के अहिंसा, सेवा और तपस्या के आदर्श अनुपम और अद्वितीय हैं। हिंसक और तोड़फोड़ की गतिविधियों से दूर रहने वाला जैन समाज शान्तिप्रिय, अनुशासित, देशभक्त और मानवतावादी समाज है। थोड़ी आबादी के बावजूद आनुपातिक दृष्टि से सर्वाधिक आयकर चुकाने वाला यह समाज दानशीलता में भी अक्वल है। दानशीलता, उदारता और रचनात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप ही शिक्षा, चिकित्सा, मानवसेवा और जीवदया के अनेक कार्य, कार्यक्रम और संस्थान जैन समाज द्वारा सञ्चालित होते हैं। अतः जय जिनेन्द्र अभिवादन के साथ जैन होने के गौरव की अनुभूति की जानी चाहिये। जैन होने के गौरव को बढ़ाने के कार्य करने चाहिये।

#### (6) जागरण का सूत्र

जय जिनेन्द्र के पन्द्रहवें पद में जागने और जगाने का आह्वान किया गया है-

आत्म-विस्मृति आत्म-वञ्चना खूब हुई अब त्यागें।  
उमर जा रही सोते-सोते भाव नींद से जागे।  
कुछ कहने लायक करने का सत्संकल्प संजो लें।  
जय जिनेन्द्र हम बोलें।

आत्म-विस्मृति और आत्म-वञ्चना के कारण जय जिनेन्द्र की प्रेरणाएँ जनव्यापी नहीं हो पा रही हैं। आत्म-विस्मृति का सरल अर्थ है-स्वयं को भूलना, स्वयं की क्षमताओं और सम्भावनाओं को भूलना तथा स्वयं की संस्कृति, परम्परा और इतिहास को भूलना। गौरवशाली सांस्कृतिक प्रतिमानों की उपेक्षा को भी आत्म-वञ्चना कह सकते हैं। जय जिनेन्द्र की प्रेरणा यह है कि हम स्वयं को तथा स्वयं के वैभव को नहीं भूलें। आत्म-वञ्चना का अर्थ होता है, स्वयं को धोखा देना या स्वयं के साथ छल करना। कभी-कभी व्यक्ति सोचता है कि वह किसी दूसरे को धोखा दे रहा है, लेकिन गहराई से देखें तो व्यक्ति खुद को ही धोखा दे रहा होता है। ऐसी विस्मृति और ठगाई से बचने के लिए भाव-निद्रा से जागना आवश्यक है। भाव-निद्रा के दो पक्ष हैं-सांस्कृतिक और दूसरा आध्यात्मिक। परम्परा और संस्कृति की श्रेष्ठताओं से बेखबर रहना सांस्कृतिक भाव-निद्रा है। आत्म-साधना में प्रमाद करना आध्यात्मिक भाव-निद्रा है। द्रव्य निद्रा से तो रोज सुबह हम जागते ही हैं। द्रव्य निद्रा से किसी को जगाया भी जा

सकता है, लेकिन भाव निद्रा से किसी को जगाना बहुत बड़ी चुनौती है। हम भाव नींद से जागे और कुछ श्रेष्ठ करने के लिए कदम बढ़ाएँ।

इस प्रकार यह दिन के उजाले की तरह सुस्पष्ट है कि जय जिनेन्द्र मात्र एक अभिवादन ही नहीं है, अपितु अनेक महनीय दायित्वों का बोध कराने वाला अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण प्रेरणा-सूत्र भी है। पहले कहा गया कि जय जिनेन्द्र अभिवादन व्यक्तिनिष्ठ नहीं होकर वस्तुनिष्ठ है, गुणवाचक है। इसलिए यह अभिवादन जैन समाज तक सीमित नहीं है और इसे जैन समाज तक सीमित नहीं रखना चाहिये। इसी तथ्य को जय जिनेन्द्र गीत के अन्तिम 16वें पद में पिरोया गया है-

‘दिलीप धींग’ की दिली गुजारिश बनें विराट्हृदय के।  
तब हम पात्र बनेंगे सचमुच श्री जिनेन्द्र की जय के।  
जैनमात्र ही नहीं इसे अब जन-जन मिलकर बोलें।  
जय जिनेन्द्र हम बोलें।

हमारा प्रेम और अपनापन इतना सहज, सघन और समत्वपूर्ण हो कि जय जिनेन्द्र और जय जिनेन्द्र के अहिंसा, अनेकान्त आदि सर्वहितकारी सन्देश जन-जन तक पहुँचाए जा सकें।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7 अय्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

## ‘अहिंसा’ सबसे खूबसूरत शब्द

श्री फिलिप वूलन

मानव इतिहास में किसी भी देश, किसी भाषा, किसी समय का अब तक का सबसे खूबसूरत शब्द ‘अहिंसा’ है। यह शब्द भारत की अपनी विशेषता है, जो यहाँ के तीन हजार साल पहले के साहित्य में मिलता है। किसी भी सजीव प्राणी के साथ हिंसा नहीं करना अहिंसा है। यह शब्द खूबसूरत इसलिये नहीं है कि यह हमारी राष्ट्रीयता, राजनीति, धर्म, आहार और जीवनशैली के बारे में बताता है, बल्कि इसलिये कि

यह हमारे चरित्र का परिचय देता है। अहिंसा का मतलब है, ‘हिंसा जहाँ भी और जब भी होती है, हम उसे सिरे से खारिज करते हैं।’ यह वह क्रान्तिकारी घटना है, जो किसी औद्योगिक क्रान्ति, सुधार-कार्य, हब्बल टेलीस्कोप, कॉपरनिकस, आइंस्टीन, डारविन और फ्रॉयड की अब तक की कल्पनाओं से ज्यादा शक्तिशाली है। शक्तिशाली इसलिये, क्योंकि यह सबसे अनमोल चीज की रक्षा करता है और वह है ‘जीवन।’

-ऑस्ट्रेलियाई समाज सेवी, पर्यावरणविद् और पशु-अधिकार कार्यकर्ता

## Jains are on a Mission to Educate the World about Jainism

*Sh. Sulekh C. Jain (Ph.D.)*

**Indian-American Jain community has raised, committed and donated nearly \$20 million, which is matched 2 : 1 with additional contribution of more than \$40 million by all the partnering Universities.**

**Our vision** – The main goal of the North American Jain community in undertaking many education and philanthropy initiatives is to promote universal brotherhood and harmonious living amongst the people of the world while respecting the environment. We have just started this journey; a lot more needs to be done and we are striving diligently to make Jain studies a vibrant tradition and a vital presence in global academia.

**An unprecedented opportunity to learn about Jainism** – Jainism, one of the oldest religions of the world, has made an immense contribution to Indian thought. Besides the ancient Jain gymnosophists influencing Greek and Persian philosophers with their austere lifestyle, over the millennia, Jains have enriched the spiritual, religious, philosophical, ethical, literary, cultural, iconographic, philanthropic and architectural aspects of Ancient, Medieval and Pre-Modern India. The Jain Religion has the sixth largest religious following in the world with an estimated 8 million Jains worldwide and about 150,000 of them now live in USA and Canada.

The wisdom traditions of the world offer pathways for humans to live with each other and with the nature and planet in a more peaceful and harmonious way. *Among the world's great religions, none has made the striving for peace, tolerance and ecology more central to all living beings and none has*

*called its followers to higher standards of Ahimsa/(non-violence) than Jainism.*

*The foundational beliefs direct followers to strive for the highest standards of Ahimsa (Non-violence) in thought, word and action. Thus, proselytizing and conversion are rejected in Jain Religion, as Jains consider this as mental violence and hence, a cause for great conflicts to arise.*

**Until recently, few people knew about Jainism in the West, but this is rapidly changing...**

The Indian-American Jains are amongst the best educated professionals and successful entrepreneurs and have organized themselves across 70 Jain centers under the Federation of Jain Associations in North America (JAINA, [www.jaina.org](http://www.jaina.org)), which is a non-profit educational, humanitarian and community service organization.

As with all first-generation immigrants, Jains prioritized donating their wealth to build community temples and places of worship. Many in the western intelligentsia view Jain principles and practices as a pathway to achieving human resilience, inner peace and conflict resolution.

As recently as twenty years ago, learning opportunities in Jain studies were scarce in North American institutions of higher learning, beyond a passing description in a university course or chapter about comparative religions. Also, until then, only a handful of scholars were even knowledgeable or available and sufficiently trained to teach Jainism with authority and credibility.

**International School for Jain Studies**



**established to leverage India as a classroom** – To fill this knowledge vacuum, the first step was the establishment of International School for Jain Studies (ISJS, [www.isjs.in](http://www.isjs.in)) in 2005; a collaboration between U.S. academic institutions and India-based Jain scholars. Its sole purpose via experiential learning was to make India a class room to educate and expose scholars from North American and European universities. From a humble beginning of educating a less than a dozen western students in 2005, to date, nearly 800 scholars from more than 30 universities outside India have availed of this unique program, and more than 30 scholars have completed their Ph.D. degrees in Jain studies from prestigious universities in USA, Canada and Europe.

***An ISJS class tours Jain monuments in New Delhi, India***

To nurture, promote, facilitate and provide full support and backing to these initiatives, in 2008, JAINA established an Academic Liaison Committee (ALC). Twenty-seven highly motivated, intellectually diverse, and successful Jain community leaders from many parts of USA, Canada, UK and India are members of the ALC, which meets regularly.

**Over 40 universities in North America offer courses now in Jain Philosophy** – With the availability of freshly educated and trained scholars, the Jain community has successfully funded more than 35 programs consisting of endowed Chairs, Professorships, Lectureships, Post-doctoral Fellowships, annual endowed lectures and year-long fellowships to educate scholars in Jainism, including the canonical language of Prakrit. More than 20 scholars are also currently enrolled in Ph.D. programs in USA, Canada and Europe and some of them are also being financially supported by the Jain community.

One very important development is that

to break the barriers between some Indic religions, Jain and Hindu donors have established the first of its kind joint endowed chair in Jain and Hindu *Dharma* Studies at California State University, Fresno, California. Similarly, a joint endowed professorship in Jain and Sikh studies was also established at Loyola Marymount University in 2015. Our sincere hope is that these exemplary models will provide the impetus for more such joint interfaith programs to be established in USA, Canada and other places in the near future.

***(JAINA ALC members attending the signing ceremony for an endowed Chair in Jain Studies at University of California, Irvine in 2015)***

In addition, with the increasing interest in Jain studies, to date, 18 more universities in the US have started offering classes in Jainism on their own.

**2021 was a banner year for establishing Jain programs in academia** – The growth of programs in Jain studies accelerated in 2020 and 2021. Last year was a banner year as the Jain Community established four endowed Professorships, three endowed Post-doctoral Fellowships, one 3-year Post-doctoral Fellowship, two endowed Jain Study Programs and two Adjunct Professorship programs.

In addition to the progress in USA and Canada, Jain donors are also supporting similar programs in the U.K, Belgium, Germany, Brazil, Ukraine, and Pakistan.

**Other new programs and initiatives in 2020-2021**

a) ***Symposium on Jainism and Mathematics***. An inaugural 3-day virtual symposium on Jainism and Mathematics was held in December 2020, from which a Proceedings will soon be released by a US publisher. This will be a valuable addition which

exemplifies the contributions of Jain monks and scholars to the history of Mathematics.

**b) Dating of the birth of Tirthankar Mahavir.** There is much disagreement (between Jain and Western scholars) about the dating of the birth and *Nirvana* (i.e., soul-liberating death) of Mahavir (the 24<sup>th</sup> and last *Tirthankar* of our era who lived over 2,500 years ago). The ALC has recently initiated a multi-disciplinary research program involving reputed scholars (from several countries and disciplines) – conferences will be held to reach consensus and remove this confusion if possible.

**c) International Center for Jainism and Science.** Since there is a strong connection between contemporary science and Jainism, an ALC member has led the establishment and funded an international center in India to conduct comparative studies to explore the bridge between modern science (i.e., aspects of life, nature and universe) and ethereal Jain philosophy and wisdom.

**d) International School for Jain Studies (ISJS) is Expanding its Staff.** ISJS has signed MOUs for collaborations with several reputed universities in USA, Belgium and India; ISJS regularly holds thematic seminars and conferences, publishes a quarterly refereed journal, and has led demographic studies, as well as published several books.

#### Plans and priorities for 2022 and beyond

1. **Fill all open faculty positions.** Not all academic positions have been filled since establishment of endowed positions. Jain ALC leaders and the partnering institutions are working together to recruit faculty and make functional all the vacant positions as soon as feasible.
2. **Raise funds to establish more endowed Chairs.** ALC will focus on Tel Aviv University and Hebrew University in

Jerusalem (Israel) and at University of California at Berkeley (USA), and at a few other places.

3. **Establish endowed chairs in Jainism at least at two prestigious universities in India.** Exploratory meetings are being held and requirements are being assessed.

#### Some significant features of endowment programs

- ◆ Nearly all faculty are ISJS alumni.
- ◆ Nearly 70% faculty are women.
- ◆ All the faculty are vegetarians, and many are vegans.
- ◆ All programs are non-sectarian and cover all aspects of Jainism.
- ◆ All programs have been very well received, busy and successful, attracting dozens of students.
- ◆ Most of the faculty are proficient in Prakrit, Sanskrit, Hindi and Gujarati.
- ◆ Generally, local Jain centers are also involved as donors and supporters.
- ◆ The base model is that universities pay the salary and all the benefits of the professor/post-doc in perpetuity from their own internal funds, and only a small percentage comes from the endowment funds provided by the Jain donors.
- ◆ To date, Jain community has raised, committed and donated nearly \$20 million, which is matched 2:1 with additional contribution of more than \$40 million by all the partnering Universities.
- ◆ One significant feature of these *Gyan mandirs* (i.e., temples of knowledge /academic centers) is that twenty of the faculty positions have been named in honor of the Jain *Tirthankaras*, and not in the name of the donors (by mutual consent). Our goal is to complete the *Chovisi* (set of 24 *Tirthankara* of our era) by 2024 or sooner.

**Why Study Jainism?**

"Jain Dharma offers a different pair of eyeglasses or a prism through which to view the world, its problems, and opportunities. This is why I teach Jainism at University of Texas at Austin." – Professor Donald Davis, University of Texas at Austin

"I want to hear everyone talking about Jainism. I want religion and philosophy departments teaching it. I want ecologists and agricultural technicians exploring its sustainability models. I want animal ethicists investigating it. I want metaphysicians engaging its textual and cosmological claims. I want economics departments examining its charitable giving and solvency. I want diplomats, nonviolent practitioners and just war theorists scrutinizing it as a viable

political way of life. In short, I want it on the lips of every discipline, colliding with existing wisdom, challenging epistemological strongholds, and generally throwing a wrench into any sentiment that would dismiss as impractical the possibilities of humans living in a fundamentally different manner in our current and future worlds" – Professor Brienne Donaldson, University of California Irvine.

[ The author of this article, Las Vegas resident [Dr. SulekhC. Jain](#) is the Past Secretary and President of the [Federation of Jain Associations in North America](#) (JAINA). Dr. Jain also authored a book *An Ahimsa Crisis: You Decide*, which can be accessed as an e Book free of charge at [www.isjs.in](http://www.isjs.in) email; [scjainphd@gmail.com](mailto:scjainphd@gmail.com) ]

**मन की इस रणभूमि पर**

श्रीमती सुनीता डागा  
मन की इस रणभूमि पर  
कैसा यह महाभारत है..

विचित्र कथा है इस मन की,  
चित्त और मन के युद्ध में,  
उलझन सी फैली है चित्त में  
कैसा यह महाभारत है।

कषाय रूपी कौरव सामने हैं,  
बन्धन रूपी सेना का डेरा है,  
विषयों का शस्त्रागार है,  
इन्द्रियाँ रूपी पाँच पाण्डव हैं,  
कैसा यह महाभारत है।

समता रूपी धर्म रथ है,  
सद्गुरु रूपी श्री कृष्ण हैं,  
प्रज्ञा रूपी सुदर्शन चक्र है,

संवेदनाओं का कुचक्र है,  
कर्म रूपी चक्रव्यूह से निकलना है,  
कैसा यह महाभारत है।

घायल चित्त विचलित मन है,  
अन्तरतम में मचा संग्राम है,  
वीरता का परिचय करना है,  
शूरवीर चित्त का यह आद्धान है,  
कैसा यह महाभारत है।

सेनाओं का महायुद्ध है,  
साधना मिली उत्तम विशुद्ध है,  
आत्मा में भीतर द्वन्द्व है,  
ध्यान की ही एक धुन है,  
वीतरागता की गूञ्ज है,  
कैसा यह महाभारत है।

-बरी 13, सेठी कॉलोनी, जयपुर-302004  
(राजस्थान)

## क्षमा-प्रार्थना एवं क्षमाशीलता का महत्त्व

एक मनस्वी सन्त

मेरे निज स्वरूप परम प्रिय!

की हुई भूल के आधार पर अपने में दोषी-भाव अंकित हो जाने से और अपने प्रति होने वाले अन्याय तथा अत्याचार के आधार पर दूसरों को दोषी मान लेने से चित्त में अशुद्धि आ जाती है। उसकी निवृत्ति के लिए यह अनिवार्य है कि की हुई भूल को न दुहराने का व्रत लेकर व्यथित हृदय से क्षमा-याचना की जाय और जिन्होंने अपने प्रति बुराई की है, उसके बिना ही माँगे स्वयं अपनी ओर से सदा के लिए क्षमा कर दिया जाय, तो बड़ी ही सुगमतापूर्वक चित्त की अशुद्धि मिट जाती है। परन्तु क्षमा माँगने का बल उन्हीं प्राणियों में होता है जो एक क्षण भी दोषी नहीं रहना चाहते, अपनी भूल को बड़ी ही ईमानदारी से स्वीकार कर लेते हैं अर्थात् जो वर्तमान में निर्दोष होना चाहते हैं, वे ही क्षमाप्रार्थी हो सकते हैं।

दोष-जनित सुख में आसक्त प्राणी दुःख से बचने के लिए भले ही क्षमा की बात कहे, पर वह वास्तव में क्षमा-प्रार्थी नहीं हो सकता। कारण, कि दोष-जनित सुख की आसक्ति दोष न दोहराने का व्रत नहीं लेने देती। दुःख से बचने के लिए तो सर्व-साधारण अर्थात् बड़े-से-बड़ा अपराधी भी क्षमा माँगने लगता है। पर सच्चाईपूर्वक क्षमा वही माँग सकता है, जो दोषी होने से घोर दुःखी है। दोष का होना उतनी भूल नहीं है, जितनी भूल किए हुए दोष को स्वीकार न करना और दोष-जनित प्रवृत्ति से घोर दुःखी न होना है। यद्यपि प्रत्येक दोषी में दोष की स्वीकृति स्वतः होती है, परन्तु अनादर के भय से जानते तथा मानते हुए भी अपने से और दूसरों से उसे छिपाना चाहता है, क्योंकि स्वभाव से प्राणी अपनी तथा दूसरों की दृष्टि में दोषी होकर रहने से क्षुब्ध

होता है और क्षोभ के दुःख से बचने के लिए मिथ्या प्रयास करता है।

यह नियम है कि जो अपने को धोखा नहीं देता, वह दूसरों को धोखा दे ही नहीं सकता अर्थात् जो बुराई प्राणी अपने प्रति करता है, वही दूसरों के प्रति भी करता है। इतना ही नहीं, यदि हम अपने प्रति कोई बुराई न करें, तो दूसरों की, की हुई बुराई का प्रभाव हम पर हो ही नहीं सकता। तात्पर्य यह है कि प्राणी प्रथम स्वयं अपने प्रति बुराई करता है, तब दूसरों की की हुई बुराई उसे क्षुब्ध करती है। प्राकृतिक नियम के अनुसार जो स्वयं बुरा हो नहीं जाता, वह दूसरों के साथ बुराई कर ही नहीं सकता, क्योंकि दोषी होने पर ही दोषयुक्त प्रवृत्ति का जन्म होता है। इस दृष्टि से प्राणी के निर्दोष होने पर ही उसके द्वारा निर्दोष प्रवृत्ति हो सकती है। दोषयुक्त प्रवृत्ति से पूर्व प्राणी अपने अहम्भाव में दोष की स्थापना कर लेता है, तभी दोषयुक्त प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जैसे, अपने में लोभ तथा मोह की स्थापना करने पर ही लोभ तथा मोहयुक्त प्रवृत्ति होती है, क्योंकि कर्त्ता जैसा अपने को मान लेता है, उसके अनुरूप ही कर्म होता है। किन्तु उस किए हुए कर्म का संस्कार कर्त्ता की रुचि के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार अंकित होता है, इस कारण दोषयुक्त प्रवृत्ति से दोषी-भाव की स्थापना स्वतः हो जाती है। यद्यपि किसी की रुचि अपने को दोषी स्वीकार करने की नहीं है। परन्तु प्राकृतिक विधान के अनुसार किए हुए कर्म का संस्कार अंकित हो ही जाता है और उन्हीं संस्कारों के आधार पर भावी परिस्थिति का निर्माण होता है।

यह नियम है कि जब से प्राणी दृढ़तापूर्वक प्राप्त विवेक का आदर करने लगता है, तभी से दोष-युक्त प्रवृत्तियों का जन्म नहीं होता, परन्तु भूतकाल की

प्रवृत्तियों की स्मृति अंकित रहती है, उन्हीं के आधार पर वह वर्तमान में निर्दोष रहने पर भी अपने को दोषी मानता है।

यदि जीवन में निर्दोषता नहीं होती, तो दोष का ज्ञान ही नहीं होता, क्योंकि सर्वांश में प्राणी कभी भी दोषी नहीं होता और यदि कोई सर्वांश में दोषी है, तो उसे दोष का ज्ञान भी नहीं है। दोष का ज्ञान उसी प्राणी को है, जो सर्वांश में दोषी नहीं है। जो सर्वांश में दोषी नहीं है, उसी को दोषी-भाव की स्वीकृति व्यथित करती है। ज्यों-ज्यों वह व्यथा तीव्र होती जाती है, त्यों-त्यों दोषी भाव के निवारण की रुचि जाग्रत होती जाती है। सर्वांश में निर्दोष होने की रुचि जाग्रत होते ही प्राणी बड़ी ही सुगमतापूर्वक क्षमायाचना कर सकता है और दोष को न दुहराने का व्रत लेकर अपने में निर्दोषता की स्थापना कर सकता है, जिसके करते ही चित्त शुद्ध हो जाता है।

दोषी होने की तीव्र वेदना प्राणी को क्षमा-प्रार्थी बनाने में समर्थ है और क्षमा माँगने में की हुई भूल न दुहराने का व्रत स्वाभाविक है। की हुई भूल न दुहराने के व्रत में निर्दोषता की स्थापना अपने आप हो जाती है, क्योंकि जो भूल को दुहराता नहीं, वह अपने को सहज भाव से ही निर्दोष मान सकता है। यह नियम है कि दोष की उत्पत्ति आंशिक और निर्दोषता की अभिव्यक्ति सर्वांश में होती है। अतः निर्दोषता की स्थापना सर्वांश में ही हो सकती है, आंशिक नहीं, अथवा यों कहो कि निर्दोष होने के लिए प्राणी को सभी दोषों का त्याग करना अनिवार्य है और यही क्षमायाचना का वास्तविक अर्थ है। किसी भी अपराध के बदले में किसी से भी क्षमा-याचना की जाए, उस क्षमा-याचना में सभी दोषों के त्याग की भावना हो, तभी वह क्षमा-याचना है। क्षमा किसी भी व्यक्ति से क्यों न माँगी जाए, वह वास्तव में समष्टि से हो जाती है। प्राकृतिक नियम के अनुसार कोई किसी के साथ भलाई तथा बुराई करे, उसका प्रभाव सारे विश्व के साथ जाता है। इतना ही नहीं, प्रत्येक प्रवृत्ति का प्रभाव अखिल लोक-लोकान्तर तक पहुँचता है। क्षमा माँगने का अर्थ यह होना चाहिये कि अब जाने हुए

दोषों की पुनरावृत्ति की तो कौन कहे, उत्पत्ति ही न होगी अर्थात् पूर्ण रूप से निर्दोषता को अपना लिया है, यह भावना दृढ़ बनी रहे। यही क्षमा-याचना का वास्तविक स्वरूप है।

क्षमा माँगते ही क्षमा-प्रार्थी के जीवन में निर्दोषता की अभिव्यक्ति हो जाती है, जिसके होते ही सीमित अहम्-भाव गल जाता है और फिर की हुई भूल की स्मृति निर्जीव हो जाती है। परन्तु यदि आपने बुराई करने वालों को बिना ही माँगे क्षमा नहीं कर दिया, तो चित्त में वैर-भाव तथा प्रतिहिंसा के संस्कार अंकित रहेंगे, जो पूर्ण रूप से निर्दोषता से अभिन्नता नहीं होने देंगे। इस कारण क्षमाशील होना भी अनिवार्य है। वास्तव में क्षमा-प्रार्थी वही हो सकता है, जो क्षमाशील हो।

निर्दोषता की अभिव्यक्ति तभी सुरक्षित रह सकती है, जब किसी के प्रति वैर-भाव की गन्ध तक न रहे। यह तभी सम्भव है जब किसी के प्रति भी दोषी-भाव न रहे अर्थात् अपने प्रति होने वाली बुराई का कारण भी अपने को ही मान लिया जाय। जिन्हें दोषी मान लिया है, यदि किसी कारण उन्हें निर्दोष मानने में असमर्थता प्रतीत हो, तो उन्हें अनजान बालक की भाँति क्षमा कर दिया जाय।

कोई भी प्राणी किसी के प्रति कोई भी बुराई उस समय तक कर ही नहीं सकता, जिस समय तक वह स्वयं अपने को बुरा न बना ले। जिस बेचारे ने अपने को ही बुरा बना लिया, जिसके द्वारा यदि किसी प्रकार की अपनी क्षति हो भी गयी, तो भी वह दया का पात्र है, दण्ड का नहीं। क्षमाशील की दृष्टि से सभी अदण्डनीय है। क्षमाशील होने पर ही प्राणी क्षमा-प्रार्थी हो सकता है।

क्षमाशील होने में असमर्थता केवल अधिकार-लोलुपता के कारण ही प्रतीत होती है। यदि प्राणी दूसरों के अधिकार की रक्षा करते हुए अपने अधिकार का त्याग कर डाले तो वह बड़ी सुगमतापूर्वक क्षमाशील हो सकता है। अधिकार लोलुपता ही क्षमाशीलता का अपहरण करती है। क्षमाशीलता बल है, निर्बलता नहीं;

उदारता है, संकीर्णता नहीं। क्षमाशीलता में अभिन्नता है, भिन्नता नहीं। क्षमाशील वही हो सकता है, जो सभी में अपने समान आत्म-स्वरूप का दर्शन करता है। जिसके जीवन में से प्रतिहिंसा की भावना का अत्यन्त अभाव हो गया है, जो सभी का हित चाहता है और अपराधी से अपराधी की भी प्रसन्नता जिसे अभीष्ट है, अथवा यों कहो कि पतित से पतित प्राणी में भी जिसे पवित्रता का दर्शन होता है, अर्थात् जिसमें दोष देखने की दृष्टि ही नहीं है, वही क्षमाशील हो सकता है।

अपने प्रति होने वाले अन्याय से क्षुभित तथा क्रोधित न होने से क्षमाशील का बल बढ़ता है, अथवा यों कहो कि क्षमाशील प्राणी को अपने प्रति होने वाले अन्याय में भी अन्याय करने वाले प्राणी का प्रेम ही प्रतीत होता है। जब उसका मन क्षुभित नहीं होता, तब वह दुःखी नहीं होता। उसके दुःखी न होने से प्रकृति में क्षोभ नहीं होता, जिससे अन्याय करने वाले का अहित नहीं होता और वह स्वतः निर्दोष हो जाता है, अथवा यों कहो कि क्षमाशीलता उसके हृदय को बदल देती है। यदि प्राणी किसी से किसी प्रकार के सुख की आशा न करे और किसी का बुरा न चाहे तो उसके जीवन में क्षमाशीलता की अभिव्यक्ति हो जाती है।

क्षमाप्रार्थी वही हो सकता है, जो की हुई भूल को किसी भी प्रलोभन तथा भय से दुहराता नहीं है अपितु पूर्ण निर्दोषता ही जिसे अभीष्ट है, अथवा यों कहो कि जो अपना सर्वस्व देकर निर्दोष रहना चाहता है। निर्दोषता को सुरक्षित करने के लिए जिसे बड़ी-से-बड़ी कठिनाई सहन करने में प्रसन्नता होती है, वही सच्चा क्षमाप्रार्थी है।

क्षमा माँगने तथा क्षमा करने से चित्त शुद्ध हो जाता है, जिसके होते ही निर्दोषता तथा निर्वैरता जीवन में स्वाभाविक आ जाती है। निर्दोषता आते ही अकर्तव्य की उत्पत्ति नहीं होती और कर्तव्य कर्तृत्व के अभिमान से रहित स्वतः होने लगता है।

क्षमाप्रार्थी में जब निर्दोषता की अभिव्यक्ति हो जाती है, तब किए हुए दोष की स्मृति स्वतः मिट जाती है और फिर उसमें पर-दोष दर्शन की दृष्टि उत्पन्न ही नहीं होती; जिससे वह स्वभाव से ही क्षमाशील हो जाता है। निर्दोषता की अभिव्यक्ति से सीमित अहम्भाव गल जाता है और पर-दोष-दर्शन की दृष्टि का अन्त होने पर चित्त सदा के लिए शुद्ध, शान्त तथा स्वस्थ हो जाता है। अतः क्षमा माँगने तथा करने में ही चित्त की शुद्धि निहित है।

## आए हैं दिन पावन

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: होठों को छू लो तुम.....)

आए हैं दिन पावन, पर्वराज पर्युषण के।  
जिनवाणी के अमृत से, सब रज-मल धोने के।।टेर।।  
इस ज्ञान की गंगा में, डुबकी को लगाना है।  
दर्शन के पुष्पों से, आत्म महकाना है,  
सद्गुणों के रत्नों से जीवन को सजाने के.....।।1।।  
चारित्र की चाँदनी से, अन्तर चमकाना है,  
तप में करके पुरुषार्थ, कर्मों को खपाना है।  
रसना पे विजय पायें, मन को वश में करके.....।।2।।

धन पाया है पुण्य से जो, सद्मार्ग लगाना है,  
शुभ भावना बसे मन में, शुभ ध्यान ही ध्याना है।  
आसक्ति को तोड़ेंगे, गुरु वचनों को सुन करके.।।3।।  
ले जाते अधोगति में, उन भोगों को त्यागना है,  
आराधें ब्रह्मचर्य को, उत्कृष्ट यह साधना है।  
जीवन उन्नत करेंगे, जिन आज्ञा में चल करके..।।4।।  
खामेमि सव्वे जीवा, उद्घोष गुञ्जाना है,  
मिती मे सव्वभूएसू, दिल से अपनाना है।  
कर्मों को करें हल्का, क्षमा को धारण करके....।।5।।

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर  
(राज.)

## भावी आचार्य दिवस पर हार्दिक मङ्गलकामना

श्री नौरत्नमल मेहता

महान् अध्यवसायी एवं भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का जन्म विक्रम सम्वत् 2011 श्रावण शुक्ला नवमी, रविवार, तदनुसार 8 अगस्त, 1954 को संघ-सेवी, सन्त-सेवी सुश्रावक वीरपिता श्री पारसमलजी लोढ़ा के घर-आँगन में सेवाभावी सुश्राविका वीरमाता श्रीमती सोहनकँवरजी की रत्नकुक्षि से सूर्यनगरी-जोधपुर के यशस्वी क्षेत्र महामन्दिर में हुआ।

प्रज्ञा और प्रतिभा के धनी बालक महेन्द्र ने जोधपुर में बी.कॉम. तक शिक्षण प्राप्त किया, साथ-ही-साथ अपनी रुचि और भावना से गुरु हस्ती की चरण-सेवा में जब भी अवसर मिलता ज्ञान-वृद्धि का प्रयास करते-करते युवाहृदय ने सामायिक-प्रतिक्रमण एवं बोल-थोकड़ों के साथ कुछ आगम-गाथाओं का अभ्यास भी कर लिया।

सन्त-जीवन शान्त होता है। फिर, आध्यात्मिक योगी आचार्य श्री हस्ती के अनेकानेक गुणों से प्रेरित होकर जीवन समर्पित करने की ठान ली। युवक श्री महेन्द्रजी ने अपने माता-पिता और अग्रज श्री जतनराजजी तथा श्री उम्मेदराजजी आदि पारिवारिक-परिजनों से दीक्षित होकर रत्नसंघ तथा जिनशासन की सेवा करने की पुरजोर भावना व्यक्त की।

संस्कारवान माता-पिता की गुरु हस्ती के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति शुरू से थी ही, फिर अपना महेन्द्र रत्नसंघ में प्रब्रजित होकर कुछ करना चाहता है तो उसे आज्ञा-अनुमति दे दी जाए, ऐसा विचार किया।

जोधपुर के उम्मेद स्टेडियम में विक्रम सम्वत् 2032 की वैशाख शुक्ला चतुर्दशी 24 मई, 1975 को

आचार्यश्री हस्ती ने दीक्षा-पाठ देकर दीक्षित किया।

गुरु हस्ती के सुशिष्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने गुरु-चरण-सेवा में रहकर शास्त्र-ज्ञान और मुनि-जीवन का अभ्यास किया। ज्ञानी गुरु की सेवा-सन्निधि में गुण ग्रहण की भावना होने से गुरु के सुशिष्य में सजगता बढ़ती गई। सरलता-सादगी-सहिष्णुता के साथ विनय-विवेक-विनम्रता से सामाचारी का सम्यक् आचरण तो होता रहा। फिर आज्ञा-आराधन से नवदीक्षित मुनिश्री की साधना बढ़ती गई। गुरु हस्ती ने अपने सुशिष्य के अथक उद्यम को देखकर उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महान् अध्यवसायी की पदवी से सम्बोधित किया।

आचार्यश्री हस्ती के संलेखना-सथारे के पश्चात् संघ व्यवस्था हेतु आचार्यश्री हीरा ने जोधपुर में विक्रम सम्वत् 2048 ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी, 2 जून, 1971 को चादर महोत्सव के माध्यम से रत्नसंघ का नेतृत्व सम्भाला। संघनायक पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति भी गुरु हस्ती की तरह मुनिश्री ने तन-मन और समर्पित भाव से सहयोग बनाए रखकर पूरी सजगता बनाए रखी। लोगों ने देखा और पाया कि गुरु की तरह गुरुभ्राता के प्रति आज्ञा-अनुशासन में रहना और अग्लान भाव से सेवा में समर्पित रहना कोई महेन्द्रमुनि से सीखे।

आचार्य श्री हीरा आगमज्ञ हैं, प्रवचन-प्रभाकर हैं, व्यसन-मुक्ति के प्रबल-प्रेरक हैं, जिनशासन गौरव हैं तो वर्तमान में आपश्री स्थानकवासी परम्परा के ज्येष्ठ आचार्य भी हैं। आपश्री का अधिकतर समय ध्यान-मौन में, त्याग-तप में, साधना-आराधना में और शास्त्र-स्वाध्याय में लगता है। आपश्री अपनी ओर से न तो

किसी गुरुभक्त को और न ही किसी संघ पदाधिकारी को बुलाते हैं और न ही उनसे विशेष चर्चा करते हैं। हाँ, संघहित के सन्दर्भ में विशेष बात हो तो जरूर सुनते हैं।

आचार्य श्री हीरा ने अपने अधिकार नव-मनोनीत भावी आचार्यश्री को सम्भला दिए हैं, चाहे प्रवचन हो या प्रत्याख्यान अथवा गुरुमन्त्र ही क्यों न हो, सब भावी आचार्यश्री के कर्धों पर है। हाँ, संघहित की बात आपश्री संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. तक अवश्य पहुँचाते हैं और जहाँ भी गुरुदेव का परामर्श या मार्गदर्शन आवश्यक हो, भावी आचार्यश्री उनसे लेते रहते हैं।

संघ की सुन्दर व्यवस्था के लिए आचार्य श्री हीरा अपने उत्तराधिकारी को समय-समय पर बराबर प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन देते रहते हैं। कहना चाहिए कि आचार्य श्री हीरा की सन्निधि में भावी आचार्यश्री का सुन्दर और सुव्यवस्थित विकास हो रहा है।

हम भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के भावी आचार्य दिवस पर अन्तर्मन से हार्दिक शुभकामना और मंगलभावना व्यक्त करते हैं। आपश्री स्वस्थ रहें, समाधिस्थ रहें और संघहित में आपकी गति-प्रगति प्रशस्त हो, यही शुभेच्छा है।

-9, पारस, शिवशक्ति नगर, रोड़ नं. 1,  
महामन्दिर, जोधपुर-342010 (राजस्थान)

## तुम मुझसे पहले मत जाना

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

राजेश और उनकी पत्नी मीना कुछ दिन पहले कश्मीर का पर्यटन करके वापस लौटे थे। जब से राजेश रिटायर्ड हुए हैं, महीने में 10-15 दिन बाहर चले जाते हैं। कभी सन्तों की सेवा में तो कभी प्रकृति के अद्भुत नज़ारों का आनन्द लेने। इस बार वे कश्मीर जाकर आये थे। उनका ट्रिप बहुत अच्छा रहा, परन्तु आते-आते उनकी पत्नी को सर्दी, बुखार हो गया और वह काफी कमजोर हो गई थी।

मीना की तबीयत खराब देखकर राजेश घबरा गया। उसने मीना का हाथ थामकर कहा-“चाहे तुम मुझे स्वार्थी कहो, पर तुम मुझसे पहले मत जाना। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकूँगा।”

उसे अपने दोस्त रवि का खयाल आया कि एक साल पहले उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था, तब से ही वह उदास और बुझा हुआ रहता है। औरतें तो अपना सुख-दुःख किसी के भी साथ बाँट लेती हैं, कहकर जी हल्का कर लेती हैं, परन्तु आदमी अपने दिल की बात दिल में ही रखता है। औरतें

जीवन साथी की मृत्यु का सदमा सह लेती हैं, परन्तु आदमी के लिए वह बहुत मुश्किल होता है।

मीना ने कहा-“मृत्यु पर किसी का जोर नहीं। मैं हम दोनों की लम्बी आयु की प्रार्थना करूँगी, पर फिर भी मेरा आयुष्य कम रहा और मैं जल्दी चली गई तथा आप यह दुःख सहन न कर सके तो आप अपने जीवन की दिशा ही मोड़ लेना, हो सके तो साधु-जीवन अङ्गीकार कर लेना। धर्म की शरण ही सब दुःखों निवारण है।”

हालांकि साधु-जीवन अङ्गीकार करना इतना आसान नहीं होता, परन्तु कभी-कभी पति-पत्नी का एक-दूसरे के लिए अथाह प्रेम कुछ भी करवाने के लिए काफी होता है।

पति-पत्नी जीवन की सन्ध्या वेला में एक-दूसरे को धर्म की ओर उन्मुख करने में एक बड़ा किरदार निभा सकते हैं। जिससे न केवल यह जीवन, बल्कि अगला जन्म भी सुधर सकता है।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मॉस  
रोड़, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)



## विश्व कल्याण के लिए करें तय समय पर एक प्रार्थना

श्री जयदीप ढङ्गा

आज हम हिंसा, युद्ध, दुष्कर्म, लूट-खसोट, भ्रष्टाचार, भुखमरी आदि समस्याओं और कोरोना जैसी जानलेवा महामारियों से जूझ रहे हैं। ये किसी एक देश की समस्याएँ नहीं हैं, इनसे पूरा विश्व पीड़ित है। जब कुछ घटनाओं पर हमारा जोर नहीं चलता है और अपने दुःखों से उबर नहीं पाते हैं, तो उस बुरे दौर में धर्म की याद आती है। मानव धर्म की शरण में जाकर अपनी तकलीफें दूर करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगता है। आज जब पूरे विश्व पर संकट है, धरती के प्रायः सभी प्राणी दुःखी हैं तो क्या यह सम्भव है कि हम सब एक निश्चित समय में सर्वजीव कल्याण हेतु प्रार्थना करें। जब समस्या भी सब जगह एक-सी है, तो क्या कोई प्रार्थना भी सबके लिए समान हो सकती है। यदि पूरे विश्व के मानव एक निर्धारित समय पर एक निश्चित प्रार्थना करते हैं तो वह अधिक प्रभावशाली होगी। सबकी दुआओं का असर ज्यादा होगा। एक साथ प्रार्थना करने पर प्रकृति में तेजी से बदलाव होगा। यह एकता का प्रतीक भी होगी। वह प्रार्थना विभिन्न देश, जाति, धर्म, संस्कृति और परम्पराओं से परे, प्राणी मात्र के लिए होगी। प्रातः, दोपहर, रात्रि का कोई भी समय निश्चित किया जा सकता है।

परमहंस योगानन्द की अमरीकी शिष्या दया माता के अनुसार 'जब अनेक लोग मिलकर एकाग्रता के साथ शांति, प्रेम, मंगल कामना और क्षमा के विचार से प्रार्थना करते हैं, तो इससे विशाल ऊर्जा का निर्माण होता है। यदि सभी लोग ऐसा करने लगे, तो शुभ भावनाओं की तरंगें इतनी अधिक शक्तिशाली होंगी कि सारी दुनिया उससे रूपान्तरित हो जाएगी। अच्छा बदलाव आएगा। जब सहस्रों व्यक्तियों की प्रार्थनाएँ एकत्रित होती हैं तो

उनसे उत्पन्न होने वाली शान्ति एवं रोग निवारण की दिव्य शक्तिशाली तरंगों से इच्छित परिणाम मिलते हैं। इसी लक्ष्य को पाने के लिए गुरुदेव परमहंस योगानन्दजी ने विश्वव्यापी प्रार्थना मण्डल की शुरुआत की थी। यह प्रार्थना केवल अपने लिए नहीं है, दूसरों के लिए भी है। आप पूरे विश्व के कल्याण के लिए कर रहे हैं। यह शुभेच्छा की भावना है, जो सभी प्राणियों में समान रूप से रहेगी। हम अच्छी भावना से जो विचार सोचते हैं, प्रार्थना करते हैं, तो वह जरूर फलदायी होती है।

पूरी दुनिया एक साथ निश्चित समय में प्रार्थना कर सके, इसके लिए समय जीएमटी के आधार पर तय किया जा सकता है। जीएमटी यानी ग्रीनविच मीन टाइम। ग्रीनविच लन्दन में है। पूरी दुनिया के लिए जीएमटी को मानक मानकर यहाँ से समय का निर्धारण किया जाता है। जीएमटी को 1972 की 1 जनवरी को एटोमिक टाइम से बदला गया था। इसे कार्ऑर्डिनेटिड यूनिवर्सल टाइम (यूटीसी) कहा जाता है। इससे एटोमिक समय (एटोमिक घड़ियों से प्राप्त) और सौर समय के बीच आने वाले अन्तर की गुञ्जाइश नहीं रहती। यूटीसी को जुलू टाइम भी कहते हैं।

विश्वव्यापी प्रार्थना में हम क्या शामिल कर सकते हैं? पहला अहिंसा, किसी का मानसिक और शारीरिक नुकसान नहीं करें। दूसरा-दूसरों की जरूरतों के लिए संवेदनशीलता एवं उनकी मदद और तीसरा-जाने अनजाने हुई गलतियों के लिए क्षमायाचना। मेरा विचार, मेरी भावना, मेरे शब्द, मेरे क्रिया-कलाप किसी को नुकसान नहीं पहुँचाएँ। इस धरती पर मेरे साथ रहने वाले सभी प्राणी खुश रहें। मैं उन्हें परेशान नहीं करूँगा और वे मुझे परेशान नहीं करें। सभी प्राकृतिक शक्तियाँ

मर्यादा और सन्तुलन में रहें। पूरी दुनिया शान्ति, प्रेम और करुणा से रहे। इस प्रार्थना से हमने जो अब तक दूसरों को नुकसान पहुँचाया है, उसका अपराध भी शायद कम हो जाए। हममें स्वार्थ भावना नहीं रहेगी। इससे हमारी इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, उत्साह और मानसिक शान्ति बढ़ेगी। हम पवित्रता की ओर बढ़ेंगे।

प्रार्थना अंग्रेजी भाषा में लिखना उचित रहेगा क्योंकि यह विश्वभर में समझी और लिखी जाती है।

O Lord !

Lead us from violence to non-violence

Our words, thoughts, feelings and action never hurt others

Help us to keep balance and harmony in eco-system.

O Lord !

Lead us

From war to peace, justice and happiness

From hatred to love, compassion and benevolence

From despair to hope

From hunger to food

From all sorts of pandemics to hale and hearty life.

O Lord !

Please forgive us if we have done anything wrong to others.

हम हिन्दी में भी प्रार्थना कर सकते हैं -

हे प्रभो!

हम हिंसा की मनोवृत्ति से मुक्त हों और हमें सदबुद्धि प्राप्त हो ताकि अहिंसा के मार्ग पर चल सकें।

हम अपने शब्दों, विचारों, भावनाओं और व्यवहार से कभी किसी का नुकसान नहीं करें।

स्वार्थ से ऊपर उठकर प्रकृति में सन्तुलन और समन्वय बनाए रखें।

हे प्रभो!

हम युद्ध से बचें ताकि शान्ति, न्याय और सुकून का जीवन जी सकें।

हम किसी से नफरत नहीं करें। प्रेम, करुणा और परोपकार के रास्ते पर चलें।

हम निराशा और अवसाद से उबरें। हमें हमेशा आशा और उम्मीदों की रोशनी मिले।

हे प्रभो!

हम सभी बीमारियों और महामारियों से दूर चुस्त-तन्दुरुस्त जीवन जीयें।

हम भुखमरी से उबरें और दुनिया में कोई भूखा नहीं सोए। यदि हमने अपने जीवन में किसी का बुरा किया है तो वे कृपया हमें क्षमा करें।

-ढङ्गा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

(राजस्थान)

### सद्गुरोः प्रसादात्

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सर.

❧ देर न कर, छोड़ दे पर।

चल निज घर, बन जा अमर॥

❧ भेद-ज्ञान से ही सर्व दुःख दूर होते हैं।

अज्ञानी तो जीवन व्यर्थ खोते हैं॥

❧ ज्ञायक को भूलना।

अर्थात् दुःख के झूले में झूलना॥

❧ निज को नमस्कार।

निज का परिष्कार॥

❧ मूढ़ अनित्य की ओर दौड़ता है।

समझदार अनित्य को छोड़ता है॥

❧ जो लोग पहले व्यर्थ की बातें सुनते हैं,

वे फिर संकल्प-विकल्प के जाल बुनते हैं।

जो लोग अध्यात्म की बातें सुनते हैं,

वे कर्म की रज को धुनते हैं॥

❧ धन-दौलत की गुलामी।

यह है जीवन की नीलामी॥

-संकलित

## अनमोल मोती (5)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

65. मात्र आहार के त्याग रूप उपवास को यदि धर्म माना जाए तो 33 सागरोपम की स्थिति वाले देवों को विशेष लाभ होना चाहिए, क्योंकि वे 33 हजार वर्ष बाद आहार करते हैं। उपवास करने वाला जीव मन्द कषाय रूप परिणमता है तो धर्म होता है।
66. पूर्वकर्म के विपाक में होने वाली शरीर की क्रिया में अहम् बुद्धि (कर्तृत्व का भाव ) करके जीव मात्र संसार ही बढ़ाता है। कर्तृत्व के भाव में राग-द्वेष की नियमा है।
67. ज्ञानियों ने अन्तरंग परिग्रह (कषाय) के त्यागी को मोक्ष मार्गी कहा है। बाह्य परिग्रह (धन-सम्पत्ति आदि) का त्यागी कर्तृत्व के अहम् से युक्त हो सकता है। अन्तरंग परिग्रह का त्याग करने वाला बाह्य परिग्रह का त्यागी हो ही जाता है।
68. तत्काल क्षमायाचना सर्वश्रेष्ठ क्षमायाचना है।
69. उदय को नहीं टाला जा सकता, पर बन्ध को टाला जा सकता है।
70. सच्चे देव, गुरु, शास्त्र वे ही होते हैं जिनमें वीतरागता दिखाई दे। वीतरागता जानने के लिए किसी उपक्रम की आवश्यकता नहीं, स्वतः दिखाई देती है।
71. 'एगे आया' सूत्र के अनुसार द्रव्य दृष्टि से सभी आत्माएँ एक समान होकर भी जन, जैन और जिन रूप पर्यायें भिन्न-भिन्न हैं। जन भवानन्दी, जैन ज्ञानानन्दी और जिन आत्मानन्दी है।
72. मन अच्छे या बुरे का निर्णय कर सकता है, पर सत्य और असत्य का निर्णय तो ज्ञान ही कर सकता है।
73. जिस प्रकार थर्मामीटर बुखार बताता है, किन्तु न थर्मामीटर में बुखार है और न थर्मामीटर से बुखार है, उसी प्रकार क्रिया में न विकार है, न क्रिया से विकार है, क्रिया मात्र विकार को बताती है।
74. भविष्य में अपनी अनन्तकालीन यात्रा को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान जीवन के 10-20-30 वर्षों में हुए अन्याय और अनीति के कार्यों पर गहराई से चिन्तन कर उनका निषेध करें अन्यथा पञ्चेन्द्रियपने में गृहीत विषय-विकार एकेन्द्रिय के मेहमान बना देंगे।
75. शरीर से हुए अपराध पर सरकार, वचन से हुए अपराध पर समाज दण्ड देते हैं, किन्तु मन से हुए अपराध पर सिर्फ कर्म ही दण्ड देता है।
76. व्यवहार का लोप करोगे तो तीर्थ का और निश्चय का लोप करोगे तो तत्त्व का लोप हो जायेगा।
77. पर पदार्थों में सुख है ही नहीं, किन्तु यह जीव पर पदार्थों में सुख मानकर राग-द्वेष करता हुआ चौरासी लाख योनियों में भटकता है।
78. संसार में अनन्तानन्त पदार्थों के परिणमन की बाढ़ प्रतिसमय बह रही है। जो जीव बाढ़ को रोकने का प्रयास करेगा वह तो निश्चित डूबेगा। जो जीव किसी ऊपरी स्थान का सहारा लेगा अर्थात् समता में रहेगा वह बाढ़ शान्त होने पर अपने इच्छित स्थान (मोक्ष) को प्राप्त कर लेगा।
79. आत्म-लक्ष्य के बिना जो भी क्रिया होती है उसमें अहंकार रहता है।
80. कर्मदेव कहता है कि मैं सभी जीवों को इच्छानुसार नचाता हूँ, जबकि धर्मदेव कहते हैं कि कर्मदेव! तुम नहीं नचाते बल्कि जीव तो अपनी भूल से ही नाच रहा है, तुम अहंकार मत करो, क्योंकि तुम्हारे उदय में रहते-रहते भी अनन्त साधकों ने तुम्हें पराजित कर सिद्धि को प्राप्त किया है।



## हिंसा एवं युद्ध से समाधान नहीं

डॉ. ओ. पी. चपलदे (सी.ए.)

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। विश्व में जहाँ रूस साम्यवाद का पुरस्कर्ता है वहाँ भारत अहिंसा के सिद्धान्त का पुरस्कर्ता है। साम्यवाद में अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए हिंसा को साधन के रूप में मान्यता दी गई है। किन्तु दिल्ली घोषणा-पत्र पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीवजी गाँधी और सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचोव ने 'स्टारवार' की जगह 'स्टारपीस' कार्यक्रम को शुरू करने की अपील की और साथ ही पिछली सदी के अन्त तक सभी आणविक अस्त्रों को विनष्ट करने का प्रस्ताव दोहराया तथा स्टारपीस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु दस सिद्धान्तों वाले घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किये। इस घोषणा-पत्र में अहिंसा को सामाजिक जीवन का आधार बनाने तथा अहिंसक विश्व का निर्माण करने का संकल्प व्यक्त हुआ।

### हिंसा का प्रयोग एक हथियार के रूप में

हिंसा के द्वारा लक्ष्य की पूर्ति की जा सकती है, इस धारणा के आधार पर साम्यवाद में उसे समस्या का समाधान माना गया है एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिंसा को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया जा रहा है।

आज पूरे विश्व में हिंसा का ताण्डव मचा हुआ है। पूर्व में प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध की भयंकर त्रासदी का अनुभव करने के पश्चात् भी हम देख रहे हैं कि रूस और यूक्रेन में पिछले लगभग चार माह से भयंकर युद्ध चल रहा है जिससे दोनों देशों में अपार जन-धन की हानि हुई है। अन्य देश भी अपनी सुरक्षा के लिए हथियारों को जमा कर रहे हैं तथा युद्ध के भय से आक्रान्त हैं। मानव जाति के विकास के बारे में उपाय नहीं सोचकर केवल युद्ध के भय से आक्रान्त हैं। आज कई देशों के पास ऐसे-

ऐसे भयंकर परमाणु आदि हथियार उपलब्ध हैं, जिनसे पूरे विश्व को कुछ ही क्षणों में नष्ट किया जा सकता है। किन्तु आज भी चिन्तनशील व्यक्ति इस बात से चिन्तित हैं कि यदि विश्व में विशाल जन-धन की हानि हो गई तो जिस उद्देश्य के लिए युद्ध किया जा रहा है उसका उपभोग कौन कर पायेगा? एक ओर व्यक्ति आज भी रोटी, कपड़ा और मकान के लिए चिन्तित है, वहीं दूसरी ओर समृद्ध देश हथियारों की शक्ति बढ़ाने में अथाह धनराशि खर्च कर रहे हैं।

### क्या युद्ध से विश्व में शान्ति सम्भव है?

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि क्या युद्ध से शान्ति को प्राप्त किया जाना सम्भव है? क्या आज भी अहिंसा से विश्व में शान्ति सम्भव है? आज की इस अणु शस्त्रों की होड़ में दो ही विकल्प सामने हैं या तो इस दौड़ की समाप्ति या मानवजाति की समाप्ति। दूसरा विकल्प कितना भयावह है और कितना खतरनाक है, उसकी कल्पना करते ही मानव बुद्धि विभ्रान्त हो जाती है। आखिर यह होड़ किसलिए? क्या इस होड़ में अपने आपको कोई सुरक्षित रख पायेगा? यदि नहीं रख पायेगा तो यह मानव जाति के विनाश का संकल्प क्या कोरी मूर्खता नहीं है? इस मूर्खता का बोझ कुछ राजनेता और कुछ सैन्य अधिकारी उठा रहे हैं और आश्चर्य है कि सारी जनता उनके साथ आँख मिचौनी खेल रही है। ऐसी स्थिति में भगवान महावीर के दिये गये अहिंसा के सिद्धान्त के पालन से ही विश्व में शान्ति सम्भव है। मानवजाति का अस्तित्व और परमाणु अस्त्र दोनों को एक साथ नहीं चलाया जा सकता है। अहिंसा के पालन से ही न केवल मानव जाति वरन् सब जीवों का कल्याण सम्भव है एवं इसका पालन ही मानव-जीवन का एक सहारा है।

**युग की समस्या क्रूरता**

इस युग की मुख्य समस्या क्रूरता है जो मानव के करुणा के भावों को लीलती जा रही है। यह एक ज्वलन्त प्रश्न है कि क्या करुणा के अभाव में मनुष्य रह पायेगा ?

**शस्त्र का निर्माण मस्तिष्क में**

भगवान महावीर ने बताया है कि शस्त्र का निर्माण सर्वप्रथम मानव के मस्तिष्क में होता है। लोहे आदि से बनने वाले शस्त्र निर्जीव शस्त्र हैं। पहले हमारे दिमाग में सजीव शस्त्र का निर्माण होता है एवं उसके पश्चात् निर्जीव शस्त्रों का निर्माण होता है। प्रभु महावीर ने उस सजीव शस्त्र का निर्माण न करने का मार्गदर्शन दिया। जब सजीव और निर्जीव दोनों प्रकार के शस्त्र निर्मित नहीं होते हैं उस स्थिति में युद्ध की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। जिस प्रकार युद्ध मनुष्य के मस्तिष्क में प्रारम्भ

होता है वैसे ही शान्ति भी मनुष्य के मस्तिष्क में ही प्रारम्भ होती है।

आज हिंसा का प्रशिक्षण तो व्यापक स्तर पर हो रहा है, किन्तु अहिंसा के प्रशिक्षण की कोई तैयारी नहीं है। फिर अहिंसा के विकास की बात कैसे सोची जा सकती है ?

पूर्व शताब्दी में हम दो महायुद्धों के प्रभावों से परिचित हो चुके हैं, किन्तु सही हल निकालने में असफल रहे हैं। अतः अब एक प्रयास विश्व शान्ति हेतु अहिंसा और अनेकान्तवाद के सिद्धान्तों को अपना कर किया जाना ही उचित है, तब ही हम न केवल मनुष्य जाति वरन् अन्य प्रजाति के जीवों की भी रक्षा कर सकते हैं।

-145, प्रथम मंजिल, माछला मार्ग, पारस महल  
होटल के सामने, एच.डी.एफ.सी. बैंक के पास,  
उदयपुर-313002 (राज.)

**मानवता की राह**

डॉ. रमेश 'मयंक'

भोग, अर्थ, आराम को छोड़े,  
विवेक, नीति, धर्म से जोड़े।  
पशुता, दानवता को तजकर,  
मानव के हित मन मोड़े।।  
उपभोक्ता वादी संस्कृति तो  
भौतिक अन्धी दौड़ कहाती,  
धर्म में आस्थाएँ जगाकर  
मर्यादाओं का पाठ पढ़ाती।  
श्रेष्ठ चिन्तन की अपेक्षाएँ,  
मानवता की राह अपनाये।  
जीवन उपवन में फूल चुने,  
दामन को काँटों से बचाये।।1।।  
बड़े भाग मनुज जन्म पाया  
साधना से मोक्ष तक आया,  
दुःख, द्वेष, राग, क्लेश मिटाने  
मन गुरु की शरण में लगाया।  
आसुरी वृत्तियों को त्यागे,

तप-संयम से आत्मा जगाए।  
धरती पर पशु-बोझ न बने,  
लोक-परलोक भी सुधर जाए।।2।।  
आदर्श मय रहता जीवन  
तब गुरु की कृपा मिल जाती,  
दैहिक दैविक भौतिक कष्टों  
की व्याधियों से मुक्ति मिल पाती।  
सब रहे आपस में प्रेम से,  
सत्य, दान, दया अपनाये।  
जिनशासन में निर्भय हो सब,  
भय रोग शोक नहीं सताये।।3।।  
आहार विचार में शुद्धत्व  
अशक्तों को सशक्त बनाए,  
शिशु हो प्रसन्न चित्त नीरोगी  
नर-नारी भय रहित हो जाए।  
जड़ से मिटे कपट धूर्तता, ज्ञानी पण्डित आदर पाये।  
प्रजा हो प्राण प्रिय नृप की,  
तीनों लोकों में हर्ष मनाये।।4।।

-बरी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

## अदृश्य गुलामी से छुटकारा है सच्ची स्वतन्त्रता

श्री त्रिलोकचन्द जैन

देश में स्वतन्त्रता का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है और इस माह स्वतन्त्रता दिवस भी उपस्थित होने वाला है। हम स्वतन्त्रता का महोत्सव मना रहे हैं? क्या हम वाकई स्वतन्त्र है? क्या हमें कोई बन्धन नहीं है? ऐसे अनेक प्रश्नों पर विमर्श करना आवश्यक है।

15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ। भारत स्वतन्त्र हुआ राजतन्त्र से, आक्रान्ताओं से और विदेशी ताकतों से। अनेक भारतीयों का सपना साकार हो गया और विश्व में स्वतन्त्र भारत का उदय हुआ। दृश्य गुलामी समाप्त हो गई और लोकतन्त्र-प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। महात्मा गाँधी ने अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों के सहयोग से देश को स्वतन्त्रता का वरदान दिया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन एवं करो या मरो के नारे ने अंग्रेजों की नींव को हिलाकर उन्हें भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। देश के लिए जीवन समर्पित करने वाले सेनानियों के बलबूते पर आजाद भारत का सपना अनेक बलिदानों की पृष्ठभूमि पर साकार हुआ। अन्ततः देश स्वतन्त्र हुआ, दृश्य पराधीनता समाप्त हुई। प्रत्येक भारतीय भी अपने आपको स्वतन्त्र भारत का नागरिक कहलाकर प्रसन्न है।

स्वतन्त्रता के अमृत महोत्सव पर मात्र दृश्य गुलामी से स्वतन्त्रता की ही बात करें तो यह अधूरी चर्चा ही होगी। सदियों से सन्त-महात्मा अध्यात्म में रमण कर, तपस्या से तपकर कर्मों की अदृश्य गुलामी से स्वतन्त्र होने के प्रयास में संलग्न हैं, आत्म-स्वातन्त्र्य के लिए तप रहे हैं। जीवन के सच्चे सुख का आस्वादन करने हेतु तत्पर हैं, साधना-आराधना से सच्ची स्वतन्त्रता का स्वाद चखना चाहते हैं, उस अध्यात्म

गगन में स्वच्छन्द विचरण करने के उत्सुक साधकों की सच्ची स्वतन्त्रता का कथन करना आज प्रासंगिक ही है।

दृश्य गुलामी से आजाद होने का जैसा प्रयास सेनानियों ने किया वैसा ही पुरुषार्थ अदृश्य गुलामी से आजाद होने का करेंगे तब इस जीव को सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। यह अदृश्य गुलामी है कर्मों के द्वारा आत्मा को जकड़े रखना। कर्मों के कारण आत्मा का भटकना। कर्मों के कारण बन्धन में बँधी यह आत्मा जब स्वतन्त्र होकर सिद्ध बनेगी तब आत्मा की स्वतन्त्रता कही जायेगी।

कर्मों से जकड़ी आत्मा पराधीनता के झूले में झूल रही है। इन कर्मों की अदृश्य गुलामी से आजाद कराने के लिए सर्वप्रथम जीव को आत्म-स्वतन्त्रता की तड़प जगाना जरूरी है। जब तक कर्मों की अदृश्य पराधीनता बन्धन रूप, कारागृह रूप प्रतीत नहीं होती तब तक आत्म-स्वतन्त्रता की बात करना उचित नहीं है। आत्मा को ज्ञान-दर्शन-सुख-शक्ति की परिपूर्णता मिलना, चार गति की भटकन से आजादी मिलना, भौतिक सुख-दुःख से अतीत शाश्वत सुख की प्राप्ति होना आत्मा की स्वतन्त्रता है।

इस कर्मों से बँधी आत्मा की अदृश्य गुलामी जब जीव को असह्य प्रतीत होती है तब वह स्वतन्त्रता सेनानियों के द्वारा दृश्य गुलामी से आजाद होने के जैसा अदम्य प्रयास करता है। अन्तर कुछ भी नहीं है जैसे आन्दोलन उन्होंने दृश्य गुलामी से आजाद होने के लिए किये, वैसे ही आन्दोलन इन कर्मों से आजाद होने के लिए भी करना होगा।

असहयोग आन्दोलन-यह भारत की स्वतन्त्रता हेतु चलाया जाने वाला प्रथम जन आन्दोलन था।

स्वराज की माँग का यह आन्दोलन हमें अपनी अदृश्य गुलामी से आजादी हेतु करना ही होगा। पूर्व बँधे कर्मों का उदय, उस उदय से प्रभावित होना, फिर पुनः कर्म का बन्ध होना, यह चक्र अनादिकाल से चला आ रहा है। जरूरत है कर्म के उदय में दुर्भाव, दुश्चिन्तन का असहयोग करने की। यदि हम उदय से अप्रभावित रहे उस उदय में असहयोग कर दिया तो पुनः संसार में भटकाने वाले नवीन कर्म का बन्ध नहीं होगा।

अदृश्य गुलामी से स्वतन्त्र होने का यह प्रथम आन्दोलन हमें अपने ही बाँधे हुए कर्मों के उदय आने पर करना है। यदि कर्म के उदय में उसे सहयोग नहीं करेंगे तो वह उदय में आकर बिना अशुभ बन्ध कराये ही समाप्त हो जायेगा और अनादिकाल के उदय, बन्ध के चक्र की कड़ी को विराम मिलेगा। जिस प्रकार असहयोग करने पर पड़ौसी भी अपने से व्यवहार नहीं रखता है, उसी प्रकार कर्मों के उदय में कर्म के बन्ध का असहयोग करेंगे तो कर्मों से घनिष्ठता का सम्बन्ध कमजोर हो जायेगा। आत्मा से कर्मों के सम्बन्धों का कमजोर होना ही आत्म-स्वतन्त्रता में प्रथम आन्दोलन का सफल होना है।

**सविनय अवज्ञा आन्दोलन-अहिंसा** को अपनाकर स्वतन्त्रता-सेनानियों ने ब्रिटिश सरकार के कानूनों, आदेशों का प्रतिकार विनयपूर्वक किया। अहिंसक पद्धति के अनुसार विनम्रतापूर्वक तिरस्कार अथवा उल्लंघन करना सविनय अवज्ञा है। कर्म के प्रवाह के विपरीत चलना, कर्म जैसा चाहे उसके विपरीत सहजता से प्रवृत्ति करना भी कर्मों के प्रति सविनय अवज्ञा है। कर्मों का उदय अनुकूलता में अहंकार और प्रतिकूलता में दीनता के रूप में प्रभावित करता है। कर्म चाहते हैं कि प्राणी अहंकार करें अथवा दीनता-हीनता लाये, लेकिन कर्मों का प्रतिकार विनयपूर्वक करने पर ये कर्म प्रभावहीन हो जाते हैं। कर्मों का बल तब तक ही है जब तक हमारी आत्मा सुप्त है। यदि आत्मा जागृति के साथ इन कर्मों के उदय का प्रभाव जो चाहता है, वह नहीं करके उसके विपरीत करें तो कर्म बलहीन हो जाते हैं। जैसे क्रोध मोहनीय का उदय क्रोध करने के लिए प्रेरित

करेगा, लेकिन यदि साधक अवज्ञा करके क्षमा को अपनायेगा तो क्रोध तत्क्षण बिना प्रभाव दिखाये निर्जरित हो जायेगा। आत्मा की स्वतन्त्रता के लिए यह आन्दोलन भी हमें अपने कर्मों के उदय के विपरीत धर्मों को अपनाकर करना होगा। तब हम कर्म शृंखला की कड़ी को रसहीन कर पायेंगे।

**करो या मरो-स्वतन्त्रता** के लिए जीवन सर्वस्व देने हेतु दृढ़ संकल्पित होने का नारा था 'करो या मरो'। बलिदान हेतु पूर्ण समर्पित होकर सेनानियों ने इस नारे को जीवन में अपनाया। मुक्ति प्राप्त करने का इच्छुक साधक भी कर्मों से युद्ध करते हुए इस 'करो या मरो' नारे को अपनाता है। वह कर्मों के उदय को निष्फल करता हुआ समता को अपनाता है। करो अर्थात् शुभ प्रवृत्ति का अनुसरण और मरो अर्थात् अशुभ प्रवृत्ति का समापन। इसमें ज्ञाता-द्रष्टाभाव उपयोगी है। यह कर्म की शक्ति को निसत्त्व कर देता है।

**भारत छोड़ो आन्दोलन-अंग्रेजों** भारत छोड़ो आन्दोलन भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने के लिए किया गया था। इसे अंग्रेजों के सूर्य को अस्त करने के लिए 'अगस्त क्रान्ति' नाम से भी जाना जाता है। आत्मा पर कर्मों का साम्राज्य अनादिकाल से रहा हुआ है। इस साम्राज्य की नींव को हिलाने का कार्य असहयोग, सविनय अवज्ञा और करो या मरो आन्दोलन करता है, परन्तु इसे जड़मूल से समाप्त करने के लिए तो भारत छोड़ो आन्दोलन की भाँति 'कर्मों! आत्म-प्रदेशों को छोड़ो' के रूप में करना ही होगा। जब जीव सम्यक् बोधपूर्वक लक्ष्य बना लेता है कि मुझे तो अब कर्म का साम्राज्य समाप्त करना है, तब पूर्ण पुरुषार्थ से आत्मप्रदेशों से कर्मों को हटाना ही होता है। आत्म-स्वतन्त्रता हेतु अनेक साधकों ने लक्ष्य को साधा और अपने ही बाँधे कर्मों के खिलाफ आन्दोलन चलाकर कर्म सत्ता को खदेड़कर पूर्ण स्वतन्त्रता को प्राप्त किया। इस कर्मों की अदृश्य पराधीनता से जब आत्मा आजाद हो जाती है तो पुनः पराधीनता शक्य नहीं है, इसलिये यह ही सच्ची स्वतन्त्रता, स्वाधीनता है।

अध्यात्म आकाश में उड़ान भरने वाले सच्ची स्वतन्त्रता हेतु दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार की गुलामी से आजाद होकर सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करते हैं। साधु-साध्वी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पथिक हैं उन्होंने बाह्य गुलामी तो छोड़ दी, परन्तु कर्मों की गुलामी से आजादी के प्रयास में अहर्निश साधनारत हैं। हम भी इस आजादी

के अमृत महोत्सव पर दृश्य गुलामी के अनेक बनते स्वरूपों से छुटकारे के साथ-साथ कर्मों की अदृश्य गुलामी से भी स्वतन्त्र बनने का लक्ष्य बनायें। तब ही एक आदर्श नागरिक एवं साधक का संयुक्त रूप हम अनेक लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

-37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020  
(राज.)

## वाणी की उपयोगिता

श्री मंगलचन्द्र टाटिया

मानव जीवन में वाणी का बहुत अधिक महत्व है। वाणी प्राप्त होना विशिष्ट पुण्यवाणी की निशानी है। वैसे सभी अपने भावों को वाणी के माध्यम से व्यक्त करते हैं, किन्तु प्रत्येक वाणी में अन्तर होता है। कोई स्पष्ट बोलता है, कोई रुक-रुक कर बोलता है, कोई धाराप्रवाह बोलता है, कोई तीव्र गति से बोलता है, किसी की आवाज़ तेजी होती है और किसी की मन्द होती है, किसी की मधुर होती है तो किसी की कर्कश। बोलना सब चाहते हैं, अपनी वाणी से सामने वाले को प्रभावित भी करना चाहते हैं। जो लोग विवेक एवं मिठास से बोलते हैं उनकी वाणी में सत्यता झलकती है और उसका प्रभाव पड़ता है। उसकी वाणी सार्थक भी होती है। किन्तु जो लोग अविवेक, कटुता, तीखापन, उपालम्भ और अपमान आदि के दोषपूर्ण वचन बोलते हैं, उनका प्रभाव एवं उपयोगिता नीरस एवं प्रभावहीन है। जैसा देखा, सुना और अनुभव किया, ठीक वैसे भाव से युक्त यथार्थ वचन दूसरों को समझाने के लिए बोलते हैं, वे हितकारी होते हैं।

हमारे शास्त्रों में तीर्थङ्करों, महापुरुषों एवं साधु-साध्वी के अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी विवेकपूर्ण वाणी के माध्यम से अपना तथा अन्यो का उद्धार किया। राजगृही नगरी में साधु समुदाय की गोष्ठी चल रही थी। सभी अपनी-अपनी

चर्चा कर रहे थे। एक वरिष्ठ साधु ने दूसरे साधु से पूछा-सबसे अच्छा राजा कौन है तो उत्तर मिला-मगध सम्राट् बिम्बसार। फिर किसी दूसरे साधु ने पूछा-सबसे वैभव सम्पन्न राजा कौन है तो उत्तर मिला-कौशल नरेश प्रसेनजित। इसी समय एक महात्मा का आगमन होता है और वे स्वयं चर्चाओं को सुनते हैं और फिर अपने विचार व्यक्त करते हैं। आप लोगों को इस प्रकार की व्यर्थ चर्चा नहीं करना चाहिये, ऐसी वार्त्ताओं से जहाँ एक ओर समय का अपव्यय होता है, राग-द्वेष बढ़ता है, वहीं दूसरी ओर आप कर्म-बन्धन में भी जकड़ते हैं। आप सबको स्वाध्याय एवं धार्मिक चर्चा में लीन होना चाहिये, साथ ही साथ अपनी मर्यादा में रहकर अपनी वाणी का सदुपयोग करना चाहिये।

आज हम देख रहे हैं कि प्रायः सामान्य लोग व्यर्थ की चर्चाओं में व्यस्त रहते हैं। केवल हर चर्चा में अपनी मान्यता प्रकट करते हैं। दूसरों की बातों को सुनना नहीं चाहते। सत्य एवं यथार्थ वाणी से हम दूर होते जा रहे हैं उसी का यह परिणाम है कि व्यक्ति सत्यता से दूर हो गया-असत्यता को जीवन में अपना लिया, जिसमें न हमारा भला है और न ही समाज को हम कुछ दे पा रहे हैं। हमारा यह मौलिक कर्तव्य है कि हमें उन चर्चाओं में सम्मिलित होना चाहिए, जहाँ समाज और राष्ट्रहित की तथा आध्यात्मिक चर्चाएँ होती हों, उसी में हमारा कल्याण निहित है।

-91, ए.पी.आर. कॉलोनी, कटंगरा, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश)



## आतम की कर ले शुद्धि, आराधक बनने को

श्री धर्मचन्द्र जैन

(तर्ज :: पल-पल में उज्ज्वल रखना.....)

पर्युषण पर्व ये आया, आतम गुण पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि, आराधक बनने को।।टेर।।

### ज्ञान दिवस

जावन्त अविज्जा पुरिसा, सारे दुःख पाते हैं,  
आगम में यह बतलाया, प्रभुवर समझाते हैं,  
अज्ञान दुःखों की जननी, निज ज्ञान बढ़ाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

एयं खु नाणिणो सारं, हिंसा दुःखकारी है,  
स्व-पर की करुणा से ही, मैत्री विकसानी है,  
सही ज्ञान सुखों का आकर, यही बोध कराने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

### दर्शन दिवस

तत्त्वों के बोध को पाने, जिनवाणी सुनना है,  
संवेग भाव को धरके, श्रद्धा विकसानी है,  
श्रद्धा है धर्म की जननी, अन्तर चमकाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

समकित से पाप टल जाते, दुर्गति भी रुक जाती है,  
आरम्भ-परिग्रह से भी, मुक्ति है मिल जाती,  
गिनती के भवों में मुक्ति, विश्वास जगाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

### चारित्र दिवस

शल्यों से मुक्ति पाकर, विरति को जगाना है,  
पापों से बचते जाना, संवर को बढ़ाना है,

चारित्र ही मुक्ति दिलाता, समता गुण पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

चारित्र कर्मों को रोके, आनन्दित कर देता,  
संयम का पालन ही तो, शुभ भाव बढ़ा देता,  
अतिशय सुखों का दाता, निर्मलता पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

### तप दिवस

तत्काल पवित्र जो करता, सम्यक् तप कहलाता,  
सञ्चित कर्मों से मुक्ति, आतम की कर देता,  
द्वादश तप का ले सम्बल, भव पार लगाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

षड् विध बाहरी तप देखो, तन-मन शोधन करता,  
आभ्यन्तर तप आराधन, आत्मिक शुद्धि करता,  
संयम तप की कर करणी, जीवन चमकाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

### दान दिवस

स्व-पर का है उपकारक, आसक्ति मिटा देता,  
औदार्य गुणों का पोषक, आनन्दित कर देता,  
निर्दोष दान अपनाओ, समकित गुण पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

दानों में अभय अनुपम, आगम में बतलाया,  
सुपात्र दान भी बढ़कर, प्रभुवर ने फरमाया,  
गुण दान धर्म अपनाओ, साधकता पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

**संयम दिवस**

इन्द्रिय मन को वश करना, विकार घटाना है,  
अपने पर करो नियन्त्रण, संयम को पाना है,  
सतरह भेदे संयम को, अन्तर में रमाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

संयम है सच्चा जीवन, संवर को बढ़ाता है,  
सब पापों से छुटकारा, संयम ही दिलाता है,  
संयम का पालन करना, भव चक्र मिटाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

**आत्मशुद्धि दिवस**

तन मन वाणी की शुद्धि, कई बार मिलायी है,  
चेतन की कर ले शुद्धि, घड़ियाँ ये आयी हैं,  
तज राग-द्वेष अन्तर से, समभाव बढ़ाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

रत्नत्रय का आराधन, निज को चमकाना है,  
क्रोधादि पाप का सेवन, दुर्गति को पाना है,  
तज पाप अठारह दिल से, संसार मिटाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

**क्षमा दिवस**

जीवन का निरीक्षण करता, साधक वह कहलाता,  
अपनी भूलों को लखता, ग्लानि से भर जाता,  
तत्काल क्षमा गुण धारे, प्रीति विकसाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

दुर्गुण है दुर्गति दायक, पापों को बढ़ा देते,  
दुर्गुण को तज कर साधक, सद्गति को पा लेते,  
तज वैर, क्षमा अपना ले, सिद्धि पद पाने को,  
आतम की कर ले शुद्धि.....

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न  
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

**एक चुनौती**

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

करता हूँ मैं सबसे विनति,  
इस विषय पर गौर करो,  
धर्मस्थान पर क्यों नहीं जाते,  
सब मिल कर विचार करो।  
विमुख हो रहे क्यों, अपने धर्म से,  
इस विषय पर गौर करो,  
गुरु सेवा में क्यों नहीं जाते,  
सब मिलकर विचार करो।  
देव, गुरु और अपने धर्म में,  
क्यों अपना विश्वास नहीं,  
क्या है कारण, क्या है बाधा,  
सब मिलकर विचार करो।

नहीं जायेंगे धर्मस्थान में,  
संस्कार कैसे पाएँगे,  
आने वाली पीढ़ी को हम,  
कैसे मुख दिखलाएँगे।  
पछताओगे, सम्भल भी जाओ,  
ऐसे सत्प्रयास करो,  
सबके सामने यह चुनौती,  
सब मिलकर विचार करो।  
सब मिल आओ गुरुभक्ति में,  
संस्कार ऐसे पाएँगे,  
ज्ञान मिलेगा गुरु चरणों में,  
भव भव पार कराएँगे।

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर जयपुर-  
302020 (राज.)

## तीर्थमाला के 120 मोती

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

प्रिय विकास ...जय जिनेन्द्र! आपका पत्र मिला जिसमें आपने मुख्य रूप से लिखा है कि ... भैया मैं जैन कॉलेज का विद्यार्थी हूँ एवं हर वर्ष की तरह इस बार भी कॉलेज से पर्युषण पर्व पर दस दिनों की छुट्टियाँ मिलेगी। अभी चातुर्मास लगने से पहले हमारे कॉलेज में महासती मंडल का प्रवचन हुआ एवं उसमें महासतीजी ने जिनवाणी की प्रभावना एवं स्वाध्याय की प्रमुखता पर अत्यन्त प्रभावशाली उद्बोधन फरमाया। साथ ही हम विद्यार्थियों को आगामी पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी बनकर जिनवाणी के प्रचार-प्रसार करने की महती प्रेरणा भी की। महासतीजी द्वारा किये गए उत्साहवर्धन से हममें इस सुअवसर का लाभ उठाने की भावना जगी तथा हम 15 विद्यार्थी जीवन में पहली बार ...इस वर्ष पर्युषण पर्व में स्वाध्याय सेवा देने हेतु तैयार हुए हैं। स्वाध्याय संघ ने प्रत्येक विद्यार्थी को अलग-अलग क्षेत्रों में अनुभवी स्वाध्यायी बन्धुओं के साथ भिजवाने हेतु सहमति प्रदान कर दी है ...जिसमें हमें आठ दिनों में प्रतिदिन लगभग आधे घण्टे का ऐसा वक्तव्य देना है ...जिसमें विशेष रूप से युवापीढ़ी को रोचक तरीके से धर्म की ओर आकर्षित करने हेतु सरल विषय हो। हम 15 ही विद्यार्थी बचपन से ही धर्म से जुड़े हुए हैं तथा कॉलेज की लाइब्रेरी में भी हमें जैनदर्शन की अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का स्वाध्याय करने का सुअवसर भी मिला। यह सब होते हुए भी ..यानी अनेक जानकारियाँ होते हुए भी ...हम सभी में एक कमी यह है कि ...हम विद्यार्थी बिना बेहतर शीर्षक के अपने वक्तव्य की सही तैयारी नहीं कर पा रहे हैं ..हमारे समक्ष यह विकट समस्या है। हमने अभी अभ्यास सत्र में भी यह महसूस किया कि उद्बोधन देते समय हम अपने मूल विषय से भटक जाते हैं ..साथ ही

अनेक विषय आपस में शामिल (Mix ) हो जाते हैं ...इससे हम सभी विद्यार्थियों का आत्मविश्वास कम हो रहा है। स्वाध्याय संघ ने 15 अगस्त को एक दिवसीय स्वाध्यायी कार्यशाला का आयोजन किया है ...जिसमें सभी 15 छात्रों को 8-8 विषयों पर संक्षिप्त में अपना वक्तव्य रखना है। अतः भैया ..आपसे नम्र निवेदन है कि आप शीघ्र ही सरल और आकर्षक शीर्षक हमें भिजवायें ...जिनके आधार पर हम सभी अपने वक्तव्य की तैयारी अच्छे से कर सकें एवं जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़े.....आभार सहित ..विकास जैन।

प्रिय विकास, सर्वप्रथम मैं आप सभी विद्यार्थियों के पुरुषार्थ की तथा जिनवाणी की प्रभावना हेतु स्वाध्याय सेवा की ...अन्तर्मन से अनुमोदना करता हूँ। आपने यह बिल्कुल सही पहचाना कि ...अच्छे शीर्षक से युवा पीढ़ी आकर्षित होती है ...लेकिन आकर्षित शीर्षक के साथ-साथ उद्बोधन की विषय-वस्तु यानी सामग्री का भी दमदार होना नितान्त आवश्यक है। शीर्षक को केन्द्र बिन्दु में रखकर ...उससे सम्बन्धित आगम की गाथाएँ एवं भावार्थ, स्तुति, श्लोक, दृष्टान्त, दोहे, सुविचार, मुक्तक, लघु कहानियाँ, स्तवन की पंक्तियाँ, सटीक उदाहरण इत्यादि का सम्मिश्रण कर प्रभावशाली वक्तव्य तैयार किया जा सकता है। इस पत्र के साथ तीर्थमाला के 120 मोती के अन्तर्गत शीर्षकों (Titles with clue) का संकलन संलग्न है ... जिनको आप अपने पास उपलब्ध सामग्री से विस्तार कर सकते हैं। ये शीर्षक अनेक सन्त-सती मण्डल, मुमुक्षु भाई-बहनों और श्रावक-श्राविकाओं को भी उपयोग में आते रहते हैं।

1. जिनशासन के युवा रत्न (स्कन्धक मुनि, मेतार्थ

- मुनि इत्यादि की मार्मिक कथा, सन्दर्भ : जिनवाणी, सितम्बर 2020)
2. भीतर का भगवान (अब बाहर नहीं भीतर में तलाश हो ...जो भीतर गया वह तर गया ...आत्मा ही परमात्मा)
  3. इस इमारत की नींव नहीं (मिथ्यात्व की इमारत अवश्य गिरेगी ..बिना समकित की नींव के मुक्ति महल नहीं बनेगा)
  4. रोटी, कपड़ा, मकान और... (इंसान की असीमित इच्छाएँ दुःख का कारण है, जीव - इच्छा = मोक्ष)
  5. 48 क्रदम ...84 खतम (पूणिया श्रावक की अमूल्य सामायिक, समता ही सच्ची दौलत है)
  6. ज़िन्दगी के साथ भी ...ज़िन्दगी के बाद भी (धर्म और ज्ञान ...भव-भव के साथी हैं)
  7. जलता समन्दर ...तिरती नाव (गजसुकुमाल मुनि : सहनशीलता से सिद्धगति तक)
  8. आँसू बन गए मोती (सती चन्दनबाला की अनन्य भक्ति)
  9. डूब गया पर्वत (सुभूम चक्रवर्ती, कोणिक ...अति महत्त्वाकांक्षा की नाव ..लोभ के सागर में डूब गई)
  10. 527 ..यह रात अनोखी है (वैराग्य मेरी ताकत है : एक जम्बू स्वामी का उज्ज्वल दृष्टिकोण ...अनेकों भव्य जीवों का मार्गदर्शक)
  11. यह आजादी अधूरी है (पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण घातक है। बन्धे रहे संस्कारों से ..आज़ाद रहें विचारों से)
  12. ज़मीन या आसमान ..कौन महान्? (धरती सम माता एवं आसमान सम पिता के महानतम उपकार)
  13. Commission Agent (श्री कृष्ण और श्रेणिक राजा ...उत्कृष्ट धर्मदलाली से तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन)
  14. रावण से राम तक (अर्जुनमाली कथा : पतन से उत्थान तक)
  15. ढाई अक्षर प्रेम के (प्रेम सर्वव्यापी अचूक भाषा है ..संजीवनी औषधि है)
  16. प्राण जाए ..पर वचन न जाए (धर्मरुचि अनगार का अष्ट प्रवचन माता को निभाया गया सार्थक वचन)
  17. क्यों..क्या..और कैसे..? (जैन जीवनशैली : अच्छा और सच्चा जीवन जीने की कला, सन्दर्भ : जिनवाणी विशेषांक 2020)
  18. डरना जरूरी है (18 पापस्थान से, साधक सिर्फ पाप से डरता है)
  19. बस दो क्रदम ही बाकी हैं (10 दुर्लभ बोल में 8 तो पुण्य से मिल गए हैं ...दो बोल पुरुषार्थ से सार्थक करने हैं)
  20. अन्धा कौन? धृतराष्ट्र या दुर्योधन? (हमारा जीवन कितना अन्यायपूर्ण ..आँखों से कषाय का चश्मा उतारना है)
  21. सवेरा होने को है (दुःखों की रात के बाद सुख का सवेरा ... महासती मदनरेखा की शौर्यपूर्ण कथा)
  22. शेर ...क्यों सो गया है? (आत्मा क्यों सोई हुई है ...जगार्ये ...सम्यक् पुरुषार्थ करें)
  23. इस रात की सुबह नहीं .. (पापमय अन्धकारपूर्ण जीवन ...अभवी कालू कसाई)
  24. आखिरी खेल (भोगी से वीतरागी बने इलायची कुमार की कथा)
  25. जमाना खराब है क्या? (जमाना भले कैसा भी हो ..हम अपनी दृष्टि अच्छी रखें ... गुणग्राहक बनें)
  26. I, me and my (मैं और मेरापन छोड़कर ....सिर्फ मैं में रम जाएँ। जब यह 'मैं' मिटेगा तो वास्तविक 'मैं' मिलेगा)
  27. भाग्य से सौभाग्य तक (पहले व्रतधारी ..फिर महाव्रतधारी बने सुबाहु कुमार की कथा)

28. कल, आज और कल (गए काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक और भविष्य के व्रत नियम का महत्त्व)
29. पूरी नींद, अधूरे सपने (लक्ष्य को पाने के लिए आलस्य और प्रमाद का त्याग करना आवश्यक)
30. जाले और ताले (न तो दिमाग में और न ही धर्मस्थान में लगने दें ..अध्यात्म के लिए विस्तृत सोच रखें)
31. बनावट की सजावट में मिलावट (हिंसाकारक और हानिकारक सौन्दर्य प्रसाधनों का त्याग आवश्यक)
32. चातुर्मास.... तुम्हारा अभिनन्दन है (साधना का श्रेष्ठ निमित्त प्रदाता। सन्दर्भ : जिनवाणी, जुलाई 2019)
33. रक्षा-सुरक्षा (वर्ष में एक बार रक्षाबन्धन पर बहन की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं, आत्मा की सुरक्षा की जिम्मेदारी हर पल लेनी है)
34. सावधानी हटी, दुर्घटना घटी (अयतना का त्याग करें ..हर एक कदम पर यतना हो)
35. लक्ष्मण रेखा (सीता की सुरक्षा के लिए लक्ष्मण रेखा ...आत्मा की सुरक्षा के लिए संवर की मर्यादा रेखा आवश्यक)
36. बरगद की छाँव में (प्रत्येक घर में बुजुर्गों का सम्मान हो)
37. दरार की दीवार (भरत-बाहुबली युद्ध ...रिश्तों को तार-तार करती वर्चस्व की लड़ाई)
38. कंकर से शंकर (हरिकेशबल मुनि का विशेष जीवन ...गहराई से ऊँचाई तक)
39. क्योंकि बहू भी कभी सास बनेगी (परिवार की शान्ति में श्राविकाओं की भूमिका ..रिश्ते में दूरी नहीं..फ़रिश्ते दूर नहीं)
40. Mission Moksh (अंतगडदसा में वर्णित 90 मोक्षगामी आत्माओं के सुन्दरतम एवं सफलतम जीवन की झाँकी)
41. तकदीर का बादशाह (गुजरात सम्राट वनराज चावड़ा एवं महाराजा कुमारपाल की महानता)
42. मैं कौन? (मैं ....की तलाश में ...मैं! स्वयं की वास्तविक पहचान)
43. संयम ही जीवन है (संयम जीवन का आनन्द सर्वोत्कृष्ट है ..संसार की उलझन में संयम ही सुलझन है, सन्दर्भ : जिनवाणी, फ़रवरी 2018)
44. शतरंज की बिसात पर कर्मों को मात (नवपद आराधक मैनासुन्दरी- श्रीपाल का विशिष्ट जीवन)
45. खून भरी फैशन (निर्दोष की आह पर दूषित चाह सरासर गलत)
46. स्वर्ग यहाँ ..नरक यहाँ (गौतम और गोशालक ....प्रभु महावीर के दो शिष्यों में कितना अन्तर)
47. सौ कर्म की एक धर्म की (प्रभु पार्श्व-कमठ, प्रभु महावीर-संगम देव)
48. हम पाँच .. (पंच परमेष्ठी भगवान और नमस्कार महामन्त्र की महिमा..अमर कुमार कथा इत्यादि, नवकार चालीसा, सन्दर्भ : जिनवाणी, मई 2022)
49. क्योंकि ...कर्म कभी अन्याय नहीं करता (त्रिपृष्ठ वासुदेव ...अशक्त पर अन्याय)
50. बस संयम है हितकारी (त्रिकाल में ...संयम मेरा कल्याण मित्र था ..है..रहेगा)
51. मर्यादा पुरुषोत्तम (श्री राम की मर्यादित जीवनयात्रा। वनवास... विरहवास ... मुक्तिवास।)
52. डाक्टर खुद ही क्यों बेहोश है? (आत्मा मोह की नींद में सो रही है ..होश में आकर जन्म-मरण के रोग का इलाज करना होगा)
53. यह वसीयत झूठी है (गलत परम्पराओं का निर्वहन सामाजिक भेदभाव एवं पारिवारिक टूटन का कारण)
54. महल से मोक्ष तक (भरत चक्रवर्ती, नमि राजर्षि)

- ...वैभवशाली जीवन ...विशेष वैराग्य ... परम वैभव)
55. MARKET : यहाँ सब कुछ बिकता है (संसार के बाजार में स्वार्थ का व्यापार है। कभी सिद्धान्त मत बेचना)
56. ऐ भाई ...ज़रा देख के चलो (प्रतिपल विवेक ...लक्ष्य दया का अपना हो, हर एक क़दम पर यतना हो)
57. एक मन्दिर..दो याचक (मन्दिर के ..अन्दर सेठ ..बाहर याचक माँगता है। प्रभु से कुछ नहीं चाहो ..बस प्रभु को ही चाहो।)
58. यात्री (जीव कब तक यात्रा करता रहेगा? अब भटकना नहीं है ...शाश्वत घर को पाना है)
59. हाथी की सवारी (माता मरूदेवी ... हाथी पर बैठे-बैठे केवलज्ञान। मुनि बाहुबली ...हाथी से उतरते ही केवलज्ञान)
60. कि ..पैसा बोलता है (पैसा कुछ हो सकता है, पर सब कुछ नहीं ...सुखी जीवन के लिए निर्लोभता जरूरी है)
61. राहु-केतु खतरनाक है क्या? (जीव के लिए ग्रहों की दशा नहीं ..राग-द्वेष युक्त दशा ज्यादा खतरनाक है)
62. आइने में आतंकवादी (पाप का आतंक बन्द करो, अभय देकर अभय बन जाओ, सन्दर्भ : जिनवाणी, अप्रैल 2019)
63. कम सामान ...सफ़र आसान (कम परिग्रह ...कम ममत्व से ...जीवन यात्रा सुगम बन जाएगी)
64. जो हारा .. वह ही सिकन्दर (जो जीता वह महावीर ...हजारों शत्रुओं से जीतने वाला नहीं, बल्कि मोह शत्रु को जीतने वाला ही वास्तविक वीर है)
65. ज़िन्दगी ...चार शब्दों का खेल (राम नाम सत्य है! साँसों के रुकने से पहले जीवन का अर्थ समझना श्रेष्ठ है)
66. सरलता की लता पर धर्म के फूल (बुद्धिनिधान अभयकुमार का पूर्व भव ...सरल हृदय में ही धर्म ठहरता है)
67. डूब गया व्यापारी (मम्मण सेठ ...ममत्व की नाव ले डूबी नरक की गहराई में)
68. दो जून की रोटी (उत्कृष्ट साधक का संवेग और निर्वेद भावों से युक्त संयम जीवन, सन्दर्भ : जिनवाणी, जून 2019 )
69. sorry...जरूरी है (सती मृगावती, गौतम स्वामी इत्यादि ...क्षमा के वृक्ष पर मुक्ति के फल)
70. धर्म जीया ..तो डरना क्या? (श्रमणोपासक सेठ सुदर्शन ...शूली की दर्दनाक सजा में भी ..तनिक भी विचलित नहीं )
71. आसमाँ से आगे (सिद्ध गति पाने वाले महापराक्रमी पुण्यशाली प्रद्युम्न कुमार की जीवन गाथा)
72. रास्ता पास है ..पर मञ्जिल दूर है (भीतर का चिन्तन परम आवश्यक है, परम गति प्राप्ति के लिए)
73. कर्मयोगी (श्रीकृष्ण की गुणगाथा। जेल में जन्म ...जंगल में मृत्यु)
74. विरासत (हमने अपने संस्कारों की विरासत में क्या, कितना और कैसे ..लिखा है? सन्दर्भ : जिनवाणी, फ़रवरी 2021)
75. डर के आगे हार है (परिस्थितियों से डरना ...यानी जीवन को हारना। निर्भयता अनमोल है.. महासती अंजना कथा)
76. कीचड़ में कमल (वासना विजेता महायोगी स्थूलभद्र की गौरवगाथा)
77. सिंह हार गया हाथी से (काम विजेता सिंह रूपी स्थूलभद्र ...हार गए मान रूपी हाथी से)
78. AND का THE END (इच्छाओं का THE END करें, लोभविजेता कपिल केवली की

- कथा)
79. इतिहास बना देंगे (जिनशासन के विभिन्न प्रभावशाली आचार्य)
80. मन तो बच्चा है जी (एवंता कुमार के मासूमियत से भरे जीवन की यशोगाथा)
81. तोड़ के बन्धन उड़ जाऊँ (प्रबल वैराग्य से संसार पिंजरे को छोड़कर संयम के आकाश में उड़ान भरने वाले धन्नाजी की कथा)
82. कमजोर दुश्मन से क्या लड़ना (दूसरे लोगों से क्या लड़ना ...हम लड़ें तो सिर्फ ताक़तवर 8 कर्मों से)
83. पत्थर पिघल जायेगा (संगम देव का पश्चाताप और प्रभु महावीर का मार्मिक उद्बोधन)
84. आखिरी परीक्षा (सुलसा श्राविका ...उत्तीर्ण है सम्यक्त्व की कसौटी पर भी)
85. एक था राजा (राजा परदेसी के जीवन परिवर्तन की रोचक कथा)
86. न कंगन न चन्दन ...सिर्फ नन्दन (वैराग्य की मूरत नमि राजर्षि का विचरण साधना के नन्दन वन में)
87. हम होंगे कामयाब एक दिन (हम सभी का इस भव का लक्ष्य ...आज आराधक आगे केवली)
88. टूट गए बन्धन (भक्तामर स्तोत्र के रचयिता श्री मानतुंग आचार्य ..भक्ति के वेग में सब बन्धन टूटेंगे)
89. यह मृत्यु नहीं महोत्सव है (धर्मरक्षक आचार्य धर्मदासजी म.सा .का शौर्यपूर्ण संधारा)
90. विद्वान् से बड़ा बुद्धिमान (अभयकुमार, अष्टावक्र इत्यादि के अनूठे उदाहरण)
91. हर रिश्ता कुछ कहता है (रिश्तों का आदर करें ... उपयोग नहीं)
92. शब्दों के जब तीर लगे हैं, जिनशासन के शेर जगे हैं (धन्ना-शालिभद्र का महापराक्रम)
93. मेरे दो मित्र (साहस और धैर्य ...ये दोनों जिसके साथी हैं उसके लिए असम्भव कुछ भी नहीं)
94. सीता को साता क्यों नहीं? (महासती सीता का पूर्वभव ..वेगवती)
95. मन बेईमान है (रत्नाकर पच्चीसी के रचयिता की आत्मग्लानि ..प्रत्येक साधक की आत्म-समीक्षा में सहायक)
96. फिर मिलेंगे (निगोद से सिद्ध गति तक ...अनन्त जीवों से निगोद में मिलना हुआ ..अब सिद्ध गति में अनन्त जीवों से मिलना है)
97. इस कफ़न में जेब नहीं (मेरे खाली हाथ, सिकन्दर के अधूरे सपने ...अन्तिम इच्छा)
98. कायर क्या क्षमा करेंगे? (उदारता के जीवन्त उदाहरण ...उदायन राजा की कथा)
99. तुम स्वयं अनाथ हो (अनाथी मुनि और महाराजा श्रेणिक का सार्थक संवाद)
100. यें साँसें बहुत कम हैं (दृढ़धर्मी जीव को धर्म के लिए नहीं ...संसार के लिए समय निकालना पड़ता है)
101. राम की गंगा मैली नहीं (करणी मैली है ...कथनी-करनी को उज्ज्वल बनाओ। पाप करें हम और धोये गंगा?)
102. कलियुग का अमृत (मैत्री भाव की साधना अमर बना देगी)
103. दर्द खुद अपने दर्द से रोने लगा है (नरक के जीवों का अपार दुःख)
104. सत्यम् शिवम् सुन्दरम् (अन्तिम विजेता तो सिर्फ सत्य ही होगा।)
105. अध्यात्म के आधुनिक दुश्मन (टी.वी., अखबार, इण्टरनेट, मोबाइल इत्यादि का दुरुपयोग बन्द हो)
106. गोलमाल है भई सब गोलमाल है (मिलावट का युग ...पर धर्म में मिलावट मत करो ...अङ्गारमर्दन)
107. पल में राजा, पल में याचक (प्रसन्नचन्द्र राजर्षि, कण्डरीक अपेक्षाकृत)

108. वह क्रान्ति निराली थी (जिनशासन में सम्यक् क्रान्ति...क्रान्तिवीर लोकाशाह का जीवन-चरित्र)
109. Offer offer offer ....1 + 3 free (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप) (4 कषाय)
110. शासन बुला रहा है (जिनशासन के अलौकिक रत्न आर्य रक्षित की कथा)
111. साँच को आँच नहीं (महासती सुभद्रा का सत्य और शील जैसे सदगुणों से अलंकृत जीवन)
112. आज का दिन अनमोल है (वर्तमान का पूर्ण सदुपयोग। कल कभी आता नहीं और आज कभी जाता नहीं)
113. आखिरी साँस तक (अम्बड़ संन्यासी के शिष्य, एक व्रत का परिपूर्ण पालन भी सदगति का कारक है।)
114. वे मौत से नहीं ...जन्म से डरते हैं (पण्डित मरण के साधक, अन्तिम समय की सर्वश्रेष्ठ साधना ... संथारा)
115. अन्धेरों से घिरा उजाला (मिथ्यात्व रूपी अन्धकार से मुक्त होने ही वाली है मेरी आत्मा)
116. एक और एक ग्यारह (जीवन में दो गुण ..विनय और दया की जोड़ी सर्वश्रेष्ठ है)
117. नो एण्ट्री (ज़िन्दगी के दरवाजों पर दोष दस्तक दे रहे हैं ...नो एण्ट्री का बोर्ड लगा दें)
118. सूरज क्यों रोता है ...? (रात्रिकालीन ...भोजन, सामूहिक आयोजन, नृत्य कार्यक्रम, भव-भव रुलाने वाले हैं)
119. एक वह भी दिवाली थी, एक यह भी दिवाली है (दिल वालों की दिवाली, सन्दर्भ : जिनवाणी, अक्टूबर 2019)
120. तीर्थ से तीर्थकर तक (उत्कृष्ट रसायन ...सम्यक्त्व पराक्रम ...से हमारा भी तीर्थकर बनना सम्भव है)
- प्रिय विकास, मुझे विश्वास है कि तीर्थमाला के 120 मोती के इन शीर्षकों से ...आप सभी विद्यार्थियों को तथा आप सभी के माध्यम से ...अनेकों जिज्ञासुओं को लाभ होगा। आप और हम सभी मिलकर इसी तरह ...महानतम जिनशासन की अमूल्य प्रभावना करते रहें ..इसी मंगल-भावना के साथ ...
- आपका कल्याण मित्र तीर्थ  
- 'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

## बाँटकर खायें, मुक्ति में जाएँ

श्री शुभम बोहरा

‘असंविभागी न हु तस्स मोक्खो’ अर्थात् जो बाँटकर खाना नहीं जानता, उसकी मुक्ति नहीं हो सकती। सम्पूर्ण जीवन के रहस्य को प्रकट करने वाला यह अत्यन्त अर्थपूर्ण, सुन्दर सूत्र है।

अपने जीवन में जो बाँटकर खाना नहीं जानते, प्रेम से जीना नहीं जानते, उनको मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है। इस जीवन में दान, सहयोग, सहकार्य की भूमिका होना अत्यन्त आवश्यक एवं हितकारी है।

-जलगाँव (महाराष्ट्र)

## अब भारत के सर्वोच्च पद पर बैठे दोनों व्यक्ति शाकाहारी

श्रीमती ज्योति कोठारी

यह तो सभी जानते हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी पूर्णतः शाकाहारी हैं। आदिवासी समाज से आने वाली भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भी पूर्णतः शाकाहारी हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार वे प्याज, लहसुन भी नहीं खातीं। अब प्रधानमंत्री निवास के साथ राष्ट्रपति भवन में भी शाकाहारी भोजन ही बनेगा, यह सभी शाकाहारियों के लिए बहुत ही सुखद समाचार है।



## मुझे आराधक बनना है

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

अरिहंत बनना है, मुझे सिद्ध बनना है,  
आज मिली जिनवाणी, आराधक बनना है,  
जन्म-जन्म के भ्रम को, अब दूर करना है।

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के भजन की ये पंक्तियाँ जीव को अपने चरम और परम लक्ष्य अरिहंत एवं सिद्ध बनने के लिए संकल्पशक्ति जगाने की प्रेरणा प्रदान कर रही है। आराधक बने बिना कोई भी जीव न अरिहंत बन सकता है, न ही सिद्ध गति को प्राप्त कर सकता है। अथवा इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि आराधकपना वह चाबी है जिससे मोक्ष द्वार पर लगे ताले को खोला जा सकता है। आराधक जीव ही अपने भवों की गिनती 15 भवों तक सीमित कर सकता है। अब यह समझने का प्रयास करते हैं कि आराधक किसे कहते हैं? सामान्य परिभाषा तो यह है कि जो जीव समकित अवस्था में आयुष्य का बन्ध कर लेता है वह आराधक बन जाता है। अपने संसार को सीमित कर लेता है और जघन्य उसी भव, मध्यम 3 भव और उत्कृष्ट 7-8 भव अर्थात् 15 भव में मोक्षगामी हो जाता है। पर यह जीव समकित है या नहीं, निश्चय रूप से केवली भगवान ही निर्णय कर सकते हैं। व्यवहार रूप में समकित का निर्णय बाहरी व्यवहार से हो सकता है। हम स्वयं ही शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था के मापदण्ड से समकित का निर्णय कर सकते हैं।

अपना अहंकार घटाने पर ही जीव आराधक बनता है। आराधक जीव चौरासी के चक्कर में नहीं फँसता। अपना अहंकार घटाना अर्थात् पूर्णरूपेण जिनशासन में समर्पित होना, स्वयं के मान कषाय को पूरी तरह विसर्जित करना।

अपना अहंकार घटाने के 4 उपाय

1. सहन करने की आदत डालो-मन के

प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न होने पर आवेश में तत्काल प्रत्युत्तर देना अपनी शान्ति समाप्त करना है। यदि कभी विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होती है तब हाथोंहाथ प्रतिक्रिया देने के बदले यदि 10 मिनट भी हम मौन हो जाते हैं तो 90% क्लेश समाप्त होने की सम्भावना बन जाती है। 10 मिनट बाद हमारे कषाय की तीव्रता, मन्दता में बदल जाती है।

2. अपनी कमियों और कषायों को घटाओ- जिसके हृदय में सरलता और निष्कपटता होती है, विचारों में शुद्धता होती है वह जीव कषाय और कमियाँ घटाने की योग्यता प्राप्त कर सकता है। उत्तराध्ययनसूत्र के तीसरे अध्ययन की 12वीं गाथा में बताया है-सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ। धर्म शुद्ध हृदय व्यक्ति में निष्कपटता में ही निवास करता है।

3. स्वयं को लघु मानो-मनुष्य में मान कषाय की बहुलता होती है। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से सुना कि मान नहीं होता तो मोक्ष यहीं होता। स्व का पूरा समर्पण कर देना, बस एक ही चिन्तन, मुझे कुछ नहीं आता, मैं कुछ भी नहीं। जब ये अहम् चला जाएगा तो अहम् बनते देर नहीं लगेगी। स्वयं की छोटी-सी गलती भी बड़ी और दूसरों की बड़ी गलती भी छोटी लगनी चाहिए।

4. उदारपूर्ण स्थिति बनाओ-थोड़ा करके ज्यादा पाने का प्रयत्न न करो। आप अपना हर कर्तव्य ईमानदारी से पूर्ण करने का प्रयास करें, पर बदले में किसी तरह की अपेक्षा या आशा न रखें, क्योंकि जितना-जितना कर्तव्य शीघ्र पूरा होता जाएगा, कर्मों का कर्जा उतना-उतना शीघ्रता से चुकता जाएगा। मैंने इतना किया, बदले में मुझे भी यह चाहिए। इस प्रकार प्रतिफल की आशा रखी और जब अपेक्षा पूरी नहीं हुई

तो वही दुःख का कारण बन जाती है। जब स्वयं का अहंकार घट जाता है तो जीव आराधकपने के निकट पहुँच जाता है।

आराधकता की भूमिका बाँधकर, उसे समझकर, उसके निकट आकर यह जीव अपने चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक और उपयोगी आराधकपने को कैसे पूर्ण रूप से प्राप्त करे, उसके लिए भी चार आवश्यक बिन्दुओं पर चिन्तन मनन करना होगा।

**1. उपशान्त भाव में रमण करना—थोड़ी-थोड़ी** देर सहन करने की आदत का जो विकास किया, उसे और बढ़ाने का प्रयत्न करें। भावों में थोड़ी और उत्कृष्टता बढ़ानी है। कैसा भी प्रसङ्ग, माहौल और वातावरण हो मुझे तेजी नहीं लानी। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा प्रदान किया गया अनमोल सूत्र—‘हे जीव! तू शान्त रह’ को अपनाना है। दूसरे निमित्त की तरफ मत देखो, उपादान को ही कारण समझो। जो कुछ भी है मेरे पूर्व कर्मों का ही परिणाम है अन्यथा ऐसी शक्ति किसी में भी नहीं जो मुझे दुःख दे सके।

**2. श्रद्धा बढ़ाना—**गुरुओं की शिक्षाओं पर ध्यान दो। उन पर श्रद्धा इतनी मजबूत हो कि उनका उपदेश, निर्देश और अनुशासन ही हमारा जीवन बन जाए। श्रद्धा, विवेक और करणी का मेल ही श्रावक है। देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा ही एक दिन आराधकता को प्राप्त कराएगी। आराध्य की आराधना से आराधकता को प्राप्त करना बहुत सरल हो जाता है।

**3. स्व का निरीक्षण करना—**रात्रि शयन के कुछ मिनट पहले पूरी दिनचर्या को मानस पटल पर लाना चाहिए। यदि मुझसे भूलें हो रही हैं तो मुझमें उन्हें स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। यदि मुझसे लापरवाही हो रही है तो उसे छुपाने की मनोवृत्ति घटनी चाहिए। प्रतिदिन स्वयं का लेखा-जोखा करें और अनुमान लगाएँ कि मुझमें उपालम्भ सुनने की क्षमता का विकास हो रहा है अथवा नहीं। आवेश के प्रसङ्ग में शान्ति कितनी बनी रहती है? तिरस्कार करने वाले के प्रति कैसे मनोभाव हैं? प्रातः काल के चिन्तन एवं संकल्प का शयन से पूर्व अवलोकन अवश्य करना चाहिए।

**4. स्वभाव में विसर्जनता की मुख्यता—**आराधकता को प्राप्त करने की अभिलाषा वाला जीव विसर्जन को महत्त्व देता है, जैसे आग्रह का विसर्जन, विवाद का विसर्जन, स्वार्थ का विसर्जन, प्रपञ्च का विसर्जन। स्वयं पर विश्वास रखना, किसी को हीन नहीं समझना, किसी की आलोचना नहीं करना। परिस्थितियों को बदलने की बजाय स्वयं को ज्ञाता-द्रष्टा बनाने और स्वयं को बदलने की रुचि जगाना। हर माहौल में समभाव रह पाये ऐसा प्रयास करते रहना आदि, तभी यह जीव आराधक बनने की योग्यता हासिल कर पाएगा।

अहंकार को है घटाना, कर्मों को तुम हटाना। होकर के आराधक, सिद्ध पथ के राही बन जाना।

—एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर (राज.)

### अनमोल वचन

संकल्पनकर्त्ता : श्री गणपतलाल जैन

- ❖ कोई भी कार्य करने से पहले उसे सोचो, समझो फिर करो।
- ❖ इन पर कभी अभिमान मत करो—ताकत, सुन्दरता और दौलत।
- ❖ विश्वासघात सबसे बड़ा पाप है।
- ❖ पल भर का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़

सकता है।

- ❖ मनुष्य को अपनी औकात कभी नहीं भूलनी चाहिए।
- ❖ सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं।
- ❖ संकल्प, साहस और संयम से अतिरिक्त शक्ति बढ़ती है।

—51, जवाहर नगर, गुलाब बाग, बजरिया,  
सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

**मनोहर : मुनि-मुवतावली-लेखक-शासन प्रभाकर**  
उपप्रवर्तक गुरुदेव श्री आनन्दमुनिजी म.सा.। मुख्य  
सम्पादक-युवामनीषी श्री दीपेशमुनिजी म.सा.।  
सम्पादक-श्री मुकेश कुमार जैन। **प्रकाशक-कोमल**  
प्रकाशन दिल्ली, मो. 9210480385, **प्राप्ति-स्थान-**  
श्री शिखरचन्द जैन, अरिहन्त प्रकाशन समिति, बी-  
133, प्रशान्त विहार, दिल्ली-110085, फोन  
27562093, **अवतरण-1** जनवरी, 2012, **पृष्ठ-**  
258 + 20 = 278, **मूल्य-पठन-पाठन।**

प्रस्तुत पुस्तक में शासन प्रभाकर उपप्रवर्तक श्री  
आनन्दमुनिजी म.सा. ने महान् क्रियोद्धारक आचार्यश्री  
मनोहरदासजी म.सा. की मुनि-परम्परा का संक्षिप्त  
स्वरूप प्रस्तुत किया है। श्री मनोहरदासजी म.सा. की  
यह परम्परा नागोरी सम्प्रदाय के नाम से विख्यात है,  
जिसके मूल जनक पूज्य श्री जीवाजी म.सा. थे।

श्री आनन्दमुनिजी म.सा. ने अपनी गुरु परम्परा के  
इतिहास को प्रस्तुत पुस्तक में क्रमबद्ध एवं सुन्दर रूप में  
प्रस्तुत किया है। इस परम्परा के नायक महान्  
क्रियोद्धारक पूज्य आचार्यश्री मनोहरदासजी म.सा. हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य श्री मनोहरदासजी म.सा.  
के चरित्र का वर्णन करते हुए उनके 121 श्रमण-  
श्रमणियों का जीवन-वृत्त संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के प्रारम्भ में मनोहर-परम्परा के तेजस्वी  
मुनिरत्नों के चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं। श्री  
मनोहरदासजी म.सा. का जीवन-चरित अतीव  
प्रेरणादायी एवं गौरवशाली है। अन्य सन्तों की जीवनियाँ  
एवं उनकी साधना के बारे में पढ़कर मन प्रफुल्लित हो  
जाता है। कई सन्तों ने विषम-परिस्थितियों में अपनी  
साधना से चमत्कार दिखलाकर जिनशासन की प्रभावना  
की है। इसके साथ ही कई सन्त-मुनिराजों ने दुःखी एवं

पीड़ित तथा रोग-ग्रस्त श्रावकों को अपना आशीर्वाद  
प्रदान कर उनका उद्धार किया है। प्रत्येक सन्त का  
परिचय देने से पूर्व उनकी स्तुति में सुन्दर पद्य की रचना  
की गई है। सन्त-मुनिराजों द्वारा रचित एवं उनकी  
स्तुति-गान में रचित दोहों, ढालों एवं पद्यों का भी  
यथावसर उल्लेख किया गया है। पुस्तक के अन्त में  
मनोहर परम्परा की 17 श्रमणियों का भी परिचय दिया  
गया है।

**णमो सिद्धाणं-लेखक-डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन।**  
तत्त्वावधान एवं आशीर्वाद-आगममर्मज्ञ श्री  
अरुणचन्द्रजी म.सा.। प्रेरक एवं सम्पादक-डॉ. तृप्ति  
जैन। **प्रकाशक-रत्नत्रय प्रकाशन समिति, नई दिल्ली**  
एवं प्राच्य विद्यापीठ शाजापुर (मध्यप्रदेश), **अव्य**  
**प्राप्ति स्थान-कुशल जैन (गंगानगर) 9462961490,**  
नितिन जैन (दिल्ली) 9871416763, विनोद जैन  
(जींद) 9416190074, आशीष जैन (बड़ौत)  
9837210341, **प्रथम संस्करण-फरवरी 2022,**  
**पृष्ठ-415 + 17 = 432, मूल्य-250 रुपये। Email :**  
infogurusewakparivaar.org, Website :  
www.gurusewakparivaar.org

प्रस्तुत पुस्तक 'णमो सिद्धाणं' (सिद्ध पद) एक  
संकलनात्मक प्रस्तुति है। प्रत्येक जीव का प्रमुख एवं  
अन्तिम लक्ष्य सिद्ध होना है। जैनधर्म के नमस्कार  
महामन्त्र में भी द्वितीय पद 'नमो सिद्धाणं' है, जिसमें  
सिद्धों को नमस्कार किया गया है। सिद्ध से तात्पर्य है,  
जिसके सारे कार्य पूर्ण हो चुके हैं, जो कृतकृत्य हो गया  
है, जिसके सारे कर्म नष्ट हो गये हैं और जो सिद्धालय पर  
जाकर शाश्वत सुख में सदा के लिए विराजमान हो गये हैं  
तथा जिनको अब संसार में पुनः जन्म नहीं लेना है, जो  
निजस्वरूप में स्थित हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में विषय-सामग्री के अनुसार 5  
खण्ड किये गये हैं। प्रथम खण्ड परिचयात्मक है, जिसमें  
सिद्धों को नमस्कार, सिद्धों का स्वरूप, मंगल, महत्ता,  
अरिहन्त और सिद्ध में भेद, सिद्ध के एकार्थक शब्द,  
सिद्धों के गुण, सिद्धों की ऊर्ध्वगति, लोक का स्वरूप,

सिद्धालय, सिद्धों की अवगाहना आदि विषयों का वर्णन किया गया है। द्वितीय खण्ड आगमों में सिद्ध-पद के विवेचन का है, जिसके अन्तर्गत आगमों में वर्णित सिद्धों के स्वरूप का वर्णन किया गया है। तृतीय खण्ड में आगमोत्तर जैन ग्रन्थों के अनुसार सिद्ध पद का विवेचन किया गया है। चतुर्थ खण्ड में सिद्धत्व-प्राप्ति के विभिन्न साधना-मार्ग बतलाये गये हैं। सभी चारों खण्डों में विभिन्न आगमों और शास्त्रों के सन्दर्भ सहित उल्लेख किये गये हैं। साथ में सम्बन्धित विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रश्नोत्तर भी दिये गये हैं। पंचम खण्ड में प्रश्नोत्तर बैंक है। इसमें 144 प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं। प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठक की जिज्ञासाओं का सम्यक् समाधान हो जाता है और विषय शीघ्रता से समझ में आ जाता है। अन्त में सन्दर्भ-ग्रन्थों की सूची दी गई है।

सम्पूर्ण पुस्तक जिज्ञासु जनों के लिए पठनीय है और ज्ञानवर्धक है तथा सिद्धों के स्वरूप को समझने के लिए उपयोगी है।

**मौलिक कहानियाँ-लेखक-आगमज्ञाता योगीराज श्री अरुणचन्द्रजी महाराज। प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-रत्नत्रय प्रकाशन समिति, दिल्ली, पीपी 114, निकट गोपाल मन्दिर, पूर्वी पीतमपुरा, दिल्ली-**

110034, मोबाइल 9911177434, अन्व प्राप्ति स्थान-पूर्व पुस्तक के अनुसार। पृष्ठ-122 + 6 = 128, मूल्य-200/- रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री अरुणचन्द्रजी महाराज ने 36 मौलिक कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। सभी कहानियों के प्रारम्भ में एक या दो परिच्छेद में कथा से सम्बन्धित विषय का प्रेरक परिचय दिया गया है। परिचय में कतिपय प्रसिद्ध श्लोक अथवा दोहे या गाथा का भी समावेश किया गया है। परिचय के पश्चात् सहज, सरल एवं सुबोध भाषा में कहानी का वर्णन किया गया है और कहानी की विषय-वस्तु से सम्बन्धित चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं, जिससे कहानी रोचक एवं आकर्षक बन गई है। कहानियों में धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक और संस्कार, सेवा, प्रेम से सम्बन्धित विषयों का समावेश किया गया है जो वर्तमान जीवन में सभी के लिए उपयोगी हैं। कहानियों में प्रवाहशीलता एवं प्रसादगुण है।

सभी कहानियाँ आबालवृद्ध के लिए पठनीय, शिक्षाप्रद एवं जीवनोपयोगी हैं और बालकों एवं युवकों के लिए विशेष उपयोगी हैं।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयपुर', विश्वकर्म नगर-द्वितीय, महाराजी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

## गुरु भक्ति गीत

अनुपमा दलपत जैन

(तर्ज :: पल पल दिल के पास.....)

क्षण-क्षण गुरु को ध्यावो, कर्म कटेंगे 2  
भव-भव के बन्धन, सब टूटेंगे, क्षण-क्षण....  
यह संसार दुष्कर है, इससे पार उतरना है  
यह गुरु की वाणी है, जीवन महकाती है,  
आत्मा को भव से यह, पार लगाता है,  
संयम की राहें भी,  
समतल बन जाती है क्षण-क्षण.....

विनय का पाठ पढ़ा था,  
क्षमा को अपनाया था  
यह गुरु की छाया है, यह गुरु का साया है,  
यह आत्मा का गहना है,  
यह आत्मा के रक्षक हैं,  
यह डुबती नैया के, तारण हारे हैं,  
मैं मार्ग भटकता हूँ, डर-डर के चलता हूँ,  
गुरु यूँ ही सहारा देना, आ-आकर राहों में,  
क्षण-क्षण गुरु को ध्यावो, कर्म कटेंगे-2  
-बी 203, अबरोल वास्तु पार्क, एवरसाइन नगर,  
मलाड (वेस्ट), मुम्बई-400064 (महाराष्ट्र)

## समाचार विविधा

### जिनशासन गौरव आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यप्रवर आदि ठाणा के महामन्दिर, जोधपुर चातुर्मास में धर्मध्यान का ठाट

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 श्री ओसवाल जैन स्कूल महामन्दिर में, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 शक्ति नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में तथा व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 सामायिक-स्वाध्याय भवन महामन्दिर में चातुर्मासार्थ सुखे-समाधौ जोधपुर में विराजित हैं।

**मंगल प्रवेश**-परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त मुनिमण्डल सहित 20 मई से 2 जुलाई तक शक्तिनगर जोधपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराजे। भक्तों की भीड़ के प्रति निस्पृही पूज्य आचार्य भगवन्त ने 2 जुलाई को सायंकाल बिना किसी पूर्व सूचना एवं घोषणा के शक्तिनगर से मुनिवृन्द सहित विहार किया। पैदल चलकर जाने की भावना एवं अटूट आत्मबल के धनी आचार्य भगवन्त ने चलने की शक्ति न होने पर भी शक्तिनगर से महामन्दिर लगभग डेढ़-दो किलोमीटर का मार्ग चार दिनों में तय किया। 2 जुलाई को शक्ति शनगर स्थित तीसरी गली में स्थित ऋषि आश्रम पधारे। जोधपुर जैसे बड़े शहर में स्थानकवासी परम्परा के ज्येष्ठ आचार्यप्रवर आज ही विहार कर देंगे, किसी को भनक तक नहीं हुई। विहार होने पर कुछ लोगों को विहार की जानकारी होते ही, वे दौड़े-दौड़े तीसरी गली स्थित ऋषि आश्रम पहुँचे जहाँ दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

3 जुलाई को दिन में करीब 4 बजे के आसपास पूज्य गुरुदेव ने ऋषि आश्रम से विहार किया और पाद-विहार करते-करते महामन्दिर तीसरी पोल के अन्दर डंको बाजे स्थानक पधारे। आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव ने अपने साथ भावी आचार्यश्री एवं कुछ सन्तों को रखकर शेष सभी सन्त-मुनिराजों को शक्ति नगर स्थित स्थानक विराजने और जब तक अगली सूचना नहीं हो तब तक प्रवचन शक्तिनगर करते रहने की व्यवस्था प्रदान की। श्रमणसंघीया महासती श्री कमलप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने आचार्य भगवन्त के दर्शन, वन्दन कर स्वास्थ्य समाधि की पृच्छा की।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव ने डंको बाजे स्थानक से 4 जुलाई को दिन में लगभग 4 बजे विहार किया और समता भवन, महामन्दिर पधार कर रात्रि धर्म जागरणा एवं विश्राम किया।

5 जुलाई को चातुर्मास स्थल श्री ओसवाल जैन स्कूल में विधिवत् सादगी पूर्ण तरीके से पूज्यप्रवर ने चातुर्मासिक मंगल प्रवेश कर मांगलिक फरमाई। 5 जुलाई से नियमित प्रवचन जैन स्कूल महामन्दिर में प्रारम्भ हुए। पाद-विहार में राहगीरों ने भी आदराभिव्यक्ति की। भक्तों की भावना एवं विनति को आदर देते हुए पूज्य गुरुदेव समीपस्थ सामायिक-स्वाध्याय भवन, महामन्दिर में पावन पर्दापण कर विराजे।

तीन दिन सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराजकर 8 जुलाई को मुनिमण्डल सहित श्री ओसवाल जैन स्कूल में पुनः पधारे एवं 9 जुलाई को व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 सामायिक-स्वाध्याय भवन महामन्दिर में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश कर विराजित हैं।

धर्म एवं इतिहास की दृष्टि से महामन्दिर क्षेत्र का जोधपुर में चिरकाल से विशिष्ट स्थान रहा है। यह राजगुरुओं की पावन भूमि रही है। रत्नसंघीय आचार्य के चातुर्मासों के इतिहास में इस क्षेत्र में 194 वर्ष पूर्व क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. का चातुर्मास हुआ था। उसके पश्चात् यह अवसर आया है कि पूज्य आचार्य भगवन्त का चातुर्मास इस क्षेत्र को प्राप्त हुआ है, एतदर्थ विनति दीर्घकाल से चली आ रही थी। यह महामन्दिर क्षेत्र भावी आचार्य भगवन्त परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जन्मभूमि सहित अनेक चारित्रात्माओं की वीरप्रसूता पावन भूमि भी है। इसी ओसवाल जैन स्कूल (चातुर्मास स्थल) में भावी आचार्यश्री ने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी।

परमाराध्य आचार्य भगवन्त का जोधपुर महानगर में चातुर्मास 11 वर्ष पश्चात् प्राप्त होने से श्री संघ में धर्म-ध्यान, तप-त्याग, जिनवाणी श्रवण में उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होने से उमङ्ग और उल्लास अनुमोदनीय है।

12 जुलाई से प्रारम्भ धर्मचक्र में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने दया, संवर, पौषध की साधना एवं तेले आदि की अनेकानेक तपस्याओं के साथ 13 जुलाई को आषाढी चौमासी के पावन प्रसङ्ग पर प्रवचन में श्रद्धालुओं की भरपूर उपस्थिति एवं सहभागिता धर्मश्रवण के साथ विविध व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर सम्पन्न हुई। गुरुपूर्णिमा का पावन प्रसङ्ग होने से ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्रों सहित सम्पूर्ण भारत के चहुँओर से एवं विदेश से आये श्रद्धालुओं ने सविनय, सभक्ति, परमाराध्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री सहित सभी सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन कर, गुरुचरण सन्निधि में यथारुचि सामायिक, स्वाध्याय, गुरुभक्ति कार्यक्रम एवं दया, संवर, पौषध सहित यथाशक्ति तप-त्याग, धर्म-ध्यान, व्रत-नियम-प्रत्याख्यान ग्रहण कर श्रद्धार्थ्य के सुमन अर्पित किये।

आषाढी चौमासी के पावन प्रसङ्ग पर समरथगच्छीया महासती श्री मंजुश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं समता संघीया महासती श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे एवं दर्शन-वन्दन कर सुखसाता, स्वास्थ्य समाधि की पृच्छा की।

गुरु पूर्णिमा के पावन प्रसङ्ग पर श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर ने 3 से 4 बजे मध्याह्न में गुरुदर्शन का कार्यक्रम भक्तिभावपूर्वक रखा। गुरु की महत्ता एवं आवश्यकता पर उद्बोधन देते हुए श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने उद्बोधन में श्राविकाओं को फरमाया कि गुरु बिन जीवन-ज्ञान नहीं होता। श्राविका मण्डल की ओर से 21 जुलाई को अष्टमी पर सामूहिक एकाशना एवं पाँच-पाँच सामायिक का कार्यक्रम रखा गया।

स्वाध्याय शिविर-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में 20 से 24 जुलाई तक स्वाध्यायी शिविर महामन्दिर जैन स्कूल प्राङ्गण में आयोजित हुआ, जिसमें युवक-युवतियों, वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं सहित लगभग 110 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। सन्त-सतीवृन्द द्वारा स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता को समझाया गया एवं प्रेरित किया गया।

आज्ञापत्र-25 जुलाई को ज्ञानार्थी विरक्ता बहिन सुश्री स्नेहाजी भण्डारी सुपुत्री श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी मूलनिवासी पीपाड़ हाल निवासी रायचूर वर्तमान में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में ज्ञान-ध्यान सीख रही हैं। उनके परिवारजनों ने उपस्थित होकर आज्ञापत्र परमाराध्य आचार्य भगवन्त की सेवा में प्रदान किया।

26 से 28 जुलाई को तीन चारित्रात्माओं के पावन प्रसङ्ग पर तेले की तपस्या का आह्वान किया गया। 26 को तपस्वी श्री सागरमलजी म.सा. की पुण्यतिथि (स्मृति दिवस) तथा 27 को महासती श्री छोगाजी म.सा. के जन्म दिवस एवं 28 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का 96वाँ स्मृति दिवस मनाया गया। तेले की अनेक तपस्याओं के साथ विविध तपस्याओं के तपार्थ्य अर्पित हुए।

**चातुर्मासिक कार्यक्रम-** दैनिक कार्यक्रम में प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. करवाते हैं तथा प्रवचन श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन एवं श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. नौवें अध्ययन से फरमाते हैं तथा विशेष प्रसङ्गों पर परम श्रद्धेय महान् अध्यवसायी भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. सहित तीनों सन्त-भगवन्त प्रवचन फरमाते हैं। दोपहर को 2 से 3 बजे वाचनी भगवतीसूत्र पर भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. फरमाते हैं।

चातुर्मासिक प्रवेश 5 जुलाई के प्रथम प्रवचन से लेकर अब तक जिनवाणी श्रवणार्थ सकल ओसवाल समाज की श्रद्धाभक्ति, धर्मरुचि एवं उपस्थिति उत्तरोत्तर प्रवर्धमान है। चतुर्विध संघ समागम का अनूठा संगम होने से श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय, तप-त्याग, धर्म-ध्यान, साधना-आराधना, दया, संवर, पौषध का पूर्णरूपेण लाभ लेने का पावन सुअवसर प्राप्त होने से धर्मगंगा प्रवाहित है तथा तपाराधना का क्रम तो बृहत्तर होता जा रहा है। लगभग पचौले, अठाई, नौ, दस, ग्यारह की 10-15 तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं एवं 15, 16, 17, 18 की तपस्याएँ भी 10-15 चल रही हैं जो उत्तरोत्तर प्रवर्धमान हो रही हैं। अनेक मासखमण होने की सम्भावना है तथा एकाशन, आयम्बिल, नीवी, बेले, तेले, चोले की अनगिनत तपस्याएँ हुईं और हो रही हैं।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा नियमित गुरुचरण सन्निधि का लाभ ले रहे हैं।

रत्नसंघ की रीति-नीति के अनुसार महामन्दिर में आबाल वृद्ध श्रावक-श्राविकाओं, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं की सेवा, भक्ति, भावना, धर्मरुचि एवं आगत श्रद्धालुओं के आवास-निवास भोजन (साधर्मी वात्सल्य सेवा) व्यवस्था सुन्दर एवं सुव्यवस्थित चल रही है। ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल, दक्षिण भारत, मध्यप्रदेश, हाड़ौती सहित देश के चहुँओर से एवं विदेश से भी श्रद्धालुओं का आवागमन रहा जो अनवरत बना हुआ है।

3 जुलाई को संघ संरक्षक सुश्रावक श्री नवरतनमलजी कोठारी, श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी, श्री विनयचन्द जी कोठारी तीनों भाई सपरिवार, पुत्र-पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित गुरु चरण सन्निधि में पधारे। दर्शन-वन्दन, सामायिक साधना-आराधना, व्रत-प्रत्याख्यान यथारुचि किया।

-गिर्राज जैन

**नेहरूपार्क, जोधपुर-** पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य व्याख्यानी श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 सामायिक-स्वाध्याय भवन विराज रहे हैं। श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. के ऑपरेशन के पश्चात् स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से पावटा का चातुर्मास नेहरूपार्क हेतु परिवर्तित किया गया है। स्वास्थ्य में समाधि है।

## सन्तप्रवरों के चातुर्मासों में धर्मसाधना एवं प्रवचन-श्रवण का श्रावक-श्राविकाओं में आकर्षण

**किशनगढ़ (अजमेर)-**मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का अजमेर प्रवास अपूर्व रहा। हर एक के मन में सन्तों के आचार, विचार, विशेषकर प्रवचनों की प्रभावना का वातावरण देखकर अभिभूत था। वहाँ से विहार कर सन्तत्रय दो दिनों में किशनगढ़ शहर में पधार गये। वहाँ के निवासियों ने इस दुर्लभ अवसर को मूल्यवान समझते हुए प्रवचन आदि हर धार्मिक कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस क्रम में दो दिन

प्रवचन शिवाजी नगर किये और 3 जुलाई को अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के तीनों सन्तों ने बड़ी सहजता से चातुर्मासार्थ ओसवाली मौहल्ला स्थित महावीर भवन में प्रवेश कर दिया।

जब से सन्तों का यहाँ आगमन हुआ तब से हर दिन लोग प्रवचन, प्रार्थना, वाचनी में उमंग एवं उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं। देखते ही देखते चौमासी का दिन आ गया और प्रवचन प्रभावना का नज़ारा जो अपने आप में अवर्णनीय व अकल्पित था विशेष कर बहनों के बैठने की जगह भी छोटी पड़ रही थी। केवल चौमासी का ही दिन नहीं, यहाँ हर दिन चौमासी से बढ़कर नज़ारा प्रवचन के समय होता है। सन्तों ने विविध धार्मिक विकल्पों का आह्वान किया, जिसमें हर रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक धार्मिक कक्षा, जो विशेषकर युवा भाई-बहनों के लिए रखी गई। सचमुच यहाँ के लोगों ने रविवारीय कक्षा में अद्वितीय उपस्थिति देखकर अपनी भक्ति, निष्ठा एवं समर्पण का अगाध परिचय दिया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने 'बस दो कदम बाकी हैं' आदि विषयों पर मार्मिक उद्बोध दिया। परिणामस्वरूप और उपस्थिति बढ़ती गयी। प्रवचन का प्रारम्भ श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. तथा यदा-कदा श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ओजस्वी वाणी में करते हैं। नियमित प्रवचन में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आत्मा के अस्तित्व को लेकर विशेष प्रवचन फरमा रहे हैं।

इसी क्रम में 25 से 29 जुलाई तक पञ्च दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम के प्रथम दिन 108 व्यक्तियों द्वारा 108 आगम गाथाओं का प्रातः 8 से 9 बजे के बीच खचाखच भरे हाल में समेवत स्वर में एक लय से स्वाध्याय किया गया। दूसरे दिन 108 वन्दना का कार्यक्रम था, जिसमें स्थानक का विशाल हॉल भी छोटा पड़ गया और भाई श्री मनोजजी मेहता ने जिस उत्साह, भक्ति और श्रद्धा के साथ वन्दना करवायी सभी ने वन्दना में स्वयं को सम्मिलित करके धन्य-धन्य महसूस किया। तीसरे दिन पाँच-पाँच सामायिक का आह्वान था जिसमें एक साथ पाँच सामायिक करने वालों की लगभग 150-200 की संख्या थी उसके अगले दिन अर्थात् गुरु पुष्य नक्षत्र और हरियाली अमावस्या का दिन होने से एक साथ सामूहिक रूप से आयम्बिल करने का आह्वान था। शायद मदनगंज में सामूहिक रूप से इतने आयम्बिल एक साथ पहली बार हुए जिधर देखो उधर हर कोई आयम्बिल में अपने आपको जोड़ रहा था। एक-एक घर के अन्दर पाँच-पाँच, सात-सात आयम्बिल सैकड़ों की संख्या में हुए। श्रद्धेय सन्त भगवन्तों के आह्वान से पाँचवे दिन सामूहिक 108 लोग्स के जाप में सम्मिलित हुए। इन पाँच दिवसीय धार्मिक आराधना के दिनों में त्रयोदशी के दिन पूज्य सागरमलजी म.सा. के जीवन पर मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने मार्मिक उद्बोधन देकर संथारा संलेखना का महत्त्व समझाया, महाराजश्री ने फरमाया संथारा उन्हीं को आता है जिनका सम्पूर्ण जीवन निष्कपट, निश्छल एवं सहज-सरल होता है। उन्हीं का तीसरा मनोरथ सिद्ध होता है। हरियाली अमावस्या के दिन पूज्य आचार्यश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का पुण्य-स्मृति दिवस होने से उनके तपोमय सेवाभावी जीवन का रेखांकन करते हुए फरमाया कि सेवा का कार्य सबसे जटिल और कठिन है जिसके भीतर प्रेम-करुणा आत्मीयता होती है, वह ही सेवा करने में सफल हो सकता है, कहना होगा गुरु शोभाचार्य ऐसे ही करुणा और प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। कुल मिलाकर मदनगंज का यह चातुर्मास अनेक धार्मिक गतिविधियों के साथ गतिशील है। आगामी 30 एवं 31 जुलाई को दो दिवसीय 'बालिका जागृति शिविर' (Smart Girl) का कार्यक्रम प्रस्तावित है। हर धार्मिक कार्यक्रम यादगार बनते जा रहे हैं।

-प्रमोद कुमार मोदी एवं मोनिका डांगी

**प्रतापनगर, जयपुर-सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-3 का श्योपुर रोड़, टोंक रोड़, प्रतापनगर स्थित श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश पश्चात् सुखे-समाधौ विराज रहे हैं।

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का 3 जुलाई, 2022 रविवार को प्रातः 7.30 बजे



प्रताप नगर सेक्टर 03 में स्थित श्री सुशील कुमारजी जैन के आवास से सेक्टर 6 में स्थित श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ।

उपस्थित सैकड़ों धर्मानुरागियों की धर्मसभा में मंगलाचरण पश्चात् उद्बोधन देकर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रतापनगर जयपुर स्थित धर्मस्थानक पर ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करने के लिए श्रावक-श्राविकाओं के लिए एक निश्चित तिथि एवं वार के अनुसार कार्यक्रम का उद्घोष किया। श्रद्धेय मुनिश्री ने फरमाया कि यह केवल प्रतापनगर का चातुर्मास ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जयपुर का चातुर्मास है। सभी को सभी क्षेत्रों में आराधना करने का लक्ष्य पूरा करना है। चातुर्मास में सम्भावित दैनिक कार्यक्रम होंगे, जो इस प्रकार है-

प्रातः राई प्रतिक्रमण सूर्योदय से एक घण्टा पूर्व। प्रार्थना सूर्योदय के 10 मिनट पश्चात्। जाप प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक। प्रवचन प्रातः 8.30 से 9.45 बजे तक। श्राविकाओं के लिए कक्षा प्रातः प्रवचन पश्चात् (सोम, बुध और शुक्र को)। वाचनी दोपहर 2 से 2.45 बजे (आचाराङ्गसूत्र)। ज्ञानशाला दोपहर 3 बजे से चतुर्थ प्रहर प्रारम्भ होने तक। सायंकालीन प्रतिक्रमण सूर्यास्त से। युवा शाला जिज्ञासा समाधान कक्षा रात्रि 8.30 से 9.30 बजे तक। सामूहिक सामायिक कक्षा प्रत्येक रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक। आगम परायण कक्षा प्रत्येक अष्टमी को मूल आगम का स्वाध्याय प्रवचन से पूर्व करवाया जायेगा।

**प्रवर्तमान कार्यक्रम-**ज्ञान के क्षेत्र में आचाराङ्गसूत्र पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता (जयपुर क्षेत्र के लिए)। दर्शन के क्षेत्र में प्रतिदिन एक घण्टा जाप का कार्यक्रम। (17 सप्ताह अलग-अलग जाप)। चारित्र के क्षेत्र में प्रति रात्रि श्रावकों द्वारा न्यूनतम पाँच संवर। तप के क्षेत्र में-एकाशन, आयम्बिल, उपवास और तेले की लड़ी (चार माह तक)।

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. भगवान नेमिनाथ चरित्र पर निरन्तर प्रवचन फरमा रहे हैं। आप जैनाचार्यों, सन्त महापुरुषों और सुधी श्रावक-श्राविकाओं के विषय में निरन्तर बोध करा रहे हैं।

चातुर्मास काल में 4 से 31 जुलाई तक श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने मुँहपत्ती दिवस, पूँजनी दिवस, माला दिवस, आसन दिवस, उपकरण दिवस, असण दिवस, धोवन पानी दिवस, गुरु गुणगान दिवस (गुरु पूर्णिमा/चौमासी पर्व), विगय त्याग दिवस, मनोरथ दिवस, पुस्तक दिवस, जय जिनेन्द्र दिवस, मांगलिक दिवस, प्रतिलेखना दिवस समर्पण दिवस, नियम दिवस/प्रतिज्ञा दिवस), प्रणाम दिवस, मौन दिवस, निर्जरा दिवस, प्रेरणा दिवस, प्रमाद त्याग दिवस, ऊनोदरी दिवस, प्रतिक्रमण दिवस (आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का 96वाँ स्मृति-दिवस), पुण्य दिवस, प्रशंसा दिवस आदि महत्पूर्ण विषयों पर प्रवचन फरमाए हैं।

रविवारीय प्रातःकालीन सामायिक कक्षा में श्री निपुणजी डागा, डॉ. दिलीपजी धींग, सी.ए. रितुलजी पटवा एवं श्री पदमचन्दजी गाँधी के विशिष्ट विषयों पर प्रेरक वक्तव्य हुए हैं।

दोपहर में श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. आचाराङ्गसूत्र की वाचना फरमा रहे हैं। आचाराङ्गसूत्र के महत्त्वपूर्ण सूत्रों की विवेचना निरन्तर चल रही है।

धर्म सभा में नियमित रूप से व्रत-प्रत्याख्यान हो रहे हैं। श्रावकरत्न श्री अजीत कुमारजी सकलेचा मासखमण की तपस्या के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। आज इनके 22 उपवास के प्रत्याख्यान हुए हैं। धर्मप्रेमी लोगों में धर्म-ध्यान, त्याग-तप, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना गतिमान है। 17 सप्ताह के लिए 17 प्रकार के जाप का क्रम जारी है। युवा शाला में प्रतिरात्रि युवा जिज्ञासा समाधान पाकर लाभान्वित हो रहे हैं। धर्म श्रद्धालुओं से प्रवचन हॉल पूरा भर जाता है। लोगों में अपार उत्साह होने के कारण रविवार को सामायिक कक्षा और प्रवचन गुलाब विहार में स्थित प्रवचन हॉल में किये जा रहे हैं।

-ऋषभ कुमार जैन, मन्त्री

**मेड़तासिटी-तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 5 का वीर भवन एवं व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 का स्वाध्याय भवन में बिना पूर्व सूचना के 6 जुलाई को चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रवेश के दिन से श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के तेले की तपस्या थी जो 11 जुलाई को बिना सूचना के अठाई के साथ सम्पन्न हुई। महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. के नौ की तपस्या हुई एवं अधिकतर साधु-साध्वियों के एकान्तर की तपस्या चल रही है। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. सुखाविपाकसूत्र के आधार पर अनेक विषयों पर प्रवचन फरमा रहे हैं। प्रवचन का समय 8.45 से 10 बजे तक है। उसके पश्चात् 11 बजे तक कषायपाहुड की वाचनी चल रही है। दोपहर में 1.30 बजे से 2.30 बजे तक आगम वाचनी एवं 2.30 से 3.30 तक ज्ञान-ध्यान सिखाना चल रहा है। श्री नवरतनजी भंशाली, बेंगलोर 25 बोल सिखा रहे हैं। प्रार्थना, प्रवचन एवं प्रतिक्रमण सभी में उपस्थिति समीचीन है। प्रतिदिन कई उपवास, आयम्बिल, एकाशन, तेला एवं ऊपर की तपस्या के पच्चक्खाण हो रहे हैं। सभी कार्यक्रमों में जैन-जैनेतर उत्साह पूर्वक भाग ले रहे हैं। पञ्चसंग्रह, आचाराङ्ग, जिज्ञासा की तरंगों का भी स्वाध्याय चल रहा है।

-हस्तीमल डोसरी, मन्त्री

### साध्वीप्रमुखा एवं महासतीवृन्द के चातुर्मासों में धर्मसाधना

**कृष्णासागर-राधानिकुञ्ज, जयपुर-जिनशासन गौरव व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त 1008** श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-8 का 2 जुलाई को सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ। 13 जुलाई से नियमित प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, प्रतिक्रमण, संवर, पौषध आदि का क्रम गतिमान है।

चातुर्मास प्रारम्भ से ही अठाई, तेले, सिद्धितप, उपवास, आयम्बिल, नीवी, एकाशन, बिआसन आदि की लड़ी चल रही है। इसके अलावा अब तक लगभग 9 तेले, 10 की 2, 9 की 1 तपस्या सम्पन्न हुई। लड़ी के अलावा भी नीवी, आयम्बिल की आराधना चलती रहती है। 27 जुलाई चतुर्दशी को अखण्ड नमस्कार महामन्त्र का जाप (24 घण्टे का) सम्पन्न हुआ। 28 जुलाई को आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. और श्री सागरमलजी म.सा. के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में सामायिक की नवरंगी एवं नीवी की आराधना सम्पन्न हुई। प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति सराहनीय रहती है।

-प्रजन्तलाल जैन, मन्त्री

**हाडसिंग बोर्ड, जोधपुर-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** आदि ठाणा-9 चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक विराजमान है। महासती मण्डल के सान्निध्य में क्षेत्रवासी धर्माराधना, ज्ञानाराधना, तपाराधना में निरन्तर पुरुषार्थ कर रहे हैं। 9 जुलाई चातुर्मासिक प्रवेश से ही नियमित प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण तथा ज्ञानार्जन में श्रावक-श्राविकाएँ अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं। प्रातः 8 से 9 बजे तक विशेष कक्षा 'एक कदम धर्म की ओर' में महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के प्रभावी प्रेरणा से आबाल-वृद्ध सभी लाभान्वित हो रहे हैं। महासती श्री मान्यप्रभाजी म.सा. के 31 जुलाई को 23 की तपस्तया सुख-साता पूर्वक चल रही थी। मेड़तासिटी के मूल निवासी श्रीमती प्रेमलताजी धर्मसहायिका श्री गौतमजी तातेड़ ने 30 की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए हैं। साथ ही 19, 11 की तपस्याओं के साथ अठाई सहित अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ गतिमान है। दर्शनार्थियों के आने का क्रम जारी है, स्वधर्मी भाई-बहिनों के स्वागत के लिए सभी कार्यकर्ता समर्पित भावना से कार्यरत हैं।

**खोह-अलवर-व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.** आदि ठाणा-3 का 10 जुलाई को प्रातः 9 बजे ग्राम टैटपुर से खोह स्थानक में मंगल प्रवेश हुआ। आबालवृद्ध में अच्छा उत्साह नज़र आया। मंगल-प्रवेश के बाद

बालिका मण्डल के द्वारा मंगलाचरण और भजन की प्रस्तुति दी गई। कुछ बालिकाओं ने चातुर्मास को सफल बनाने के लिए प्रेरणा के उपलक्ष्य में छोटी नाटिका की प्रस्तुति दी। उसके बाद महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. ने चातुर्मास को सफल बनाने के लिए प्रेरणा दी। महासती श्री स्नेहलताजी म.सा., महासती श्री निरञ्जनाजी म.सा. ने भी जागृति का सन्देश दिया। प्रवेश के पश्चात् से प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा आदि के साथ तपस्याएँ एवं धर्मसाधना के विभिन्न कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हो रहे हैं।

-गौरव जैन, मन्त्री

**ऊटी (तमिलनाडु)**-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-4 ने 06 जुलाई को ऊटी स्थानक में गुप्त एवं मंगलमय प्रवेश किया। आपके पदार्पण से श्रीसंघ में हर्ष की लहर छाई हुई है। 13 जुलाई से धर्म-ध्यान की लड़ी लगी हुई है। प्रातःकाल सूर्योदय के बाद सामूहिक प्रार्थना-प्रातः 7 से 7.30 बजे (सूत्र वाचन), प्रातः 9:15 से 10:15 बजे प्रवचन, दोपहर 2:30 से 3:30 बजे धार्मिक कक्षा (तत्त्व और थोकड़ों पर आधारित), प्रतिक्रमण-सूर्यास्त से (केवल महिलाओं के लिए) एवं रात्रि में धर्मचर्चा के उपरान्त पौषध, संवर इत्यादि दैनिक कार्यक्रम विधि पूर्वक चल रहे हैं। एकाशन, आयम्बिल, उपवास और तेले की तपस्या के लड़ी निरन्तर चल रही है। 19 जुलाई को नवदीक्षिता महासतीजी श्री रचनाश्रीजी म.सा. के 16 उपवास की तपस्या देव गुरु धर्म की महती कृपा से सुखसाता पूर्वक प्रगतिशील है।

-जयचन्द कोटडियर, मन्त्री

**कुन्नूर (तमिलनाडु)**-व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4, श्रीसंघ को महासती मण्डल का यह चातुर्मास 36 वर्षों के पश्चात् प्राप्त हुआ है। मूर्तिपूजक, तेरापंथ सभी संघ इस चातुर्मास में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। महासती मण्डल का सादगी पूर्ण एवं आध्यात्मिक चातुर्मास हमारे जीवन की दशा एवं दिशा को बदलने वाला है। चातुर्मास प्रारम्भ से सात कड़ी निरन्तर गतिमान है-तेला, उपवास, आयम्बिल, नीवी, एकाशन, बिआसन, संवर। हर सात दिन में सामायिक की पचरंगी का कार्यक्रम चलता है। प्रार्थना 6.20 से 6.45 तक, 6.45 से 7.15 तक वीतराग इन्द्रोडकशन कक्षा, 9.15 से 10.15 प्रवचन, 2.00 से 2.30 बजे वाचनी, 2.30 से 3.30 आओ सीखे-तत्त्व ज्ञान। सूर्यास्त से प्रतिक्रमण, रात्रि धर्म-चर्चा। रविवार को विशेष कार्यक्रम-बच्चों का संस्कार शिविर 2.00 से 3.30 बजे तक। नित्य बालदर्शन प्रतियोगिता आदि। 17 जुलाई को सामूहिक नीवी दिवस रखा गया। 3 बहिनों के एवं एक भाई के नीवी के मासखमण चल रहे हैं। मिला जो चातुर्मास रूपी कोहिनूर धन्य-धन्य हो गया है कुन्नूर।

-रणजीत चोरडियर, मन्त्री

**सवाईभाधोपुर**-व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 8 का सामायिक स्वाध्याय भवन, इन्दिरा कॉलोनी, टॉक रोड, बजरिया में चातुर्मासार्थ 2 जुलाई, 2022 शनिवार को बिना किसी पूर्व सूचना बिना आडंबर के मंगल प्रवेश हुआ। प्रातः काल प्रार्थना के बाद नियमित ज्ञानार्जन कक्षा रहती है। मांगलिक प्रवचन के बाद महासती मण्डल द्वारा श्रावक श्राविकाओं को पाठ देने व पाठ सुनने का क्रम रहता है। रत्न संघीय परिवारों का धर्म परिचय भी चल रहा है। दोपहर में श्राविकाओं द्वारा ज्ञानार्जन किया जाता है। 'आओ चलें जिनशासन की ओर' हर रविवार को सुबह युवकों की विशेष कक्षा निर्धारित विषयों पर आयोजित हो रही है। मंगलवार, बुधवार, गुरुवार को श्राविका मण्डल की ज्ञान विकास कक्षा का आयोजित होती है। 24 जुलाई को आयोजित जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग खुली किताब प्रतियोगिता बुक एक से पाँच तक की सम्पन्न हुई। नन्दीसूत्र कण्ठस्थ करने का लक्ष्य 60 स्वाध्याय रसिक गुरुभक्तों का है। अब तक 11 व 9 दिवस तप के साथ अठाई, पचोले, तेले की तपस्याएँ हुई हैं। बड़ी तपस्या भी चल रही है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकाशन, आयम्बिल, उपवास और तेले की तपस्या की लड़ी चल रही है। वीर प्रभु की अन्तिम वाणी गीतिका काव्य पुस्तक आधारित परीक्षा 30 अक्टूबर को होगी। गुरु दर्शन-

वन्दन जिनवाणी श्रवण हेतु गुरुभक्तों का आवागमन जारी है। कोप्पल, माडल, धूलिया, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा आदि से पधार कर वीर परिवारों ने गुरु दर्शन-वन्दन का लाभ लिया है। जीवन-निर्माण के शिल्पकार पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा दिवस पर पाँच सामायिक, तीन सामायिक के साथ तपाराधना भी हुई। गुरु दर्शन-वन्दन जिनवाणी-श्रवण, ज्ञानार्जन तथा त्याग तपस्या करने का सुनहरा अवसर पोरवाल क्षेत्र को प्राप्त हुआ है। महासती मण्डल की पावन प्रेरणा से जप, तप, साधना-आराधना में गुरुभक्त श्रद्धा-भक्ति-भाव से संलग्न हैं। सर्वाइमाधोपुर नगर परिषद् क्षेत्र के अलावा निकटवर्ती ग्राम कस्बों के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा चातुर्मास का अच्छा लाभ लिया जा रहा है।

-पदम चन्द गोटेवाला, शास्त्रा मन्त्री

**चौथ का बरवाड़ा (सर्वाइमाधोपुर)-व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा-4 का 9 जुलाई को लगभग 2.30 बजे बिना किसी आडम्बर एवं पूर्व सूचना के जैन स्थानक भवन में मंगल प्रवेश हुआ। प्रवचन में महासतीजी द्वारा 'सुखविपाकसूत्र' के माध्यम से सुबाहुकुमार जी जीवनी को प्रस्तुत किया जा रहा है। दोपहर में वाचनी एवं थोकड़े की कक्षा भी ली जा रही है। प्रवचन में शनिवार को मौलिक इतिहास एवं रविवार को विशेष विषय-वस्तु जैसे-मेरी माता, मेरे पिता पर प्रवचन हो रहे हैं जो कि जीवन के लिए आदर्श हैं।

महासती श्री भविताश्रीजी म.सा. द्वारा प्रवचन के माध्यम से प्रतिदिन जीवन-निर्माण के सूत्र प्रदान किये जा रहे हैं। कहा भी गया है कि जैसा संग वैसा रंग अर्थात् जो व्यक्ति जैसी संगति करता है उसका निर्माण भी वैसा ही होगा। महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. द्वारा दिन में थोकड़े की कक्षा के माध्यम से थोकड़े एवं तत्त्वों की जानकारी प्रदान की जा रही है। नवदीक्षिता महासती श्री समीक्षाश्रीजी म.सा. द्वारा प्रतिदिन प्रार्थना का कार्यक्रम सम्पादित किया जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के स्मृति-दिवस पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक एवं जप-तप की आराधना की गई।

महासती मण्डल की प्रेरणा से प्रतिदिन एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेले के पचचक्खान ग्रहण किये जा रहे हैं। श्रीमती अलका मनोजजी समिधि के अठाई से आगे, श्रीमती चन्दनबाला महेन्द्रजी मन्त्री, श्री पवनकुमारजी रामप्रसादजी के 9 उपवास, दीपाजी प्रभुलालजी के 11 उपवास की तपाराधना हुई है। दोपहर में प्रतिदिन 'नमस्कार महामन्त्र' के जाप हो रहे हैं। श्राविकाओं द्वारा रात्रि संवर की साधना की जा रही है।

-नीरज कुमार जैन

## चातुर्मास परिवर्तन सूचना

5. नेहरू पार्क-जोधपुर (राज.) (स्वास्थ्य कारणों से परिवर्तित)

✚ व्याख्यात्री श्रद्धेयश्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

✚ श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

✚ श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

✚ श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.

ठाणा 4

नोट- सेवा कार्य की आवश्यकतानुसार कतिपय संतों के लिए नेहरू पार्क-महामंदिर में आना-जाना खुला रहेगा।

**चातुर्मास-स्थल-** सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.),

**सम्पर्क-सूत्र-**

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं 'सी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), मोबाइल: 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, मो.94141-00759
3. श्री नरेन्द्र जी बाफना, मो. 94141-44789
4. श्री रिषभ जी मेहता, मो. 87642-02023

## आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2022 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

### (1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ 15 सितम्बर 2022 तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

- विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
- सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
- प्रकाशित कृति सन् 2018 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
- पूर्व में किसी भी संस्था से पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
- कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
- कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
- सम्मान के रूप में 1 लाख की रुपये की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

### (2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

- प्रशासनिक चयन- राज्यस्तरीय एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
- प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेंट, कम्पनी सचिव एवं अन्य प्रोफेशनल पाठ्यक्रम में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
- शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा एवं जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
- संघ-सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

(3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

### (4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान

संघ द्वारा प्रदत्त न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र-छात्रा को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

**(5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान**

जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

(A) जिन शोधकर्ताओं ने 18 फरवरी 2021 से 17 फरवरी 2022 की अवधि में पी-एच.डी./डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से 1 पी-एच.डी. उपाधिधारक तथा 1 डी.लिट् उपाधिधारक को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।

(B) आवेदन-पत्र के साथ पी-एच.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।

(C) सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियाँ संघ के निम्नांकित पते पर संबंधित सम्मान का नाम लिखते हुए 15 सितम्बर 2022 से पूर्व प्रेषित करें।

-धनपत सेठिया, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

**संघ एवं संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 15-16 अक्टूबर, 2022 को सूर्यनगरी जोधपुर में**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन समारोह, संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शनिवार एवं रविवार, दिनांक 15-16 अक्टूबर 2022 को सूर्यनगरी जोधपुर (राज.) में किया जाना संभावित है।

-धनपत सेठिया, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

**जिनवाणी लेखक-सम्मान समारोह-2022 सम्पन्न**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा रविवार 17 जुलाई, 2022 को श्योपुर रोड़, प्रताप नगर, जयपुर स्थित 'गुलाब विहार' के प्राङ्गण में 'जिनवाणी लेखक-सम्मान समारोह-2022' का आयोजन हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, अध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के उद्योग आयुक्त श्री महेन्द्रजी पारख थे। समारोह की अध्यक्षता सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने की। मञ्चासीन अतिथियों के स्वागत-सत्कार के पश्चात् श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुति एवं प्रतापनगर संघ की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष डॉ.

धर्मचन्द्रजी जैन ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वाध्याय और सामायिक का शंखनाद करने वाले पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती की प्रेरणा से जनवरी 1943 में जिनवाणी पत्रिका का भोपालगढ़ में शुभारम्भ हुआ था। इसके प्रथम सम्पादक श्री फूलचन्द्रजी जैन सारंग थे। उसके पश्चात् अनेक सम्पादकों ने पत्रिका के स्तर को बनाए रखने एवं इसे ऊँचा उठाने में अपना योगदान दिया, जिनमें डॉ. नरेन्द्रजी भानावत का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिन्होंने सन् 1967 से 1993 तक अहर्निश अपनी सेवाएँ प्रदान कर पत्रिका को लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट बनाया। यह पत्रिका नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक मूल्यों का पोषण करने के साथ इतिहास, संस्कृति, तत्त्वज्ञान, विज्ञान आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्तरीय रचनाओं का प्रकाशन करती रही है। अक्टूबर, 1994 से इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संकेतों के अनुसार श्रावकों द्वारा मुझे सौंपा गया। श्री पुखराजजी मोहनोत, श्री नौरतनमलजी मेहता एवं डॉ. श्वेताजी जैन के सह-सम्पादन में यह पत्रिका निरन्तर आगे बढ़ती रही। श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत एवं श्री पी. शिखरमलजी सुराणा की इस पत्रिका के स्तर को ऊँचा उठाने में विशेष प्रेरणा रही। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा ने सन् 2008 में जिनवाणी के विभिन्न स्तम्भों के लेखकों को सम्मानित करने की योजना प्रस्तुत की जो उसी वर्ष 'लेखक-सम्मान चयन समिति' निर्धारित कर क्रियान्वित की गई। प्रायः यह क्रम प्रतिवर्ष चलता रहा। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद ग्रहण के रजतवर्ष में 23 अगस्त, 2015 को जोधपुर में जिनवाणी लेखक समारोह गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न लेखकों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत मुख्य अतिथि थे तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अध्यक्षता की थी। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कला संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर नरेन्द्रजी अवस्थी विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. जितेन्द्र भाई शाह, अहमदाबाद ने 'विश्व में जैनधर्म की स्थिति' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। इसके पश्चात् भी जिनवाणी के लेखकों का समय-समय पर बिना आयोजन के सम्मान किया जाता रहा। सात वर्ष पश्चात् सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा के नेतृत्व में जिनवाणी लेखक सम्मान-समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इसमें सन् 2018 से 2021 तक लेखन के क्षेत्र में विशेष योगदान प्रदान करने वाले 15 लेखकों एवं रचनाकारों का सम्मान किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि, माननीय न्यायाधिपति एवं संघाध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया का हृदय से स्वागत अभिनन्दन करता हूँ कि इन्होंने इस कार्यक्रम हेतु एक फोन पर स्वीकृति प्रदान की एवं अपना अमूल्य समय निकालकर इस कार्यक्रम में पधारे। संघ हित में उनकी सदैव कृपा बनी रहती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि उद्योग आयुक्त राजस्थान सरकार श्री महेन्द्रजी पारख का भी मैं हृदय से स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ। वे जिनवाणी पत्रिका एवं संघ से दिल से जुड़े हुए हैं तथा समय-समय पर उनके आलेख भी जिनवाणी में प्रकाशित होते रहे हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्द्रजी डागा, मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ, श्री श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी सांगानेर-प्रताप नगर के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्रजी दफ्तरी सहित सभा में उपस्थित सम्माननीय लेखकों, गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं जिनमें जस्टिस श्री जसराजजी चौपड़ा, संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत से लेकर मध्य पंक्ति में विराजित संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता एवं अन्तिम पंक्ति में विराजित सभी गरिमा संवर्धक सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

समारोह में जिनवाणी के विभिन्न रचना-क्षेत्रों में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान करने वाले 15 श्रेष्ठ लेखकों

और रचनाकारों में से उपस्थित 8 लेखकों का मञ्चासीन अतिथियों द्वारा शाल, माला एवं चैक राशि से सम्मान किया गया—(1) डॉ. दिलीपजी धींग, चेन्नई (2) श्रीमती कमला हणवन्तमलजी सुराणा, जोधपुर (3) प्रो. अनेकान्तजी जैन, दिल्ली (4) डॉ. रमेशजी 'मयंक', चित्तौड़गढ़ (5) श्रीमती निधि दिनेशजी लोढ़ा, वर्ली-मुम्बई (6) श्री अंशु संजयजी सुराणा, जयपुर (7) श्री पदमचन्दजी गाँधी, (थाँवला वाले), जयपुर (8) श्री त्रिलोकचन्दजी जैन (अध्यापक), जयपुर।

शेष लेखकों एवं रचनाकारों (1) श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ', चेन्नई (2) श्री मोहनजी कोठारी 'विनर', दुर्ग (3) डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन, चेन्नई (4) डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया, जोधपुर (5) श्री धर्मचन्दजी जैन (रजिस्ट्रार), जोधपुर (6) श्री रणजीतसिंहजी कूमट, मुम्बई (7) डॉ. एच. कुशलचन्दजी जैन को उनका सम्मान उनके पते पर प्रेषित किया गया है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा ने जिनवाणी पत्रिका की अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्री महेन्द्रजी पारख ने अपने वक्तव्य में जिनवाणी पत्रिका के प्रति स्वयं की एवं अपनी मातृश्री की आत्मीयता का कथन करते हुए जिनवाणी के लेखकों के योगदान को सराहा तथा इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की।

सम्मानित लेखकों ने भी विचाराभिव्यक्ति करते हुए इस कार्यक्रम के आयोजन पर प्रमोद व्यक्त किया तथा जिनवाणी की विशेषताओं पर प्रकाश डालने के साथ कतिपय सुझाव भी प्रस्तुत किए। डॉ. दिलीपजी धींग ने कहा कि इस प्रकार का सम्मान समारोह अन्य किसी पत्रिका के द्वारा आयोजित होता हुआ नहीं देखा गया। लेखकों का सम्मान जिनवाणी पत्रिका की निजी विशेषता है। जिनवाणी पत्रिका में लेख का प्रकाशित होना ही अपने आप में सम्मान है। फिर भी यह आयोजन करके सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने लेखकों के योगदान को विशेष मान दिया है। यह पत्रिका एक सम्प्रदाय की होती है भी असाम्प्रदायिक छवि को धारण किये हुए है। इसमें अनेक राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व के समाचार भी प्रकाशित होते हैं। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली में जैनदर्शन के प्रो. डॉ. अनेकान्तजी जैन ने अपने ओजस्वी एवं प्रभावी वक्तव्य में कहा कि मेरे घर बनारस में यह पत्रिका कई वर्षों से आती रही है और मैंने इस पत्रिका को पढ़कर लेखन कला सीखी है। एक अच्छी पत्रिका के सम्पादक को संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी इन सभी भाषाओं का अभ्यास होने के साथ जैनधर्म-दर्शन का भी बोध हो तो वह पत्रिका प्रामाणिक बन जाती है। जब मुझे किसी विषय पर बोलना होता है तो कई बार जिनवाणी के सहेजे हुए अंकों के सम्पादकीय को पढ़ता हूँ और उसके पश्चात् आधा-पौने घण्टे का वक्तव्य आसानी से दे पाता हूँ। श्रीमती कमलाजी सुराणा, श्रीमती निधि दिनेशजी लोढ़ा, मुम्बई, डॉ. रमेशजी मयंक, श्री पदमचन्दजी गाँधी, श्रीमती अंशु संजयजी सुराणा, श्री त्रिलोकचन्द जैन ने भी जिनवाणी पत्रिका के प्रति अपने जुड़ाव पर प्रसन्नता व्यक्त की।

समारोह के अन्तर्गत मण्डल की साहित्य प्रकाशन सूची-2022 का एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के (Brochure) का विमोचन किया गया।

समारोह में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो पाने पर भी संघ संरक्षक श्री डी. आर. मेहता सा, संघसेवा शिरोमणि श्री मोफतराजजी मुणोत, जिनवाणी लेखकों को निरन्तर प्रोत्साहित एवं सम्मानित करने वाले श्री पी. शिखरमलजी सुराणा ने अपने सन्देश प्रेषित किए जिन्हें कार्यक्रम सञ्चालकों द्वारा पढ़कर सुनाया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री प्रकाशजी टाटिया ने विशेषतः इसी कार्यक्रम के लिए जोधपुर से



यहाँ आकर कार्यक्रम का गौरव बढ़ाया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि लेखकों का बहुत बड़ा दायित्व होता है, वे अपनी रचनाओं एवं पाठकों का मार्गदर्शन करते हैं एवं जिज्ञासुओं को समाधान प्रस्तुत करते हैं। मैं समस्त सम्मानित लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा मंगल कामना करता हूँ कि आप अपनी लेखनी को उत्तरोत्तर विचारों की धार से तीक्ष्ण बनाते रहें। समारोह के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने लेखकों के योगदान पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा उनके द्वारा जिनवाणी के सम्बन्ध में की गई अभिव्यक्ति पर प्रमोद व्यक्त किया, साथ ही यह भी कहा कि आपके द्वारा दिए गए सुझावों को नोट कर लिया गया है जिन पर समुचित निर्णय लेकर उन्हें क्रियान्वित किया जाएगा।

श्री श्वेताम्बर जैन संस्था, प्रतापनगर-साँगानेर के मन्त्री श्री रिषभचन्द्रजी जैन ने तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने मुख्य अतिथि सहित समस्त अतिथियों, लेखकों, गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं सहित समस्त सभासदों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल सञ्चालन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री मनोज कुमारजी जैन (पाटोली वाले) एवं श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन तथा मण्डल के संयुक्त मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमारजी राजा ने किया। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात् श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था साँगानेर-प्रतापनगर की ओर भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई।

-मनोज कुमार जैन (पाटोली वाले)

### स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जोधपुर में सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 20 से 24 जुलाई तक जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 के पावन सान्निध्य में महामन्दिर जैन स्कूल जोधपुर में आयोजित किया गया। इस शिविर में जयपुर से 40, महाराष्ट्र से 22, पोरवाल क्षेत्र से 14, पल्लीवाल क्षेत्र से 4, मारवाड से 9, मेवाड से 3, कोटा से 3, मध्यप्रदेश से 1 तथा स्थानीय जोधपुर के 11 सहित लगभग 107 शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया।

शिविर में स्वाध्यायियों की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान भावी आचार्यश्री ने महती कृपा कर किया। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने दस आश्चर्य, 6 आरे एवं जैन प्रतीक के बारे में सरल तरीके से समझाया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने नवतत्त्वों का रहस्य, षट्द्रव्यों एवं गुणस्थानों का स्वरूप उदाहरणों के माध्यम से समझाया। श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने जैनधर्म की प्रमुख परम्पराएँ, जिनशासन के प्रभावक आचार्य, मुखवस्त्रिका सिद्धि, रत्नसंघ की सामाचारी के बारे में अवगत कराया।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. ने अन्तकृद्दशासूत्र का वाचन, विवेचन, अस्वाध्याय सम्बन्धी जानकारी कराई एवं स्वाध्यायियों से वाचन करवाया। महासती श्री कान्ताजी म.सा. ने पच्चक्खाण सम्बन्धी पाठ, आगार सम्बन्धी नियम आदि की जानकारी दी।

श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन-जयपुर ने जैनधर्म के मौलिक सिद्धान्त अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह के बारे में विस्तृत जानकारी दी। श्री सुन्दरलालजी सालेचा ने आठ कर्मों का स्वरूप एवं नौ निहवों के बारे में बताया। श्री धर्मचन्द्रजी जैन ने श्रावक प्रतिक्रमण सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी को विस्तार से समझाया। संघ संरक्षक श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अन्तकृतदृशासूत्र से मिलने वाली प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। श्री श्रीकान्तजी गुप्ता ने प्रभावशाली वक्तृत्व कला के प्रशिक्षण से स्वाध्यायियों में जोश भर दिया। जयपुर से पधारे श्री निपुणजी डागा ने जीवन विकास के सूत्र, श्री नमनजी डागा ने धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप विषय पर प्रशिक्षण दिया। पीपाड़ से पधारे नमनजी मेहता ने जीवनोपयोगी सूत्र स्वाध्यायियों को दिए। प्रतिदिन प्रतिक्रमण के पश्चात् प्रतियोगिता एवं वक्तृत्व कला का अभ्यास करवाया गया

जिसमें श्री प्रकाशजी सालेचा, श्री कमलेशजी मेहता, श्री सुरेशजी हिंगड़ आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

आखिरी दिन चौपासनी हाउसिंग बोर्ड में सभी शिविरार्थियों का व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में सामायिक का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने आगम का स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। वहाँ से बासनी इण्डस्ट्रियल एरिया में विराजित श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन किए तथा महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन कर महासती मण्डल से आशीर्वचन प्राप्त किया।

प्रतिदिन प्रातः 6:30 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक कार्यक्रम चला। समापन समारोह में अनेक गणमान्यजन पधारे, जिसमें अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमान धनपत सा सेठिया ने सभी स्वध्यायियों को मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन दिया। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने सभी स्वाध्यायियों का एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर का आवास, भोजन और वाहन आदि की उत्तम व्यवस्था के लिये आभार प्रदर्शित किया। स्वाध्याय संघ के सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। सभी शिविरार्थियों को पर्युषण में सेवा देने के लिये अनुरोध किया। सभी अध्यापकों एवं शिविरार्थियों को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा स्मृतिचिह्न प्रदान किया गया।

-सुनील संकलेचा, सचिव

### श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा-परीक्षा) कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा 08 जनवरी-2023, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

1. आगमों का सार थोकड़ों में समाहित है। तत्त्वज्ञान की रुचि रखने वालों से निवेदन है कि वे इस परीक्षा में भाग लेने हेतु अपनी तैयारी प्रारम्भ कर दिरावें। स्वयं भी परीक्षा दे तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्मदलाली का तथा कर्म-निर्जरा का महान् लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारंभ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अशोक बाफना (संयोजक) 9444270145, आकाश चौपड़ा (सचिव) 9413033718, धर्मचन्द्रजैन (रजिस्ट्रार) 9351589694 शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज) 291-2630490, व्हाट्स एप्प नं. 7610953735 Website : jainratnboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

### अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आजकल बालक-बालिकाएँ संस्कार हीन हो रहे हैं और उनमें धर्म के प्रति रुझान कम हो गया है, इसीलिये उनको बचपन से ही आध्यात्मिक, नैतिक, व्यवहारिक ज्ञान के साथ उनमें संस्कारों का बीजारोपण हो, इस हेतु वर्ष 2006 से संघ द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर की स्थापना की गई। प्यासा पानी के पास जाए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं, किन्तु हर प्यासे तक पानी पहुँचे इस लक्ष्य से संस्कार केन्द्र गली-गली, मौहल्ले-मौहल्ले में खोले जा रहे हैं। वर्तमान में निम्नलिखित क्षेत्रों में संस्कार केन्द्र सञ्चालित हैं-(1) जोधपुर में 24 दैनिक संस्कार केन्द्र, (2) मारवाड़ क्षेत्र में 4 दैनिक संस्कार केन्द्र,

(3) पल्लीवाल क्षेत्र में 13 दैनिक संस्कार केन्द्र, (4) पोरवाल क्षेत्र में 15 दैनिक संस्कार केन्द्र, (5) जलगाँव क्षेत्र में 6 दैनिक संस्कार केन्द्र, (6) जयपुर क्षेत्र में 1 दैनिक संस्कार केन्द्र। जोधपुर में 30 रविवारीय संस्कार केन्द्र सञ्चालित हैं।

**विशेष**—संस्कार केन्द्र द्वारा दिए जा रहे पुरस्कार के अतिरिक्त छात्र-छात्राओं को प्रतिदिन टॉफी का वितरण नवम्बर, 2019 से 'छोटमल लाडकँवर नव सुमन डागा चेरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा किया जा रहा है। इस कार्य उनसे हेतु अब तक एक लाख ग्यारह हजार छह सौ इक्कतीस (1,11,631) की राशि प्राप्त हुई है इसके लिए श्रीमान् नवरतनजी डागा, जोधपुर को संस्कार केन्द्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया जाता है। आशा है आगे भी यह सहयोग निरन्तर उनसे मिलता रहेगा। पाठकों से निवेदन है कि आप भी संस्कार केन्द्र में अपना सहयोग प्रदान करावें। नये संस्कार केन्द्र खोलने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र—संस्कार केन्द्र कार्यालय, जोधपुर (मोबाइल) 9024449554

—महावीर कोठारी, सचिव

### विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

#### (प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है—

- |   |            |
|---|------------|
| 40. श्री अमरसिंहजी मेहता (तृप्ति अमर मेहता स्माइल फाउण्डेशन, दिल्ली)  | 1,20,000/- |
| 41. श्री राजेशजी, रूपेशजी भण्डारी, जोधपुर (पूज्य पिताजी स्व. श्री महावीरचन्दजी शरबतजी भण्डारी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर सप्रेम) | 24,000/-   |

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रान्जेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजें।

खाते का विवरण:—Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297 **निवेदक** : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु

सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

### (प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिकरूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

- |   |            |
|---|------------|
| 7. श्री अमरसिंहजी मेहता (तृप्ति अमर मेहता स्माइल फाउण्डेशन, दिल्ली) | 1,20,000/- |
| 8. श्री आशीषजी कोठारी, ब्यावर (राज.)                                | 24,000/-   |

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : **Saving**, Account Number : **51026632997**, Bank Name : **SBI**, Branch : **Bapu Bazar, Jaipur**, Ifsc Code : **SBIN0031843** निवेदक : **अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755**

## संक्षिप्त समाचार

**वाराणसी**-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी को जैन एज्यूकेशन इन्स्टीट्यूट सपोर्ट नामक दिल्ली स्थित संस्था के द्वारा भगवान श्रेयांसनाथ जैन स्टडी फण्ड की स्थापना हेतु 1 करोड़ 5 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई है। दोनों संस्थाओं के मध्य हुए निर्णय के समय डॉ. जसवन्तजी मोदी, श्री हर्षदजी शाह, डॉ. सुलेख सी. जैन, डॉ. शुगन सी जैन, श्रीमती शर्मिलाजी जैन ओसवाल, श्री विमल प्रसादजी जैन एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुधीर कुमारजी जैन की सहमति रही। कार्यक्रम को सञ्चालित करने के लिए चार सदस्यीय समिति का भी गठन किया गया है, जिसमें प्रो. मुकुलराजजी मेहता चेयरमैन है, प्रो. अशोक कुमारजी जैन, प्रो. प्रद्युम्नसिंहजी शाह सदस्य हैं तथा डॉ. आनन्द कुमारजी जैन सदस्य सचिव हैं। इस संस्था के द्वारा जैनदर्शन पर अंग्रेजी भाषा में अध्यापन, शोध एवं अनुवाद के कार्य किए जाएँगे जिनका उपयोग देश-विदेश में किया जायेगा।

-सुलेख सी. जैन

**जयपुर**-श्री जैन रत्न युवती मण्डल ने सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में रविवार 24 जुलाई का दिन निर्जरा दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर युवती मण्डल की सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। निर्जरा के 12 भेदों पर युवती मंडल सदस्यों ने सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। सभी 12 भेदों का नाटकीय रूपांतरण करके और भी आसान तरीके से सभी को समझाया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती सोनालीजी बोथरा और श्रीमती रेखा जी कोठारी थीं। प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों को युवती मण्डल की ओर से पुरस्कृत भी किया गया। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने निर्जरा के 12 भेदों का सुन्दर

वर्णन प्रस्तुत किया। श्री जैन रत्न युवती मंडल जयपुर का यह ज्ञानार्जन का छोटा सा प्रयास था। इसके पूर्व 10 जुलाई को प्रवचन के बाद धोवन पानी बनाने की विधि का लाइव प्रदर्शन किया गया और साथ ही राख के पैकेट एवं धोवन पानी छानने के कपड़े का वितरण किया गया। इस अवसर पर बच्चों के द्वारा एक नाटिका प्रस्तुत की गयी जिसे देखकर कई लोग भावुक हो गए। धोवन पानी हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण है यह समझने के लिए यह नाटिका बहुत ही अच्छा माध्यम थी। इसके बाद कई श्रावक श्राविकाओं ने 2 महीने, 4 महीने तक धोवन पानी पीने का नियम भी लिया।

**इन्दौर**-मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग (HSS), श्री गो. से. प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी संस्थान, इन्दौर और प्राचीन भारतीय गणित अध्ययन केन्द्र (CAIM), डाटा विज्ञान एवं पूर्वानुमान अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा 'भारतीय ज्ञान परम्परा' विषय पर 14 से 16 जुलाई, 2022 तक तीन दिवसीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति इन्दौर के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को जागरूक और प्रशिक्षित करना रहा। यह विषय भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE) द्वारा सभी तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रस्तुत किया जा रहा एक नया विषय भी है। इस तीन दिवसीय व्याख्यान मृङ्खला में भारत के 11 प्रतिष्ठित विद्वानों के द्वारा 6 जैन परम्परा के तथा शेष 5 वैदिक परम्परा के व्याख्यान हुए। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रेणु जैन ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित एवं विकसित करने पर काफी काम हो रहा है एवं इससे अनेक नये तथ्य भी उजागर हो रहे हैं। इन नवीन जानकारीयों से हमारे देश का गौरव बढ़ रहा है। समापन सूत्र में मुख्य अतिथि प्रो. मूर्ति ने इस सफल आयोजन हेतु आयोजकों को बधाई दी। व्याख्यान एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करने पर जोर दिया।

-डॉ. अनुपम जैन

## बधाई

**जयपुर**-धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ सुश्रावक श्री दानमलजी जैन के प्रतिभावान एवं सेवाभावी सुपुत्र डॉ. दीपकजी जैन



(MD Medicine, DM Neurology) न्यूरो फिजीशियन, एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज जयपुर की एसोशिएट प्रोफेसर पद से प्रोफेसर पद पर पदोन्नति हुई है। आप एवं आपकी धर्मसहायिका डॉ. वर्षा जैन (दन्त चिकित्सक) सन्त-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। आपका पूरा परिवार गुरुभक्ति में सदैव अग्रणी रहा है। आपके दादाजी स्व. श्री हरकचंदजी जैन बोहरा ग्राम-जरखोदा (जिला-बूँदी) आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.के अनन्य भक्त थे। आपके ताऊजी श्री उम्मेदचन्दजी जैन जरखोदा वालों ने स्वाध्यायी सेवा में 50 वर्ष महती सेवाएँ दी हैं और उन्हें भी स्वाध्यायी सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया है।



**मलकापुर (महाराष्ट्र)**-सिद्धार्थजी सुपुत्र श्री प्रशान्त कुमारजी सुपौत्र श्री जीवनलालजी झाबक (संघ महामन्त्री) प्रपौत्र स्व. श्री घेवरचन्दजी झाबक ने मुम्बई से आर्टिकलशिप के साथ प्रथम प्रयास में ही सी.ए. फाइनल के दोनों ग्रुप उत्तीर्ण किए हैं।

-शान्तिवल्लभ बी. संचेती

**जोधपुर**-सम्भव मुल्लानी सुपुत्र श्री सुरेशजी मुल्लानी और मीता जी मुल्लानी ने 12वीं कॉमर्स सीबीएसई की परीक्षा



95.2 % अंकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप स्वर्गीय श्री ज्ञानमलजी मुल्लानी और वरिष्ठ श्राविका श्रीमती सरस्वती देवीजी मुल्लानी के सुपौत्र हैं। आपके पिताजी श्री सुरेशजी मुल्लानी लम्बे समय तक शिक्षण बोर्ड के कोषाध्यक्ष रहे और वर्तमान में जोधपुर रत्नसंघ के और वर्धमान हॉस्पिटल के कार्यकारिणी सदस्य हैं। आपकी माता जी श्रीमती मीताजी मुल्लानी अखिल भारतीय श्राविका संघ

की कोषाध्यक्ष रही हैं और वर्तमान में संस्कार केंद्र की परामर्शदाता हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के साथ-साथ सम्भव बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्हें वर्ष 2022 में आलराउण्डर स्टूडेंट ऑफ दि ईयर की उपाधि से नवाजा गया है।

**मुम्बई-सुश्री इशिता लोढ़ा सुपुत्री श्री दिनेशजी-श्रीमती निधिजी लोढ़ा** ने प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। आपकी माताश्री श्रीमती निधिजी को भी 17 जुलाई 2022 को जिनवाणी लेखक सम्मान समारोह-2022 में सम्मानित किया गया है।



**जोधपुर-सुश्री अवनीजी सुपौत्री स्व. वैद्य सम्पतराजजी-श्रीमती सुभद्राजी मेहता एवं सुपुत्री श्री बसन्तजी-श्रीमती सोनलजी मेहता** ने प्रथम प्रयास में सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। एन.एम. कॉलेज मुम्बई से बी.ए.एफ. करने के पश्चात् सी.ए. उत्तीर्ण कर अभी ई एण्ड वाई कम्पनी में कार्यरत है। वैद्य सम्पतराजजी रत्नसंघ के साधु-साध्वियों की अन्तिम समय तक चिकित्सा सेवा में तत्पर रहे।



देव भण्डारी



वसन्त लोढ़ा



तनिष्क जैन



मौलि जैन



आयुष जैन

**अहमदाबाद-श्री देवजी भण्डारी सुपुत्र श्री मनीषजी-श्रीमती मंजूजी भण्डारी** ने C.A. Intermediate - May 2022 की परीक्षा में ऑल इंडिया में 47वीं रैंक प्राप्त की है। स्व. श्री तिलोकचन्दजी (घी वाले) एवं स्वाध्यायी रत्न श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा (जोधपुर निवासी) के दौहित्र हैं।

**अजमेर-रत्नसंघ के श्री प्रकाशमलजी लोढ़ा के सुपौत्र और रत्नसंघ के श्री धर्मीचन्दजी रांका के दोहित्र श्री यशजी सुपुत्र श्री गजेन्द्रजी लोढ़ा** ने वर्ष 2022 परीक्षा में प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। लोढ़ा एवं रांका दोनों परिवार धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सदैव अग्रणी रहते हैं।

-बन्धुकाश कटारिया, मन्थरी

**इन्दौर-श्री तनिष्कजी सुपुत्र श्री रत्नेशजी (सी.ए.) सुपौत्र श्री हंसराजजी जैन (जगमोदा वाले)** ने 21 वर्ष की आयु में प्रथम प्रयास में ही सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

-मन्मोज कुमार जैन 'पाटोली', जयपुर

**जयपुर-सुश्री मौलिजी सुपुत्री श्रीमती रुचिजी-श्री शालीनजी जैन (सहायक महाप्रबन्धक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जयपुर) सुपौत्री स्व. श्री पीयूषजी जैन (पूर्व चीफ न्यूज एडिटर, राजस्थान पत्रिका)** ने सी.बी.एस.ई. की सैकेण्डरी स्कूल परीक्षा 98.8% अंकों से उत्तीर्ण की है।

**इन्दौर-श्री आयुषजी सुपुत्र श्री कमलजी, सुपौत्र श्री हंसराजजी जैन (जगमोदा वाले)** ने सी.बी.एस.ई. की 12वीं वाणिज्य की परीक्षा 95% अंकों से उत्तीर्ण की है।

-मन्मोज कुमार जैन 'पाटोली', जयपुर

## श्रद्धाञ्जलि



**मेहतासिटी-अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी सुश्राविका श्रीमती मंजूजी धर्मसहायिका श्री नेमीचन्दजी डोसी का 12 जुलाई, 2022 को 58 वर्ष की आयु में संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। संघनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्राविका श्रीमती मंजूजी का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने अपने जीवन काल में एक मासखमण (31), दो**

वर्षीतप, 56 बेले (आचार्यश्री के 56वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में), आयम्बिल ओली वर्णानुसार दो बार (प्रत्येक साढ़े चार वर्ष), 16, 15, 11, अठाइयाँ, पाँच, चन्द्रकला द्रव्य तप, रोहिणी तप, पुष्प नक्षत्र तप, सिद्धि तप आदि अनेक तपस्याएँ की हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आदरणीय श्री हस्तीमलजी डोसी ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया तथा वर्तमान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मेड़ता में मन्त्री पद को शोभित कर रहे हैं। श्री हस्तीमलजी नेमीचन्दजी डोसी गजेन्द्रनिधि ट्रस्टी के रूप में जुड़े हुए हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मासार्थ मेड़ता पधारने पर आप सहित डोसी परिवार ने विहार सेवा में अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। सन्त-सतीवृन्द के मेड़ता चातुर्मास काल में आप विशेष धर्मारोधन कर लाभ प्राप्त करती थीं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री



**बागपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उषाजी धर्मसहायिका श्री आनन्दजी कटारिया पुत्रवधू स्व. श्री कान्तिलालजी-स्व. श्रीमती हुलासीदेवीजी कटारिया का 4 जुलाई, 2022 को 55 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान् परिवार छोड़कर गई हैं।



**सूडत**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्मसहायिका स्व. डॉ. सरदारमलजी दुग्ड (निवासी नागौर) का 20 जुलाई, 2022 को 92 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, समाजसेवी, कर्तव्य परायण एवं सादगी मय जीवन की धनी थी। सन्त-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा एवं भक्ति आपको विरासत में मिली। आपकी सुपुत्री श्रीमती सुमनजी सिंघवी वर्तमान में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जोधपुर की अध्यक्ष पद पर संघसेवा कर रही हैं।



**जयपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अंगूरीदेवीजी धर्मसहायिका श्री महावीर प्रसादजी जैन (मूल निवासी नांगल सहाड़ी) का 27 जून, 2022 को 78 वर्ष की आयु में देवलोक गमन हो गया। आपका जीवन त्याग-तपस्या से परिपूर्ण था। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपने अपने जीवन में छोटी-बड़ी कई तपस्याएँ की। आप अपने पीछे तीन सुपुत्र एवं सुपुत्री तथा तीन सुपौत्र और चार सुपौत्रियों, एक पड़पौत्र, एक पड़पौत्री आदि से युक्त संस्कारवान् भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।



**बालोतरा**-धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती विमलादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री भूपतराजजी सालेचा का स्वर्गवास 24 जून, 2022 को 69 वर्ष की आयु में हो गया। आप शान्त स्वभाव एवं धार्मिक प्रवृत्ति की थी। आपका परिवार धार्मिक गतिविधियों में अग्रणी रहता है। आपके ससुर स्व. श्री राणमलजी एवं देवर श्री रोशनलालजी सालेचा हर धार्मिक कार्य में भाग लेकर अग्रणी रहते हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-सरोहनलाल जैन



**जोधपुर**-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्रावक श्री प्रसन्नमलजी फोफलिया सुपुत्र स्व. श्री चौधमलजी फोफलिया का 21 जुलाई, 2022 को 81 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन में पारिवारिक कर्तव्य का पालन करते हुए जर्मिकन्द त्याग, रात्रि-भोजन त्याग तथा शीलव्रत के नियम ग्रहण कर रखे थे। आप समाज में दान देने में अग्रणी रहे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है। आपके परिवार में धर्मसहायिका, दो सुपुत्र, एक सुपुत्री, एक सुपौत्र, दो सुपौत्रियाँ एवं एक दोहित्र हैं।

-विजयलक्ष्मी मोहनरोत

## साभार-प्राप्ति-स्वीकार

### 8000/-मण्डल प्रकाशन की सत्साहित्य सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

824 श्री पदमचन्दजी गाँधी, जयपुर (राज.)

### 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

16324 श्री प्रवीणजी पारख, सिंधखेड़ा-धुलिया (महाराष्ट्र)

16325 श्री पुरुषोत्तमजी शर्मा, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

16326 श्री दीपचन्दजी मुणोत, विजयवाड़ा (तेलंगाना)

16327 श्री सुमेरमलजी रांका, अहमदाबाद (गुजरात)

### जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार

100000/-श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।

100000/-श्री महेन्द्रजी कुम्भट (जोधपुर वाले), मुम्बई।

### जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

11603/-श्रीमती निधिजी-दिनेशजी लोढ़ा, मुम्बई, सुपुत्र के सी.ए. बनने की खुशी में।

11000/-श्री अनिलजी भण्डारी, मुम्बई, श्रावकरत्न श्री पुरुषोत्तमजी भण्डारी का 11 जून, 2022 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

11000/-डॉ. प्रतापसिंहजी लोढ़ा, जयपुर की ओर से सप्रेम।

3100/-श्रीमती मंजूजी-स्व. श्री पदमचन्दजी कोठारी, जयपुर की ओर से सप्रेम।

3100/-श्री महावीर प्रसादजी मेहता, नरैना-दूदू, श्रीमती चन्द्रलता-श्री महावीर प्रसादजी मेहता की 50वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

2100/-श्रीमती भावनाजी, अभिषेकजी जैन, जयपुर, स्व. श्री नवीनजी जैन की प्रथम पुण्य-तिथि 20 जुलाई के उपलक्ष्य में।

2100/-श्री दानमलजी जैन, जयपुर, सुपुत्र डॉ. दीपकजी जैन द्वारा एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज जयपुर में एसोशिएट प्रोफेसर पद से प्रोफेसर पद पर पदोन्नति होने के उपलक्ष्य में।

2100/-श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री विजयराजजी कोठारी तथा सुपुत्र कमलेशजी, सुनीलजी, सौरभजी कोठारी परिवार, जोधपुर,

सुश्रावक स्व. श्री विजयराजजी सुपुत्र स्व. श्री अखेराजजी कोठारी की 26 जुलाई, 2022 को तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम।

2100/-श्री शान्तीलालजी मूथा, पीपाड़सिटी, सुपुत्र चि. दीपकजी संग सौ.कां. कोमलजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

2000/-श्री प्रकाशचन्दजी, महावीरचन्दजी, रिखबराजजी, महावीरचन्दजी लोढ़ा, नाडसर-चेन्नई-बेंगलोर, नाडसर में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/-श्री प्रकाशचन्दजी, महावीरचन्दजी, सुनील कुमारजी, रिखबराजजी लोढ़ा, नाडसर-चेन्नई-बेंगलोर, पूज्या मातुश्री श्रीमती आयचुकीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री माणकचन्दजी लोढ़ा का 8 जून, 2022 को देवलोक गमन होने पर पुण्य-स्मृति में।

2000/-श्री प्रकाशचन्दजी, महावीरचन्दजी, रिखबराजजी, सुनील कुमारजी लोढ़ा, नाडसर-चेन्नई-बेंगलोर, पूज्या मातुश्री आयचुकीदेवीजी के उठावणा पश्चात् समस्त लोढ़ा परिवार आचार्य भगवन्त एवं समस्त चारित्र आत्माओं के दर्शन-चन्दन, सपरिवार साधना-आराधना करने एवं मातुश्री की स्मृति में।

2000/-श्री सुनील कुमारजी सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले), चेन्नई, श्रीमती उगमकँवरजी-रतनलालजी बोथरा की स्मृति में।

1101/-श्री कुलभूषणजी जैन, इन्दौर, सुपुत्र श्री अटलजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/-श्री सुनीलजी जैन (रवांजना वाले), भ्राता श्री पंकजजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1100/-श्री माणकचन्दजी जैन (एण्डवा वाले), जयपुर, सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/-श्री हरकचन्दजी जैन (खातौली वाले) कन्सुआ-कोटा, सुपुत्र चि. राहुलजी का शुभविवाह सौ.कां. रीनाजी सुपुत्री श्री छीतरमलजी जैन के संग सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/-श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, श्राविकारत्न



- श्रीमती इन्द्राजी जैन के 9 की तपस्या एवं श्रावकरत्न श्री धनसुरेशजी जैन के तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री विमल कुमारजी जैन (करेला वाले), इन्दौर, सुपुत्र चि. मयंकजी का शुभविवाह सौ.कां. रियाजी सुपुत्री श्री विमल कुमारजी जैन (रांवल वाले), कोटा के संग 1 जून, 2022 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री राकेशजी जैन सुपुत्र श्री केसरलालजी जैन (नाहरा वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती विद्याबाईजी कोठारी, जयपुर, सप्रेम।
- 1100/- श्री महावीर प्रसादजी, रविन्द्र कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी, देवेन्द्र कुमारजी जैन (सहाडी वाले), जयपुर, पूज्या श्रीमती अंगूरीदेवीजी जैन का 27 जून, 2022 को देवलोक गमन होने पर पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती सुमनलताजी सिंघवी, जोधपुर की ओर से सप्रेम।
- गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार**
- (1) श्री इन्द्रचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री लूणकरणजी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
- (2) श्री दिलीपजी, हर्षजी जैन, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (3) श्री विमलचन्दजी छाजेड़, जयपुर (राजस्थान)
- (4) श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री रतनराजजी, रविजी भण्डारी, मुम्बई (महाराष्ट्र)

### जिनवाणी-प्रेषण की वर्तमान व्यवस्था

- जब भी किसी सदस्य को जिनवाणी पत्रिका समय पर प्राप्त न हो तो वह कार्यालय के फोन नं. 0141-2705088 पर सम्पर्क कर सकता है। यहाँ उसका पता एवं फोन नम्बर अपडेट कर लिए जाते हैं। जिनवाणी का वाञ्छित अंक भी पुनः प्रेषित कर दिया जाता है।
- जिन आजीवन सदस्यों का देवलोक गमन हो गया है तथा उनकी सूचना कार्यालय के ध्यान में आती है तो उनको जिनवाणी पत्रिका नहीं भेजी जाती है।
- पोस्ट ऑफिस के माध्यम से कुछ जिनवाणी पत्रिकाएँ लौटकर भी कार्यालय में आती हैं, उन पर पता बदल जाने, जिनवाणी पत्रिका लेने से मना करने, ताला लगने, लैफ्ट लिखा आदि कारण लिखे होते हैं। कार्यालय उनसे फोन पर पूछता करके पुनः प्रेषित करने का प्रयत्न करता है।
- जिनवाणी कार्यालय एवं पाठकों का आत्मीय सम्बन्ध है। कार्यालय के चाहने पर भी एवं प्रयत्नशील रहने पर भी 13,500 पत्रिकाओं में हमें 10-20 शिकायतें मिल ही जाती हैं कि जिनवाणी पत्रिका उन पाठकों को नहीं मिल पा रही है। उनको दुबारा से जिनवाणी पत्रिका भेजी जाती है।
- अनेक पोस्ट ऑफिसों में पोस्टमैन के पास अधिक भार होने से या कर्मियों का अभाव होने से कभी-कभी वे जिनवाणी पत्रिका पाठक तक नहीं पहुँचा पाते हैं, अतः आप अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में जाकर सम्पर्क कर जिनवाणी पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं।
- हम सभी पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे समुचित सुझाव प्रेषित करें ताकि कोई भी पाठक जिनवाणी पत्रिका प्राप्त करने से वञ्चित न हो। हम रजिस्टर्ड डाक से भी भेजने के लिए तत्पर हैं बशर्ते उसका व्यय पाठक द्वारा स्वयं वहन किया जाय।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

# बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

## चींटी-हवा-पानी

श्री विजयरज सुराणा

चींटी, हवा और पानी इन तीनों शब्दों का कोई मेल नहीं है, परन्तु यह मानव जीवन में बड़ी सीख देने वाले एवं अर्थवान् शब्द हैं। हर व्यक्ति की यह महत्वाकांक्षा होती है कि मैं अपने जीवन में कुछ विशिष्ट बनूँ। परन्तु सोचने मात्र से तो कुछ नहीं होता, कुछ करने से होता है। अतः उपर्युक्त तीनों शब्दों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें-

चींटी-चींटी की स्वयं की कोई महत्वाकांक्षा नहीं होती है, उसको अपनी उदरपूर्ति हेतु कुछ कण चाहिये, जो उसके अनुकूल हों। चींटी की सूँघने की शक्ति इतनी तेज होती है कि कोई अपेक्षित वस्तु कुछ दूरी पर भी रखी है एवं अच्छी तरह से पैक करके रखी हो तब भी वह उसकी गन्ध से पहचान कर ही लेती है। चींटी चलकर वहाँ पहुँच जाती है और येन-केन प्रकारेण किसी न किसी तरह से जुगाड़ करके उसे ग्रहण करने का प्रयास करती रहती है।

अतः चींटी की घ्राणशक्ति की तरह मानव को भी अपनी कल्पना शक्ति से अपनी अपेक्षा की पहचान एवं खोज करनी है। अब उसे जहाँ से भी पाना है, अपनी पूर्ण

क्षमता से ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े रास्तों को पार करके नीतिपूर्वक लक्ष्य हासिल करने का प्रयास करना चाहिये।

चींटी से प्रेरणा लेकर एवं लक्ष्य को पहचान कर उसकी प्राप्ति तक पहुँचने का न्याय सङ्गत प्रयास करें।

हवा-हवा मौसम के अनुरूप गर्म, ठण्डी और सम होती रहती है। हम उससे बचाव हेतु अपना कमरा पूरी तरह बन्द कर लेते हैं, पर्दा भी लगा लेते हैं। परन्तु इन सबके बावजूद भी हवा मामूली से मामूली छिद्र, चौखट एवं दरवाजे के बीच जो महीन अवकाश होता है, उसमें से अन्दर आने के लिए किसी न किसी तरह अपना रास्ता बना ही लेती है। हवा अपनी गर्मी या ठण्ड का एहसास करा देती है।

हवा की तरह हम मानव को सतत प्रयास करते रहना चाहिए एवं अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने हेतु उपयुक्त कोई अवसर को नहीं छोड़ना चाहिये। व्यक्ति को अपने कार्य हेतु, भले ही कुछ क्षणों हेतु कभी-कभी तो दरवाजा खोलना ही होता है। मानो जैसे हवा उसके गेट के बाहर खड़े अवसर का इन्तजार करती रहती है एवं तुरन्त अन्दर प्रवेश कर जाती है।

मानव को अपनी उचित अभिलाषा की पूर्ति हेतु एवं लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हवा की तरह गुणों वाला होना अपेक्षित है। जहाँ भी थोड़ा, कहीं भी और कैसा भी

मौका मिले, अपने को उसमें लगा दे, यानी अपने आपको उससे सम्बद्ध करने का मौका हाथ से नहीं गँवाये।

पानी-जयपुर के गलताजी और इसी तरह जनकपुर एवं अन्य कई स्थानों पर पानी जमीन से अपने आप बाहर आता रहता है। काफी प्रयासों के बाद भी स्रोतों एवं कारणों का पता नहीं चल पाया है। इसी तरह पानी किसी भी तरह से और कहीं से भी आता हो या इकट्ठा हुआ हो, वह किसी न किसी तरह अपना रास्ता बनाकर, वहाँ से बाहर निकलने का प्रयास करता है। यानी पानी को बाँधकर रखना मुश्किल है एवं जहाँ चाह वहाँ राह के कथनानुसार अपना रास्ता बना ही लेता है।

ऐसे ही गुण हम मनुष्यों के हों, यानी उचित कार्य की सम्पन्नता हेतु हमें पानी की तरह किसी न किसी तरह से अपना प्रयास करके सफलता हासिल करनी चाहिये।

-बी 105, चन्द्रनगर, गाजियाबाद-201011  
(उत्तरप्रदेश)

### सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- दूसरा 'नमोत्थु णं' किसको दिया जाता है?

उत्तर- दूसरा 'नमोत्थु णं' अरिहंत भगवन्तों को दिया जाता है।

प्र. 2- नमस्कार मन्त्र में पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया, परन्तु 'नमोत्थु णं' में पहले सिद्धों को नमस्कार क्यों किया गया?

उत्तर- नमस्कार मन्त्र में जीवों पर उपकार की दृष्टि से पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया, किन्तु 'नमोत्थु णं' में शक्रेन्द्र महाराज ने आत्मिक गुणों में बड़े होने की दृष्टि से पहले सिद्धों को नमस्कार किया है। उसके अनुसार हम भी पहले सिद्धों को नमन करते हैं।

प्र. 3- सामायिक के उपकरण कौन-कौन से हैं?

उत्तर- बैठने हेतु सूती या ऊनी आसन। 2. पहनने और ओढ़ने के लिए बिना सिले हुए दो सूती वस्त्र। 3. मुँहपत्ती। 4. पूँजनी। 5. स्वाध्याय हेतु धार्मिक पुस्तकें

आदि। महिलाओं के लिए सादे वस्त्र एवं अन्य उपकरण ऊपर लिखे अनुसार।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

### मीठी वाणी बोलो सबसे, मन प्रसन्न हो जाए

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मीठी वाणी बोलो सबसे, मन प्रसन्न हो जाए, वर्तन ऐसा रखो सभी से, सबके मन को भाए।

मीठी वाणी बोलो सबसे....।।टेर।।

अपनेपन का यह सलीका, हमने बड़ों से सीखा, हालात कितने बदल गए हैं, करलो आज समीक्षा अपनत्व अपना घट रहा है, देख मन यह रोये,

मीठी वाणी बोलो सबसे...।।1।।

आत्मीयता है बहुत जरूरी, मिलजुल के सब रहना, खुशहाली हो घर आँगन में, परमानन्द में जीना। तकरार कभी न करना परस्पर, ज्ञानीजन समझाए,

मीठी वाणी बोलो सबसे....।।2।।

बंगला, गाड़ी, धन-वैभव सब, पुण्यवाणी से मिलता, प्रेम, प्यार की कमी रहे तो, चमन कभी नहीं खिलता। ऐसी अमीरी किस काम की, जहाँ चेहरे रहे मुझाए,

मीठी वाणी बोलो सबसे....।।3।।

चेहरों पर मुस्कान रहे और क्लेश दूर हो घर से, दुःख में सब काम आएँ, दूरियाँ न हों मन में। रिशतों का माधुर्य जगाकर, घर-आँगन महकाएँ,

मीठी वाणी बोलो सबसे....।।4।।

-जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

### प्रश्नोत्तर

संकलित

प्र 1.- पर्युषण क्या है? इसमें हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर- पर्युषण में आठ दिनों तक धर्मध्यान की उत्कृष्ट आराधना की जाती है। इन दिनों साधु-साध्वियों का सत्संग सहज उपलब्ध हो जाता है। साधु-साध्वीगण

पर्युषण में गृहस्थों को निम्न प्रकार के आचरण की प्रेरणा प्रदान करते हैं-

1. समत्व भाव की साधना तथा सर्व प्रकार के सावद्य योगों से निवृत्ति करने हेतु सामायिक में रहना।
2. प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा व्रत एवं प्रत्याख्यान ग्रहण करना, जिससे हमारी आन्तरिक ऊर्जा जागृत हो।
3. रात्रि-भोजन का परित्याग करना।
4. ब्रह्मचर्य का यथासम्भव पालन करना।
5. प्रतिदिन स्वाध्याय के माध्यम से आत्म-चिन्तन एवं आत्मोन्नति करना।
6. जीवन में धर्म के दस लक्षण अपनाना।
7. दान, शील, तप एवं भावना की वृत्ति रखना।

**प्र 2.** - जैनियों का सबसे महत्त्वपूर्ण दिवस कौनसा है ?

**उत्तर-** संवत्सरी जैनियों का सबसे महत्त्वपूर्ण दिवस है। इसे क्षमापर्व के रूप में भी मनाया जाता है।

इस दिन अधिकांश जैन प्रतिक्रमण करते हैं और सब लोगों को 'मिच्छा मि दुक्कडं' कहते हैं, जिसका अर्थ है कि मैं सब जीवों से वर्ष भर में कुछ भी कहने सुनने में आया हो या मेरे से कोई भूल हुई हो तो क्षमा करते हुए, क्षमा माँगता हूँ।

इस दिन अधिकांश जैन उपवास या अन्य तपस्याएँ भी करते हैं।

- 'जैनधर्म को जानें' पुस्तक से साभार

### King Shrenik and Queen Chelna

This is a story from the time of Bhagawan Mahavir. At that time, King Chetak was the ruler of Vaishali. He had a beautiful daughter named Chelna. Once an artist painted a picture of Chelna and showed it to King Shrenik of Magadha. Charmed by Chelna's beauty, Shrenik fell in love with her. One day Chelna came to the city of Magadha where she saw King Shrenik, and she too fell in love with him. They soon got married.

Queen Chelna was a devoted follower of Jainism, while King Shrenik was influenced by

Buddhism. The King was very generous and had a big heart, but he was not happy with his queen's devotion to Jain monks. He wanted to prove to Chelna that Jain monks were pretenders. He strongly believed that Jain monks could not follow the practice of self-restraint and non-violence to the extent that Jain philosophy claims, and that the equanimity shown by Jain monks was superficial. Chelna was greatly disturbed by this.

One day, King Shrenik went on a hunting trip where he saw a Jain monk, Yamadhar, engaged in deep meditation. Shrenik let his hunting dogs go after Yamadhar, but the monk remained silent and in deep meditation. On seeing the calmness and composure of the monk, the dogs became quiet. King Shrenik got angry and thought that the monk had played some trick on them. Therefore, he started shooting arrows at the monk, but they kept missing him. Becoming more upset, he finally put a dead snake around Yamadhar's neck and returned to his palace.

The King narrated the whole incident to queen Chelna. The queen felt very sorry for Yamadhar and took the King back to Yamadhar's place of meditation. Because of the dead snake, ants and other insects were crawling all over the monk's body, but the monk did not even stir. The couple witnessed the limits of human endurance. The queen gently removed the ants and the snake from the monk's body and cleaned his wounds. She applied sandalwood paste. Sometime later Yamadhar opened his eyes and blessed both of them.

The monk did not distinguish between the King who had caused him pain and the queen who had alleviated his pain. King Shrenik was very impressed and became convinced that Jain monks were truly free from attachment and aversion. Later on, King Shrenik became devoted to Jainism and Bhagawan Mahavir.

-From Jain Story Book

## कयवन्ना सेठ

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

मगध देश के राजगृह नगर में धनदत्त नाम का एक वैभवशाली सेठ रहता था। ढलती अवस्था में भाग्यवश उसके एक पुत्र हुआ। जिसका नाम कयवन्ना रखा गया। बालक बड़ा ही मेधावी और तीक्ष्ण बुद्धि वाला था। फलतः थोड़े ही समय में वह पारंगत विद्वान् हो गया।

ज्ञान की प्रबलता और शुभ भाग्योदय से वह वैराग्य की ओर आकृष्ट होने लगा। पैतृक व्यवसाय में उसकी रुचि नहीं थी और वह सदा ज्ञान-ध्यान में ही अपना समय लगाता था।

युवावस्था में पिता ने जयश्री नामक एक रूपवती कन्या के संग उसका विवाह कर दिया। मगर कयवन्ना का मन कामभोगों में आकृष्ट नहीं हुआ। जयश्री ने उसे प्रेमपाश में बाँधने की पूर्ण कोशिश की, किन्तु सफल नहीं हुई। आखिर उसने अपनी सास वसुमती को दुःख-गाथा कह सुनायी।

वसुमती उसे आश्वस्त कर अपने पति के पास पहुँची। धनदत्त ने वसुमती का म्लान मुख देखकर उदासी का कारण पूछा। इस पर वह बोली कि अपने पुत्र कयवन्ना की प्रवृत्ति कुछ अलग ही हो गयी है। न तो वह व्यापार में हाथ बाँटाता है और न अप्सरा-सी सुन्दर अपनी पत्नी पर ही प्रेम-दृष्टि डालता है। उसके इस

रूखे व्यवहार से जयश्री की मुखश्री उतर गयी है और बेचारी दिन-रात चिन्ता में डूबी रहती है। अतः कोई ऐसा उपाय करो जिससे कयवन्ना सही रास्ते पर आ जाय।

वसुमती की बात सुनकर धनदत्त ने कहा कि मैं तो इसमें कयवन्ना का कुछ दोष नहीं देखता। अभी उसकी उम्र ही क्या हुई है ? यदि माँ-बाप के सामने भी बेटा मन की नहीं करे तो कब करे ? ज्ञान-ध्यान में मन लगाना और ब्रह्मचर्य का पालन करना कोई बुरी बात तो नहीं है। मेरी राय में उसे सदाचार विमुख बनाना ठीक नहीं होगा। मगर वसुमती अपनी जिद पर अड़ी रही। सेठ ने हारकर उसकी बात स्वीकार कर ली और नगर के चुने हुए कुछ रसिकों से कयवन्ना का मन बदलने के लिए कहा।

उन विलासी पुरुषों ने विविध विलास-वासनाओं के उद्यान में कयवन्ना के मन-मधुप का चक्कर लगवाया। सङ्गति के प्रभाव से कयवन्ना का मन भी रागरंग की ओर आकृष्ट हो गया। इस तरह थोड़े ही दिनों में वह मद्यपायी और विलासी बन गया। अब वह अपनी और परायी नारी का भान भूल गया। वह पूरा वेश्याभक्त और कामी बन गया। देवदत्ता नाम की नृत्यनिपुण एक वेश्या के प्रेम में फँसकर वह पूर्ण मतवाला बन गया।

एक रात शरद पूर्णिमा की चाँदनी में वह देवदत्ता

के संग उसके महल की अटारी में आनन्दमग्न बैठा हुआ था कि उसके घर से एक पुरुष आया और बोला कि आपके माता-पिता आपको याद कर रहे हैं। बारह वर्षों से आपने उन सब की सुध नहीं ली है, अतः एक बार चलकर उन सबको अपना मुख तो दिखा दें। यह सुनकर कयवन्ना बोला कि अभी तो मुझे यहाँ आए बारह दिन भी पूरे नहीं हुए। अतिशय प्रेम के कारण उन लोगों ने इसे बारह वर्ष मान लिया। अच्छा उनसे जाकर कहना कि मैं थोड़े दिनों में ही आ जाऊँगा।

दूत ने धनदत्त और वसुमती को सब हाल सुना दिया। यह सुनकर धनदत्त वसुमती पर बिगड़ने लगा कि तुम्हीं लोगों के चलते वह बुरी संगति में फँसा। इस प्रकार चिन्ता करते-करते सेठ और सेठानी संसार से चल बसे, मगर कयवन्ना अपने घर नहीं आया। घर में अकेली जयश्री रह गई। व्यापार, धन्धे सभी ठप्प हो गये और हालत यह हो गई कि जयश्री को चर्खा चलाकर गुजर करनी पड़ी।

जयश्री अतिशय दुःख से समय बिताती थी। एक दिन वह अपनी चिरपालित मैना को कयवन्ना के पास जाने और दुःख निवेदन करने को कुछ समझा रही थी कि उसकी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो शोक और शर्म से झुका था। जयश्री को देखते ही वह बोल उठा कि—“प्रिये ! तुम्हारी दशा बिगाड़ने वाला मैं निर्लज्ज कयवन्ना हूँ। सती! तुम धन्य हो।” जयश्री पति को पाकर परम प्रसन्न हो गयी।

एक दिन देवदत्ता के बाहर जाने पर उसकी माँ ने कयवन्ना को फटकार लगाकर घर से बाहर कर दिया था। क्योंकि अब उससे द्रव्य प्राप्ति की कोई आशा नहीं रह गई थी। देवदत्ता को कयवन्ना से हार्दिक प्रेम हो गया था। अतः वह जब घर आयी और कयवन्ना को वहाँ नहीं देखा तो अपने सारे आभूषणों के संग तत्क्षण उसके घर पर चली आयी तथा बोली—“मैं आपके बिना नहीं रह सकती। ये सारे आपके आभूषण हैं, अब इनसे अपनी गृहस्थी चलाइए और मुझको भी अपनी शरण में रहने की आज्ञा दीजिए।” कयवन्ना भाग्य की विडम्बना

पर विमुग्ध था। जयश्री भी यह दृश्य देखकर दंग थी। इस तरह वे तीनों परस्पर प्रेमपूर्वक समय बिताने लगे।

कयवन्ना ने उन आभूषणों में आधे से व्यापार किया और आधे से दोनों पत्नियों को आभूषण बनवा दिये। एक दिन कयवन्ना ने परदेश जाकर व्यापार करना चाहा और अपनी युगल पत्नी को भी इसके लिए राजी कर लिया। चलते समय अपनी पत्नियों से कहा कि मेरे पीछे तुम दोनों नीति-धर्म के संग चलना। स्त्रियों ने भी उसे प्रेमपूर्वक विदाई दी।

जहाज दूसरे दिन जाने वाला था। अतः कयवन्ना उस रात को अपने घर के बाहर एक देवालय में जाकर वहाँ पड़ी खाट पर जाकर सो गया।

कयवन्ना के सो जाने पर वहाँ एक बुढ़िया चार युवतियों के साथ हाथ में दीपक लिये आयी और उन चारों से बोली कि शीघ्र इस खाट को उठाकर घर ले चलो। देवी की कृपा से अपना काम बन गया। यह सुनकर वे चारों वजन होते हुए भी खाट उठाकर घर चली आयीं।

बुढ़िया सम्पत्तिशालिनी थी और उसका एक मात्र बेटा उसी शाम को सर्पदंश से मर गया था। नियम के मुताबिक अपुत्र के धन पर राजा का अधिकार हो जाता। अतः धन बचाने के लिए बुढ़िया ने यह अनोखी चाल निकाली थी। खाट उठाने वाली चारों युवतियाँ बुढ़ियाँ की पुत्र-वधुएँ थीं जो भय से उसके इशारों पर नाचती थीं।

दूसरे दिन नींद खुलने पर कयवन्ना ने अपने को एक सजे-सजाए आलीशान मकान में पाया। वे युवतियाँ उसके पास बैठी एकटक उसको देख रही थीं। कयवन्ना यह सब देखकर चकित था कि बुढ़िया वहाँ आ पहुँची और बोली कि बेटा ! सुस्ती छोड़कर अपना नित्यकृत्य करो। उसने अपनी उन वधुओं को भी कयवन्ना की पतिरूप में सेवा करने का आदेश दिया। धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ने और लज्जा हटने से वे सब पति-पत्नी के रूप में रहने लग गये। इस प्रकार वहाँ रहते हुए कयवन्ना के बारह वर्ष पूरे हो गए और इस अवधि में चारों को एक-एक पुत्र भी हुआ।

एक दिन बुढ़िया ने अपनी वधुओं से कहा—“इसके सोने पर इसे फिर से वहीं रख आना, जहाँ से इसे उठा लायी थी। अब तुम सबके लड़के सयाने हो गये, अब इसकी कोई जरूरत नहीं है।” बुढ़िया की बातों से वधुएँ अनचाहे मन से कयवन्ना को उसी देवालय में रख आयीं।

सबेरे जगने पर कयवन्ना सोचने लगा कि, मैं कहाँ से कहाँ चला आया। मेरे वे पुत्र और पत्नियाँ कहाँ रह गए ? उसे यह बदला हुआ दृश्य स्वप्नवत् प्रतीत हो रहा था। मन्दिर के पुजारी ने आकर कयवन्ना को घर पहुँचा दिया। कयवन्ना की जेब में चार लड्डू भी उसके साथ आ गये। उसकी पत्नियाँ एवं एक बारह वर्ष का लड़का जो उसके जाते समय जयश्री के गर्भ में आ गया था, उन्होंने कयवन्ना का हार्दिक सत्कार किया। कयवन्ना ने अपने बेटे को एक लड्डू दिया जिसको वह अपने एक दोस्त हलवाई के छोकरे के संग खाने लगा। लड्डू को तोड़ते ही उसमें से एक रत्न निकला। जिसको लेकर वह दोस्त घर भाग गया। कयवन्ना का पुत्र पीछे-पीछे उसके घर तक गया, मगर हलवाई ने रत्न रखकर एक-दूसरे लड्डू से उस लड़के को फुसला दिया। कयवन्ना ने पास के तीन लड्डू खाने को निकाले तो उसमें से भी एक-एक रत्न निकला, जिनसे उसने व्यापार बढ़ाया और आनन्द-पूर्वक रहने लगा।

एक समय उसी राजगृह के राजा श्रेणिक का एक हाथी पानी पीने के लिए तालाब में गया, जहाँ जल-जन्तुओं ने उसे पकड़ लिया। बहुत कोशिश से भी जब हाथी बाहर नहीं आ सका तो राजा ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो हाथी को मुक्त करायेगा, उसको बहुत बड़ा इनाम दिया जायेगा।

कयवन्ना के पुत्र से रत्न लेने वाले उस हलवाई ने रत्न के चमत्कार से जल सुखा कर हाथी की जान बचा दी। राजा उस पर बहुत खुश हुआ, किन्तु अभयकुमार ने बुद्धि बल से जान लिया कि यह रत्न इस हलवाई का नहीं, किन्तु कयवन्ना का है। हलवाई के द्वारा यह स्वीकार कर लेने पर कि वास्तव में रत्न कयवन्ना का ही

है। राजा ने कयवन्ना पर प्रसन्न होकर अपनी कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया और दहेज में बहुत धन-दौलत देकर उसे शाह बना दिया। उस दिन से कयवन्ना शाह कहा जाने लगा और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गयी। राज्य मन्त्री अभयकुमार के संग उसकी गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन कयवन्ना के वे चारों पुत्र और पत्नियाँ जो परवशता से बिछुड़ गये थे, उससे मिलने को यहाँ आ पहुँचे। अभयकुमार की बुद्धि से इन सबने कयवन्ना को पहचाना और वे सब भी उसी के साथ रहने लगे। इस तरह कयवन्ना सबके साथ सुख से रहने लग गया।

कुछ दिनों के बाद चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर राजगृह नगरी में पधारे। राजा श्रेणिक और कयवन्ना शाह भी अपने परिवार के साथ प्रभु के दर्शन को पधारे। वन्दना के पश्चात् कयवन्ना ने प्रभु से अपनी मनोवांछित सम्पत्ति मिलने के बारे में पूछा। प्रभु ने कहा कि यह सुपात्र दान का परिणाम है।

पूर्व भव में तुम शालिग्राम में एक ग्वाला के पुत्र थे। पिता के मर जाने पर तेरी माँ विपत्ति में पड़ गई। एक दिन अपने किसी पड़ोसी को खीर खाते देखकर तुमने अपनी माँ को खीर खाने के लिए तंग किया। उस दिन बड़ी कठिनाई से उसने तेरे लिए खीर तैयार कर एवं थाली परोस कर स्वयं कार्यवश कहीं बाहर चली गयी। इस बीच गोचरी के लिए आये किसी सन्त के पात्र में तुमने उत्कृष्ट भावना से सारी खीर उण्डेल दी और स्वयं थाली चाटने लगे। साधु तुम्हें उपदेश देकर चलते बने। वही ग्वाल बाल काल कर आज तुम कयवन्ना के रूप में सुख भोग रहे हो। अपना भोजन मुनि को देने के पुण्य से ही इस जन्म में तुमने ऐसी अपार सम्पत्ति प्राप्त की है।

यह सुनते ही कयवन्ना का सुप्त वैराग्य-रंग जाग गया और उसने प्रभु से संसार-सागर पार कराने की प्रार्थना की। प्रभु ने व्रत ग्रहण करने का उपदेश दिया। कयवन्ना घर आया और अपना मनोभाव अपने परिवार वालों को बता दिया। यह सुनकर वे सब भी व्रत लेने को तैयार हो गये।

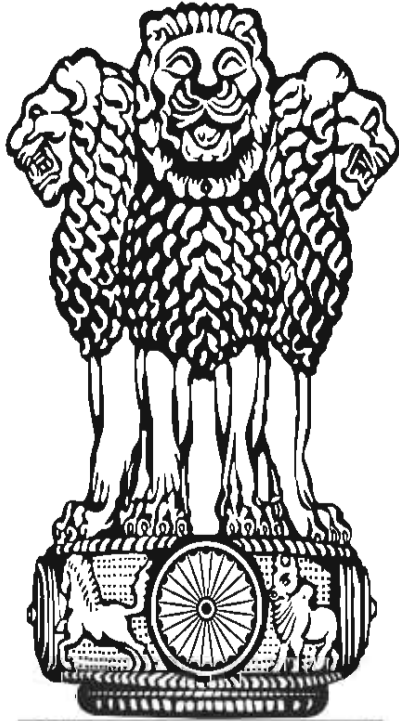
इस प्रकार कयवन्ना ने अपनी पत्नियों सहित भगवान के पास आकर दीक्षा ले ली और ध्यानाग्नि में अपने कर्म-मल को भस्म करते हुए केवल-ज्ञान प्राप्त कर, बाद में परम पद प्राप्त किया। खीर का दान देकर अगले जन्म में कयवन्ना कुमार के रूप में अखण्ड सौभाग्य का भोक्ता बना। इस प्रकार साधारण वस्तु का दान भी अनमोल लाभ के रूप सम्प्राप्त हो जाता है। दान का फल कितना रमणीक है कि आज भी बही में दिवाली के दिन लोग कयवन्ना का सुख सौभाग्य लिखा करते हैं।

सच है सुपात्र दान की महिमा अपार है।

- 'कुलक कथाएँ' पुस्तक से

- प्र. 1 कयवन्ना के व्यक्तित्व की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।
- प्र. 2 जयश्री की चिन्ता का क्या कारण था ?
- प्र. 3 कयवन्ना वैरागी से भोग-विलासी कैसे बन गया ?
- प्र. 4 देवदत्ता की माँ ने कयवन्ना को घर से बाहर क्यों कर दिया ?
- प्र. 5 कयवन्ना ने पूर्वभव में ऐसा क्या पुण्य किया था कि उसे इस भव में अपार सम्पत्ति-वैभव प्राप्त हुआ ?
- प्र. 6 कहानी में प्रयुक्त कोई 4 उपसर्ग युक्त शब्द छाँटकर उनसे मूल शब्द एवं उपसर्ग अलग कीजिए।

## International Jain Foundation



सिंहस्तम्भ शीर्ष  
खारनाथ

### क्या अशोक स्तम्भ जैन है ?

चक्र में 24 लाइनें जैनधर्म के 24 तीर्थङ्करों को दर्शाती हैं और सिंह भगवान महावीर स्वामी का चिह्न है। अब सिंह के नीचे देखिए। पहले तीर्थङ्कर ऋषभदेवजी का प्रतीक चिह्न बैल, दूसरे तीर्थङ्कर अजितनाथजी का प्रतीक हाथी और तीसरे तीर्थङ्कर सम्भवनाथजी का प्रतीक घोड़ा है। अशोक स्तम्भ मूल रूप से सम्राट् अशोक के दादा चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनाया गया है, वे जैनधर्म का पालन करते थे। 'अशोक स्तम्भ' नाम बाद में प्रचलित हुआ लगता है।

हमारी धर्म के प्रति निष्क्रियता ने इसे अभी तक समझा नहीं। जैसे हमारे कई मन्दिर हिन्दू देवी-देवता के बन गए और यह स्तम्भ बुद्धों ने ले लिया। बौद्ध धर्म में 24 अंक का कोई महत्व ही नहीं है। अतः हमें इसे महावीर स्तम्भ और तीर्थङ्कर चक्र कहना चाहिए।

-ली. अशोका ऊ सालेचा



**बाल-स्तम्भ [जून-2022] का परिणाम**

जिनवाणी के जून-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सच्चा प्यार' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुदर्शन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	रोहित जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अर्पित जैन, मानटाउन-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	21
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	21
	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	21
	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	21
	तिष्या गादिया, अजमेर (राजस्थान)	21

**बाल-जिनवाणी जुलाई, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 सितम्बर, 2022)**

- प्र. 1. मस्तिष्क की क्षमता किन कारणों से कम हो जाती है ?
- प्र. 2. हम अपनी आत्मा का उत्थान कैसे कर सकते हैं ?
- प्र. 3. जैनधर्म में शाकाहार अपनाने को क्यों कहा जाता है ?
- प्र. 4. 'नमोत्थु णं' पाठ को प्रणिपातसूत्र क्यों कहते हैं ?
- प्र. 5. कवि ने ज़िन्दगी को अनमोल कहकर उसे किस तरह सँवारने की बात कही है ?
- प्र. 6. 'प्रेम से परिवर्तन' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 7. सर विलियम जॉन्स ने अपनी ज्ञान-पिपासा को कैसे शान्त किया ?
- प्र. 8. What do we learn from the story of "Two Frogs?"
- प्र. 9. Make sentence from each of the given words-Terrible, Sorrowfully, Yelling and Companions.
- प्र. 10. हम अपनी मस्तिष्कीय क्षमता को कैसे बढ़ा सकते हैं ?

**बाल-जिनवाणी [मई-2022] का परिणाम**

जिनवाणी के मई-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	नमन जैन, जरखोदा-बून्दी (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	35
	ध्रुव बाँठिया, कोटा (राजस्थान)	35
	छवि जैन, जयपुर (राजस्थान)	35

**बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें**

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

गजेन्द्र निधि द्वारा सञ्चालित  
**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना**

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक क़दम.....

**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ**

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं सन्त-सती मण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से 16 वर्षों से आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2022-2023 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति से मँगवाकर, उसे भरकर प्रेषित कर सकते हैं।

**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के आवश्यक नियम -**

- आवेदक आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज अवश्य भेजें-
  - उत्तीर्ण की हुई कक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि।
  - आवेदक वर्तमान में जिस विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग में अध्ययन कर रहा है, उसके द्वारा वहाँ जमा कराये गये शुल्क की रसीद (रसीद उपलब्ध नहीं होने की दशा में लैटर पेड पर सत्यापित करके भेज सकते हैं।)
  - अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि।
  - अपनी पासपोर्ट साइज की नवीन फोटो।
  - मोबाइल नम्बर जिस पर योजना समिति द्वारा कभी भी सम्पर्क किया जा सके।
  - आवेदक छात्र-छात्रा के बैंक खाते की पासबुक की प्रतिलिपि।
- छात्रवृत्ति राशि का निर्धारण विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग के शुल्क के आधार पर अथवा योजना की अधिकतम सीमा के आधार पर किया जायेगा। छात्रवृत्ति योजना की छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है-

Class	Upto Class 10 <sup>th</sup>	11 <sup>th</sup> & 12 <sup>th</sup>	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	₹ 6,000/-	₹ 9,000/-	₹ 12,000/-	₹ 27,500/-

- छात्रवृत्ति योजना समिति के द्वारा आयोजित किये जाने वाले शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।
- रत्नसंघ के प्रत्येक कार्यक्रम में सहयोग करना एवं उपस्थित रहना आपका कर्तव्य है। आपके द्वारा स्थानीय स्थल पर लगने वाले शिविरों में भाग लेना, अध्यापन कार्य में सहयोग करना या अन्य रूप में सेवा देने का अलग से विवरण अवश्य संलग्न करें।
- आवेदक को प्रतिदिन एक नमस्कार मन्त्र की माला फेरने का संकल्प करना है।
- आवेदक के द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।
- योजना समिति का लक्ष्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सन्देश को नई पीढ़ी द्वारा अपनाने के लिए प्रेरित करना एवं संस्कारित करना है-

**गुरु हस्ती के दो फ़रमान**  
**सामायिक - स्वाध्याय महाब्**

**गुरु हीरा का यह सन्देश**  
**व्यसन मुक्त हो सारा देश**

- योजना समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

आवेदक अपने आवेदन पत्र 30 सितम्बर, 2022 तक निम्नलिखित पते पर प्रेषित कर सकते हैं-

**M. Harish Kavad**

“Guru Hasti Thanga Maaligai”, No. 5, Cart Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें-मनीष जैन (+91 95430 68382)

अहंकार के वृक्ष पर  
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती  
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की  
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी  
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,  
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : [oswalmatrimony@gmail.com](mailto:oswalmatrimony@gmail.com)

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

## गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

### अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

### We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)  
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168  
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संचयन, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग प्रकृति करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुण्णोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् वृत्तीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	
श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बेंगलोर	श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवर जी भंडारी, द्विपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधय, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगपुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लालकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांब, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जान्गति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश) श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू	श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् सुगनचन्द जी एजेड, चौपासी रोड, जोधपुर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू)

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56  
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

“छोटा सा चिन्तन परियंत्रण को हल्का करके का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करके का”

## जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है।

जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

### वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (2) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (3) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (4) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (5) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (6) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (7) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (9) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (10) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

### वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
- (5) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।

**उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं वित्तीय वर्ष 2022-2023 के लिए**

**स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।**

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

॥ गमो आयरियाणं ॥



# NAVKAR CITY JODHPUR



Luxurious Villas and G+2  
Apartments Available

“ एक शहर  
आपके घर में ”

8504 000 222

www.navkarcity.com

\*Phase 1 is on Sale

Sample  
Villa Ready

92 Acre\* Township On Sale

Full of Amenities

Sports  
Zone

Cricket  
Stadium

Ample  
Trees

Central  
Park

Kids Play  
Area

नवकार सिटी, पाल गंगाणा रोड़, जोधपुर

WWW.RERA.RAJASTHAN.GOV.IN | RERA REG.NO. RAJ/P/2013/1048



# JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children  
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

*With Best Wishes :*

## JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,  
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138

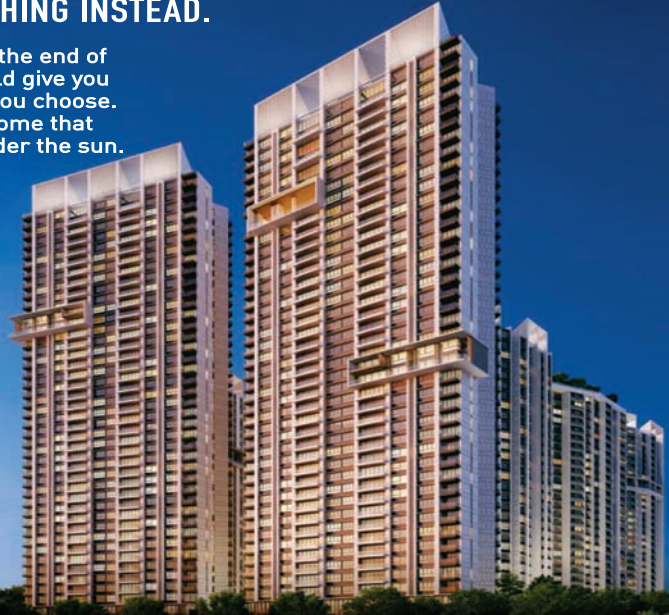




**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T  
FORCE YOU TO CHOOSE.  
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT  
**IMMENZA**  
THANE (W)  
EVERYTHING UNDER THE SUN

**TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065**

**Site Address:** Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. \*Conditions apply.

*If undelivered, Please return to*

**Samyaggyan Pracharak Mandal**

Above Shop No. 182,  
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)  
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन